दाम चार आना ।

ईस्ट इण्डियन रेलवे
छुट्टियों के दिनो में
भारी
इन्तज़ाम

पूजाकी छुट्टी।
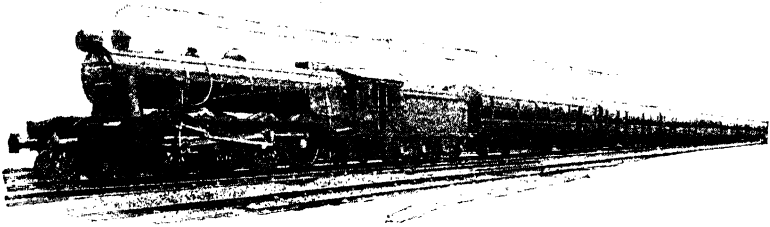
"मन ...री गाड़ी चली, पुष्पक यान समान
शिल्प क...। अङ्गरेज की करत न बनत बखान" ॥

इस देश में अङ्गरेजोंको रेल खोलते देख लोगोंके मन जो भाव उठा था वह ऊपरकी कवितामें खुला है। जब प्रथम बङ्गालमें कलकत्तेसे रानीगञ्ज तक रेल खुली, तो अनेकानेक ग्रामोंके लोग रेलगाड़ी देखने आते और नादान लोग इञ्जिनको देवता जान प्रणाम करते थे। यह बात सन् १८५४ ई० की है। जब यह ध्यानमें लाया जाता है, कि देशके लोग नाव पर जलके रस्ते और बैलगाड़ी पर खुश्कीके रास्ते जाते आते थे, तो समझमें आ जाता है, कि क्यों मामूली मनुष्य रेलगाड़ीको पुष्पक रथ मानते थे। अबतक बङ्गालमें ऐसे मनुष्य हैं, जो अपने बचपनमें पूर्व बङ्गालसे नाव पर बृन्दावन गये थे। उन दिनों समयका मूल्य मानों कुछ भी नहीं था। उस समयसे इस समयका कितना बड़ा भेद हो गया है। उन दिनोंकी बैहलीकी सवारीके साथ मिलान करने पर इन दिनोंकी रेलगाड़ीकी सवारी कैसे उंचे समयके आने का पता देती है!

सन् १८५४ ई० में बङ्गालमें प्रथम रेल बनी और रेलगाड़ी चली। इन दिनों केवल ईष्ट इण्डियन रेलवे ही ३ हजार ८ सौ २८ मीलों तक खुल गई है। ईष्ट इण्डियन रेलवे ही इस देशकी सबसे पहिलेकी और सर्वोपरि मुख्य है। यह कलकत्तेसे हिन्दुस्थानके पश्चिम उत्तरको गई है।

रेलवेसे देशकी इतनी बड़ी भलाई हुई है, कि जो बयान नहीं की जासकती। किन्तु हिन्दुस्थानमें ऐसे पुराने लोग अब तक हैं, जिनका स्वभाव सभी प्रकार अदलबदल के बिमुख है। ऐसे स्वभाववाले अभीतक रेलवेका

पूरा लाभ उठानेमें प्रस्तुत नहीं हो सके। वे बड़ीही गहरी आवश्यकताके बिना रेलकी सैरको नहीं निकलते। केवल तीर्थयात्राके लिये उनमेंसे कोइ कोइ घरसे निकलते हैं। उनके मनमें यह बात उठती ही नहीं, कि उनके अपने अपने ग्रामके बाहर विशाल भारतवर्षका महान भाग अतिशय बिसतरित शरीरको लेकर बिराज रहा है। पुराणों और इतिहासोंमें जिन स्थानोंका वर्णन है, उन प्रसिद्ध स्थानोंके दर्शनीय पदार्थ उनके अपने अपने ग्रामके बाहर जानेसे ही दृष्टिगोचर होते हैं। उनके मनकी उस प्रकार गतिके वश उनकी दृष्टिकी सीमा जैसी सङ्कुचित बनी हुई है, उनके मनके विचारकी सीमा भी वैसी ही नहीं बढ़ने पाती। केवल यही क्यों? एक बङ्गालकी दशाको ही मोटी तौर पर बिचारिये। बङ्गालके ग्राम मलेरियासे जर्जरित होते हैं। पर कलकत्तेसे केवल छही घण्टे रेल पर जानेसे सन्थाल परगनेमें स्वास्थ सुधारनेके स्थानोंकी कुछ भी कमी नहीं है। रोगसे जो लोग दुबले पतले बन जाते हैं, परिश्रमसे जो लोग थक जाते हैं, वैसे स्त्री पुरुषोंके शरीर यह चाहते हैं, कि वे स्वास्थ सुधारनेके स्थानोंमें जावें और वहांकी हितकर हवामें बिचरें। इसमें सन्देह नहीं, कि बङ्गालकी भुमि "सुजला सुफला और शस्यश्यामला" है। किन्तु वहाँ स्वाभाविक सौन्दर्य्यकी विचित्रता नहीं है। विचित्रताओंको देख नयन और मनको रमानेके लिये बङ्गालके बाहर जानेकी आवश्यकता है। तीर्थोंके विषयमें भी वही बात ठीक है भारतवर्ष नाना तीर्थोंका घर है - जिनके दर्शनकी इच्छा किसको नहीं होती होगी! तीर्थयात्राकी इच्छा पूरी करनेमें इन दिनों न तो समय अधिक लगता है और न धनही अधिक खरच ना पड़ता है। बङ्गालके निवासियोंके लिये तीर्थयात्रा पहिले इतनी बड़ी बिपज्जनक थी, कि काशी जानेवाले न लौट सकनेका निर्णय कर अपनी सम्पत्तिका वसीयतनामा करनेमें लाचार होते थे। अब वह दिन ऐसा पलटा है, कि काशी जानेवाले रातकी गाड़ीमें बैठकर दूसरे दिन दोपहरके समय ही, विश्वेश्वर और अन्नपूर्णाके मन्दिरमें जा उनकी पूजा चढ़ा सकते हैं।

कलकत्ता।

ईस्ट इण्डियन रेलवेका आरम्भ कलकत्तेमें हुआ है। कलकत्तेके जोड़का बड़ा नगर पृथ्वी के समूचे पूर्वीखण्डमें और कोई नहीं। इसमें बसनेवाले १३ लाख २७ हजार ५ सौसे भी अधिक हैं। इसको
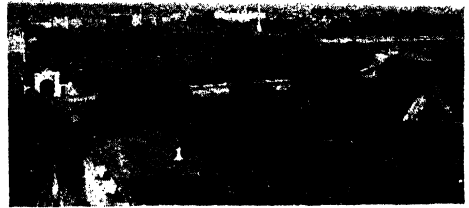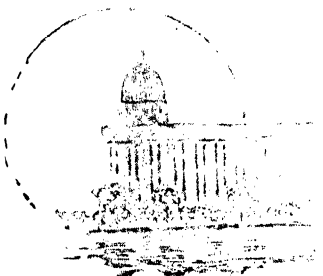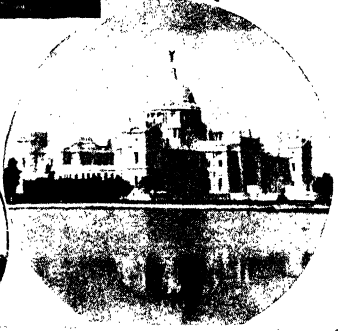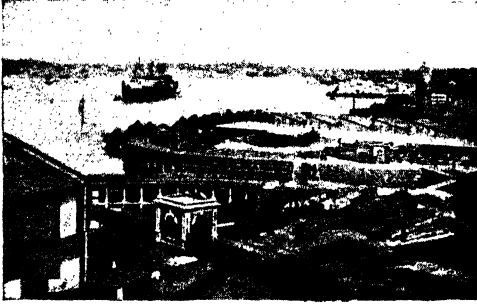
१। गङ्गाका दृश्य। २। विक्टोरिया मेमोरियल भवन।

३। बोटानिकल गार्डनका प्रख्यात पीपल। ४। कलकत्ताका दृश्य।

अङ्गरेजोंने बसाया। कलकत्ता व्यपारका केन्द्र है। कलकत्तको आंखों

देखे बिना ग्रामोंके मनुष्य मनमें इसकी कल्पना तक नहीं कर सकते। इसके नीचे बहनेवाली गङ्गामें पूर्वकालकी सवारीको नाना प्रकार नावोंसे लेकर समुद्र में जाने के बड़े बड़े जहाज तक दिखलाई देते हैं। नदीके तटपर ऊंची ऊँची अटारियाँ—गोदाम, कारखाने आदि निर्म्मित हैं।
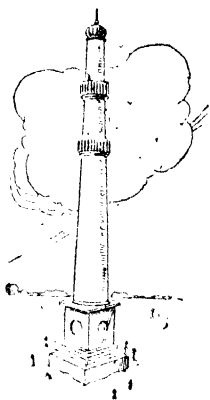
कलकत्तेमें देखनेयोग्य स्थानोंकी कमी नहीं। उन सभोंमेंसे कई एक का उल्लेख किया जाता है।

कलकत्तेकी शोभाको बढ़ानेवाला किलेका मैदान है। इतने बड़े शहरमें उतना बड़ा मैदान प्रायः और कहीं नहीं देखा जाता। उस मैदानमें अक्टरलोनी मनुमेण्ट वा स्मृतिस्तम्भ ऐसा खड़ा है, कि ध्यानको सबसे पहिले खींच लेता है। सांवली शोभावाले मैदानमें वह ऊँचे आकाश तक मस्तकको पहुंचाकर खड़ा है। मैदानके एक भागमें घुड़दौड़ होती है—वह भाग घुड़दौड़का मैदान कहलाता है। यह मैदान किलेका मैदान कहलाता है। यह किला भारतके मुख्य किलोंमें है। इसमें सेना के वीर रहते हैं तथा अस्त्रागारसे लेकर बाजार तक है।

किलेके मैदानमें ही विक्टोरिया स्मृतिभवन निर्मित है। महारानी विक्टोरिया दीर्घकाल तक राज्य करनेके अनन्तर जब परलोक सिधारीं, तो बड़े लाट लार्ड कर्जनने उनकी स्मृति चिरस्थायी करनेके लिये उस भवनको बनानेकी कल्पना की। उनकी कल्पनाने बिलम्बमें कार्य्यरूप प्राप्त किया। किन्तु क्रमशः मस्तकको ऊपर उठाता हुआ भारतके सङ्ग

मरमरका यह भवन जब पूरा बन गया, तो लोग समझनेमें सामर्थ हुए,
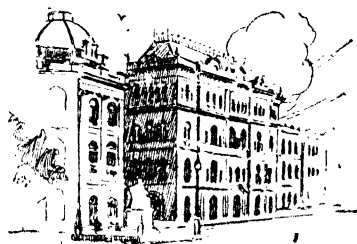
कि लार्ड कर्जन कैसी कल्पनाके पुरुष थे। वह भवन बीसवीं सदीका ताजमहल कहलाता है। यह सच है, कि इसकी आगरेके ताजमहल से तुलना नहीं हो सकती ; किन्तु बङ्गालमें वैसा भवन कोई दूसरा नहीं। वह सुसज्जित बागके बीच में है और उसमें चित्रोंका संग्रह अनूठा मूल्यवान है। मैदानके एक भागमें कर्जन गार्डन नामक रम्य उपवन है।

किलेके मैदानसे प्रायः सटकर ईडन गार्डेन है। यह कलकत्तेका और एक उपवन है। इसमें अनेकानेक जातियोंके वृक्षलताएँ हैं। उपवन के बीचोबीच एक नहर सर्पकी सी टेढ़ी मेढ़ी गतिकी बनाई गयी है। उसमें नाव पर चढ़कर विचरने का आनन्द मनाया जा सकता है। उस बागीचे में ब्रह्मदेशसे लाया हुआ एक बौध मन्दिर है। बागके एक ओर सन्ध्या के समय बाजे बजाये जाते हैं। बाग की बगलमें कलकत्तेकी हाईकोर्ट है।

वह बङ्गालका सबसे बड़ा विचारालय है। उस गम्भीर आकार विशाल भवनकी चोटी बड़ी दूरसे दिखलाई देती है। हाईकोर्टके ऊपरसे कलकत्तेका दृश्य मनको चक्करमें डालता है।

कलकत्तेके उपनगर अलीपुरमें जीवजन्तुओंका संग्रहालय है और उसकी बगलमें बेलविडियर नामक राजभवन है। जीवजन्तुओंका संग्रहालय बङ्गालकी गवर्नमेण्टसे प्रजाजनके सहारे सन् १८७५ ई०में बनाया गया था। दूसरे ही वर्ष युवराजने (आगेके सम्राट सातवें एडवर्डने) भारतमें पधार कर उसको खोला था। वह जीवजन्तु संग्रहालय भी एक बड़ा भारी बाग है, जिसके स्थान स्थानमें गृह, तालाब आदि बने हुए हैं। उसमें अनेकानेक जातियोंके पशु, पक्षी, सर्प इकट्ठे किये गये हैं और अनेक पक्षियोंने क्रमशः आ आकर भी अपने घोसले बनाये हैं। वह जीवसंग्रहालय वा चिड़ियाखाना जैसे दर्शकोंका आनन्द बढ़ाता है, वैसे ही उनको शिक्षादान भी करता है। एकसे एक बढ़कर विचित्र जीवोंको देखनेके आनन्दकी बात ही क्या है ; उनसे ज्ञानान्वेषियों-को प्रत्यक्ष दर्शनकी शिक्षा भी प्राप्त होती है।

बेलविडियरका अर्थ है सौन्दर्य्यकी राणी। बेलविडियर अट्टालिका सौन्दर्य्यकी राणी ही कहलानेयोग्य है। मोगल बादशाहोंके दिनों सूबे बङ्गालके शासक आजिम-उस-शानने आखेट खेलनेके लिये उस भवनका निर्माण

कराया था। आगे वह वानसिटाट साहबके हाथ आया और अन्तमें वारेन हेस्टिंगसने उसको मोल ले लिया सन् १८४४ ई० में जब बङ्गालमें छोटेलाटका पद रचा गया, तो उस पदाधिकारीके वासयोग्य भवनकी आवश्यकता प्रतीत होने पर लार्ड डेलहाउसीके परामर्शसे ईस्ट इण्डिया कम्पनीने उसको ८० हज़ार रुपयेमें खरीदा और २० हज़ार रुपये लगाकर उसकी मरम्मत करायी। भारतकी राजधानी जब कलकत्ते से देहलीमें उठ गयी, तो बङ्गालके गवनरने गवर्नमेण्ट हाउस पर अपना कब्जा जमाया। तबसे बेलविडियर और कलकत्ते नगरके समीपवाले बारकपुरका फुलवाड़ी भवन दोनों बड़े लाटके वासके लिये रक्षित रहते आरहे हैं। जाड़ेके दिनों कलकत्ते पधार कर बड़े लाट बेलविडियरमें ही विराजते हैं।

कलकत्तेके जादूघरमें नाना प्रकार पदार्थोंका संग्रह सुरक्षित है। सौ वर्षोंसे भी पूर्व कई उत्साही मनुष्योंने उसकी नीव डाली। सन् १७८४ ई०में एशियाटिक सोसाइटी नामक सभा स्थापित हुई थी और उसीके उद्योग से नाना प्रकार कौतूहलप्रद पदार्थों का संग्रह होने लगा था। इस संग्रहका लाभ क्रमशः ध्यानमें आनेसे गवर्नमेण्टने प्रथम उसमें सहायता देनेका आरम्भ किया और आगे अपने हाथों उसका भार भी ले लिया। उसमें इतिहासके और धननीतिके सम्बन्धवाले नाना प्रकार पदार्थ और पदार्थोंके नमूने सुरक्षित हैं।

कलकत्तेके निवासियोंके गृहोंमें चोरबगान मुहल्लेवाले राजा राजेन्द्र मल्लिकका भवन (मार्बल पैलेस) बहुत प्रसिद्ध है। उसमें युरोपके नाना देशवासी शिल्पियोंकी बनायी हुई प्रस्तरमूर्त्तियां और चित्रोंकी प्रतिलिपियां सुसज्जित हैं। इसके जोड़का संग्रहालय समूचे बङ्गालमें नहीं है।

कलकत्तेमें हिन्दुओंका मुख्य तीर्थ कालीघाट है। जिस पथ से गङ्गा समुद्र सङ्गमके लिये आगे बढ़ी, उस पथका स्रोत आदि गङ्गा नामसे प्रसिद्ध है। इसी

चिड़िया खाना।
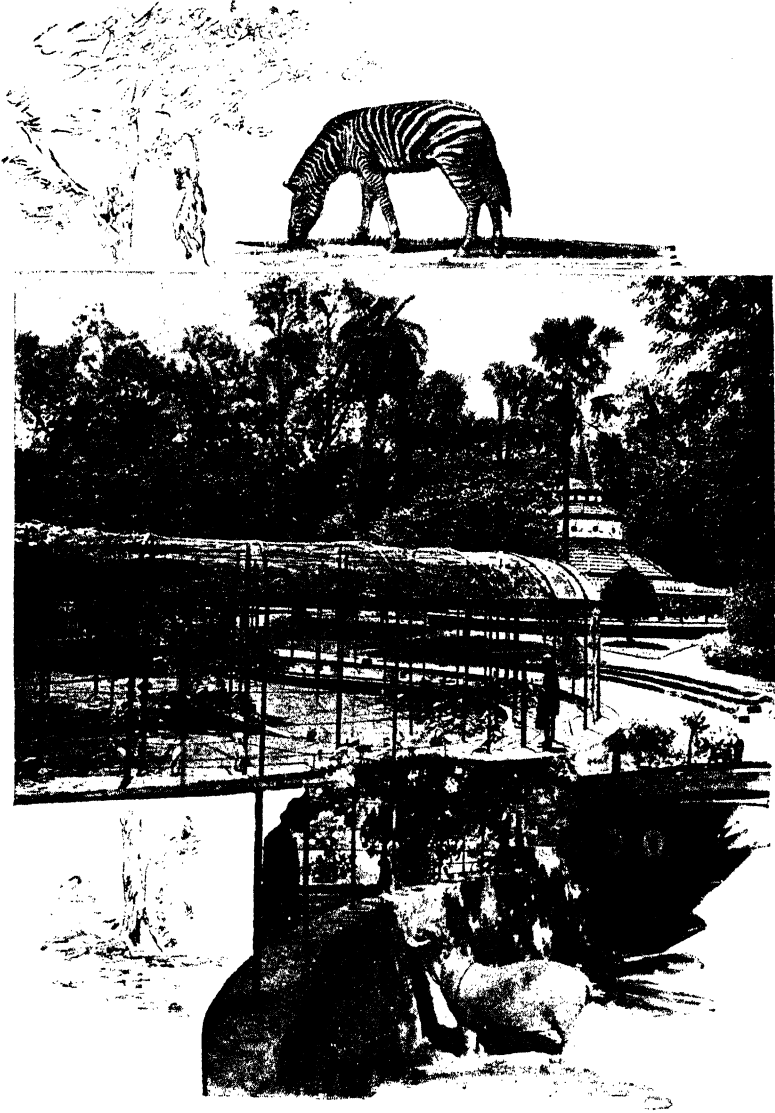
१। जेब्रा। २। जलमें पक्षीनिवास। ३। समुद्री घोड़ा।

आदिगङ्गाके तट पर कालीमन्दिर निर्मित है। हिन्दुओंके पुराणोंमें जिन पीठस्थानोंका उल्लेख है, उनमें यह देवस्थान एक माना जाता है। इसलिये

बङ्गालके नाना स्थानोंसे और बङ्गालके बाहरसे भी नित्य सैकड़ों नरनारी इस मन्दिरमें देवीकी पूजा चढ़ानेके लिये इकट्ठे होते हैं। देशीय राजा-महाराजा भी यदि कलकत्ते आते हैं, तो देवीके दर्शन बिना किये नहीं लौटते। मुख्य मन्दिरका आकार बहुत बड़ा नहीं है। किन्तु अब उसके आस पास अनेकानेक मन्दिर निर्मित हुए हैं। भक्तों के उद्योगसे मन्दिरकी चौक आदि सङ्ग मरमरसे जड़ी गयी है और मन्दिरके समीप घाट और
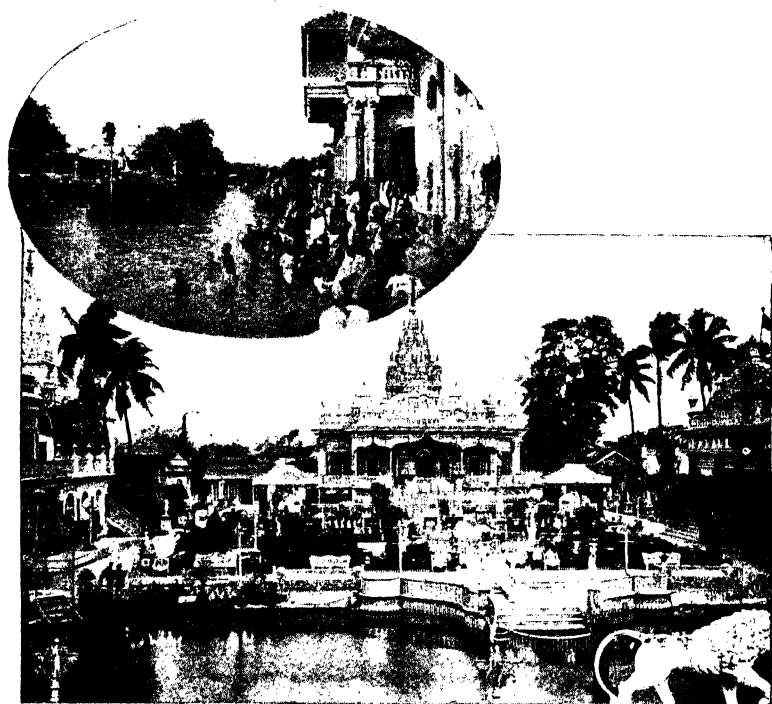
१। आदिगङ्गा, कालीघाट।　　　२। पारसनाथका मन्दिर।

धर्मशाला हैं। बङ्गाल में यह कालीमन्दिर शक्तिपूजनका एक केन्द्र कहा जाये, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसलिये पर्वों के समय मन्दिरमें हजारों यात्रियोंका समागम होता है।

कलकत्ते के एक ओर जैसे शक्तिपूजकोंका कालीमन्दिर है, वैसेही दूसरी ओर जीवहिंसारहित जैनोंके देवता पारसनाथका मन्दिर है। इन दोनोंमेंसे हालसीबगान मुहल्ले का पारसनाथ मन्दिर अधिक प्रसिद्ध है। ऐसा नहीं, कि

इसका शिल्पकार्य्य बड़ाही चित्ताकर्षक और अनेकानेक विचित्रताओंका अनूठा आधार है, पर इसकी सजावटमें खूब जी खोलकर धन लगाया गया है। सङ्ग-मरमर, काच, फव्वारे आदिकी भरमार ही इसकी विशेषता है। इसकी कारीगरीमें कोमलता है, पर सजावट के सामानोंसे यह दबा हुआ है। इस मन्दिरको देखनेसे बृन्दावनका शाहजीवाला मन्दिर बहुतेरोंको याद आ जाता है।
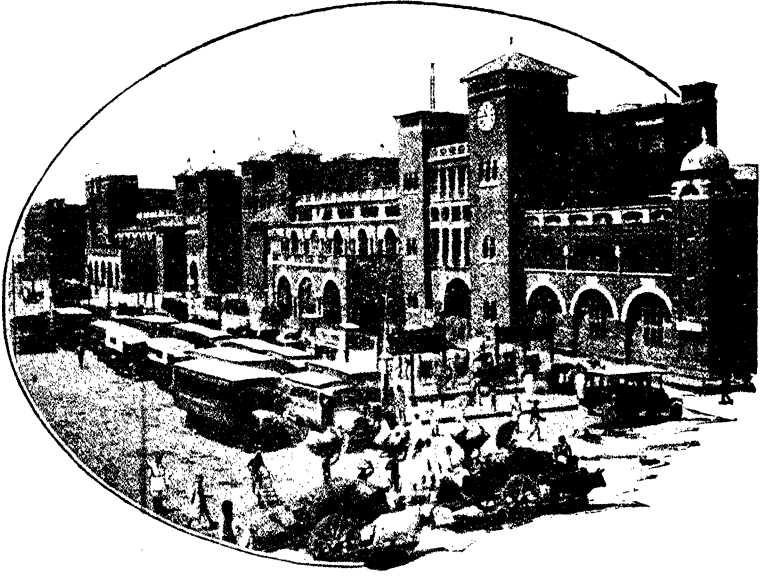
हवड़ा स्टेशन।

कलकत्ते के नीचे बहनेवाली गङ्गाके उस पार शिवपुरमें एक वनस्पति संग्रहका बाग है। नदीके तट पर बड़ी दूर तकके फैलावका यह बाग है। इसमें केवल इसी देशके ही नहीं, पर अनेकानेक देशों के नाना जातियोंवाले वृक्षलतादि हैं। बीचके तालाबमें नाना देशोंके अनेकानेक प्रकार कमल हैं, जिनमें विक्टोरिया रिजिया नामक पद्म अपने आकारसे और सभोंको नीचा दिखलाता है। बागमें बहुतेरी जातियोंके तरुवृक्ष वनस्पतियोंकी कुञ्जें हैं। पर अकेले एक ही वृक्षने सबसे बढ़कर नामवरी प्राप्त की है। यह एक बरगद है। यह सौ बरसोंसे भी अधिक दिनोंका है और बड़ेही विस्तारके स्थानमें डालडालियोंको खूब फैलाकर खड़ा है।

कलकत्त से हवड़ा जाने के पुलको पार कर इस बागमें पैदल जानेका रास्ता है। पर नदी पथसे खेवा स्टीमर पर जाना अधिक सुख और आनन्दका है। कलकत्त के पोर्ट कमिश्नरोंने इधर उधरके अनेक स्थानों में विचरनेवाले खेवा स्टीमरों का प्रबन्ध कर रखा है। ईसलिये स्टीमर पर ही शिवपुर वाले उस बागमें (वोटानिकलगार्डनमें) जाने से सुभीता है।
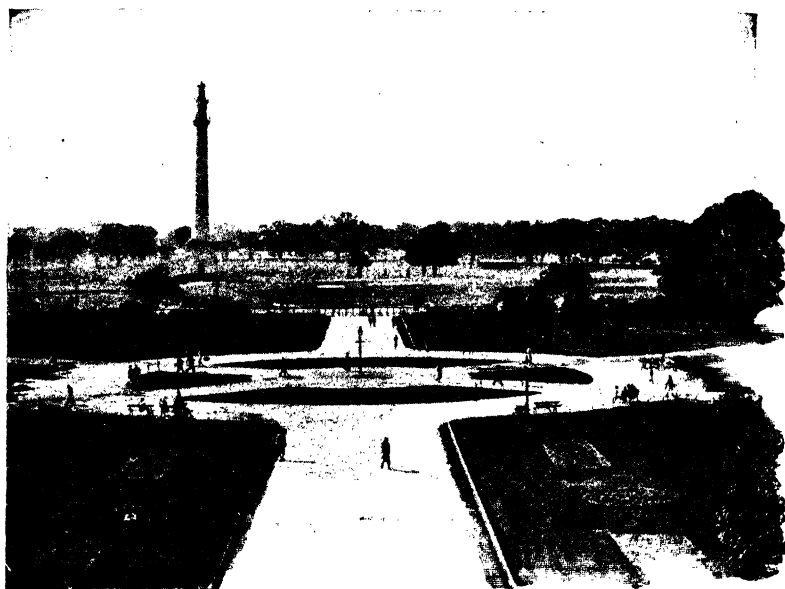
कर्ज़न गार्डन।

गङ्गाके तट पर कलकत्त के उपनगरमें अनगिने देवालय हैं। उन सभों में दक्षिणेश्वर नामक स्थानकी कालीबाड़ी बड़ी प्रख्यात है। इसी कालीबाड़ी में स्वामी विवेकानन्दके गुरु रामकृष्ण परमहंसने योगसाधन किया था। दक्षिणेश्वर नदीके उसी पार है, जिस पार कलकत्ता दक्षिणेश्वरके सामने नदीके दूसरे पार बेलूड़ नामक स्थान है। बेलूड़ में स्वामी विवेकानन्दकी समाधि है।

कलकत्त और हवड़ेके बीचवाले पुलको पार कर हवड़ेमें पैर रखते ही ईस्ट इण्डियन रेलवेका हवड़ा स्टेशन आता है।

हवड़े के बाद दूसरा स्टेशन लिलूआ—रेल कम्पनीका बसाया हुआ शहर है। वहां रेलका बडा भारी कारखाना है। उसके बाद रिसड़ा और श्रीरामपुर स्टेशन

आते हैं, जिनमें टाटके थैलोंके और टाट के बुनकों कलें और कपड़ा बुनकों बङ्गलक्ष्मी मिल हैं।
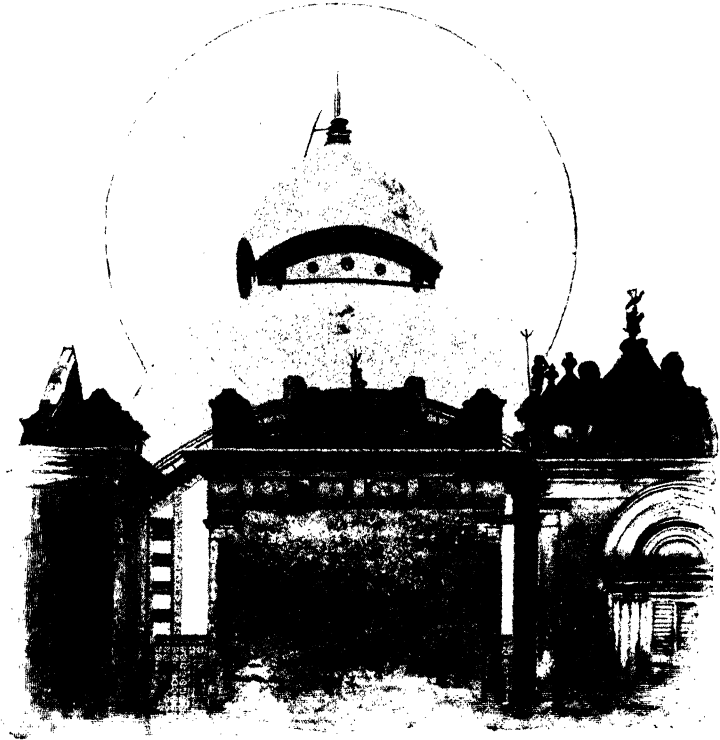
ताड़केश्वर।

शिव मन्दिर – ताड़केश्वर।

कलकत्ते से रेल पर ताड़केश्वर ३६ मील दूर है। सवेरे ७–२७ मिनिटवाली गाड़ी पर बैठनेसे ६–१६ मिनिटके समय यात्री ताड़केश्वरमें पहुँचते हैं और पूजन समाप्त कर दिनके २ बजेकी गाड़ी पर बैठनेसे अपरान्हके समय ५ बजनेके पहिले ही कलकत्ते लौटते हैं। अनेकानेक स्थानों के मनुष्य ताड़केश्वरमें पूजा चढ़ानेकी "मनौती" करते हैं और कलकत्तेसे जाने आनेका सुभीता रहनेके कारण वे तारकेश्वरमें देवताके दर्शनपूजनके लिये जाते हैं। हिन्दुओंके तीर्थस्थानोंमें ताड़केश्वरकी बड़ी महिमा है तथा किम्वदन्ति-योंके अनेकानेक अलौकिक घटनाओंके वृत्तान्तोंसे उस तीर्थ्य को मण्डित कर रखा है। पहिले

तारकेश्वर तीर्थ में बड़े बड़े अत्याचार होनेकी बातें सुनी जाती थीं। अब अत्याचार नहीं होने पाते और यात्री थोड़े खर्चसे पूजा चढ़ाकर सुखसे लौट आते हैं। रेलवेके विस्तारसे हिन्दु नरनारियोंके लिये इस तीर्थके दर्शनका विशेष सुभीता हो गया है।

चन्द्रनगर से बण्डेल।
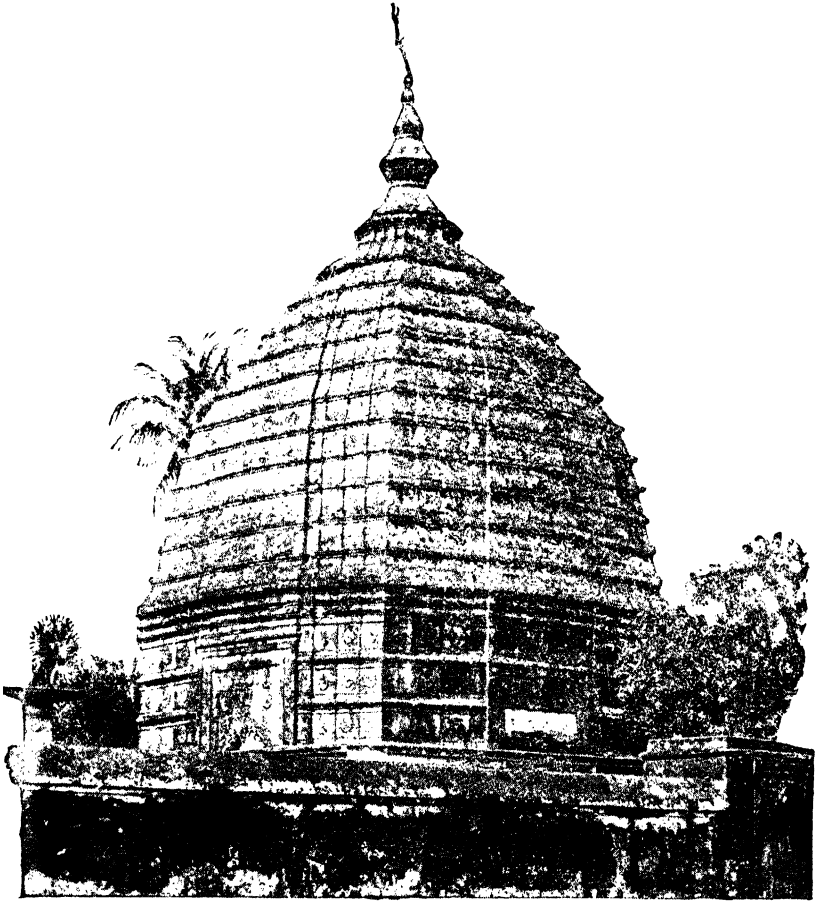
जगन्नाथ देवका मन्दिर, श्रीरामपुर।

चन्दरनगर कलकत्तेसे २१ मील पर है। चन्दरनगर ही बङ्गाल प्रान्त में फ्रान्सीसीयों का दूसरा भारतीय अधिकृत नगर है। एक समय अङ्गरेज भारतमें

वाणिज्यसे बढ़ने चढ़नेका प्रयत्न करते थे। उस प्रयत्नको करते करते ही अङ्गरेज भारतको अपने अधीनस्थ करनेमें समर्थ हुए उन दिनों हालण्डी पुर्तगाली, फ्रान्सीसी और अङ्गरेज, सभी वाणिज्य से एक दूसरेकी अपेक्षा बढ़ने चढ़नेके लिये बड़े बड़े प्रयत्नकरते थे जिससे वे तात्कालिक मुसलमान शासकोंको मनानेके उपाय स्थिर करनेमें लाचार होते थे। एक समय ऐसा आया था, जब फ्रान्सीसी बङ्गालमें विलक्षण प्रबल हुए थे। अब उन दिनोंका स्मरण करानेके लिये केवल एक चन्दरनगर ही फ्रान्सीसोंके हाथ शेष रह गया है। चारों ओर फैले हुए अङ्गरेजी अधिकारके बीच गङ्गाके तट पर वह छोटासा नगर फ्रान्सीसोंका है। चन्द्रनगरमें गङ्गाके किनारे २ सरकारी सड़क बहुत अच्छी है। वही सड़क चन्दरनगरकी शोभा है।

गांवका दृश्य।

चन्दरनगरसे ३ मील पर हुगली है। हुगलीका इमामबाड़ा मुसलमानोंका पवित्र तीर्थ माना जाता है। हाजी मुहम्मद मोहसिन नामक मजहबकी पक्की शिक्षावाले मुसलमानने अपनी माताके पुर्व पतिकी बेटीकी बड़ी भारी सम्पत्तिका स्वामी बनकर उसको सवाबके कानमें लगाया था। इमामबाड़ा उन्हींकी मर्ज हवी कीर्त्ति है।

हुगलीके बाद रेलवेका बैण्डेल स्टेशन आता है। यह मुसलमानों के शासनकालमें हुगलीका बन्दर था। यहांकी गङ्गाके दूसरे पारसे ईस्टर्न बङ्गाल रेलवेकी लाइन पुर्व बङ्गालको गयी है। उस लाइनके नैहाटी स्टेशनसे गङ्गाके ऊपर रेलवेका पुल बना हुआ है। वह पुल महारागी विक्टोरियाके राज्यकालकी आधी सदी पूरी होने पर बना, जिससे उसका नाम "जुबिली पुल" रखा गया है। यह पुल गङ्गाको पारकर बैण्डेल
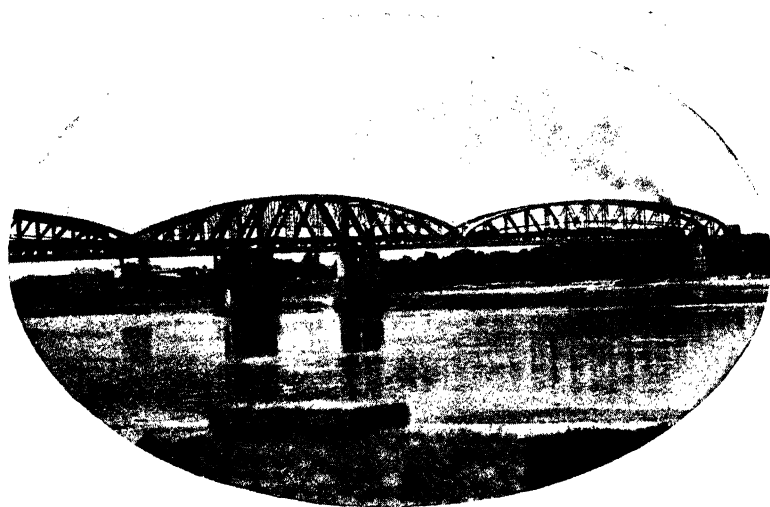
जुबली पुल।

स्टेशनमें आ लगा है। इस पुलने ईस्टर्न बङ्गाल रेलवेको ईस्ट इन्डियन रेलवेके साथ मिला दिया है। कलकत्तेमें ईस्टर्न बङ्गाल रेलवेके जिस स्टेशनसे उसकी लाइनका आरम्भ हुआ है उसका नाम सियालदा है। आजकल मथुरा जानेवाली एक्सप्रेस ट्रेन सियालदा स्टेशनसे ही छूटती है और उस पुलसे बैण्डेल स्टेशनमें पहुंच जाती है। इसमें कुछभी सन्देह नहीं, कि इस प्रबन्धसे यात्रियों का विशेष सुभीता हुआ है।

बरदवानमें
शेर अफ़गन और
बंगाल के
सुबादार
कुतबुद्दीन की
समाधि।

नवद्वीपमें कोड़ामा का मन्दिर।

बांसबेड़िया, नवद्वीप, कलना, कटवा।
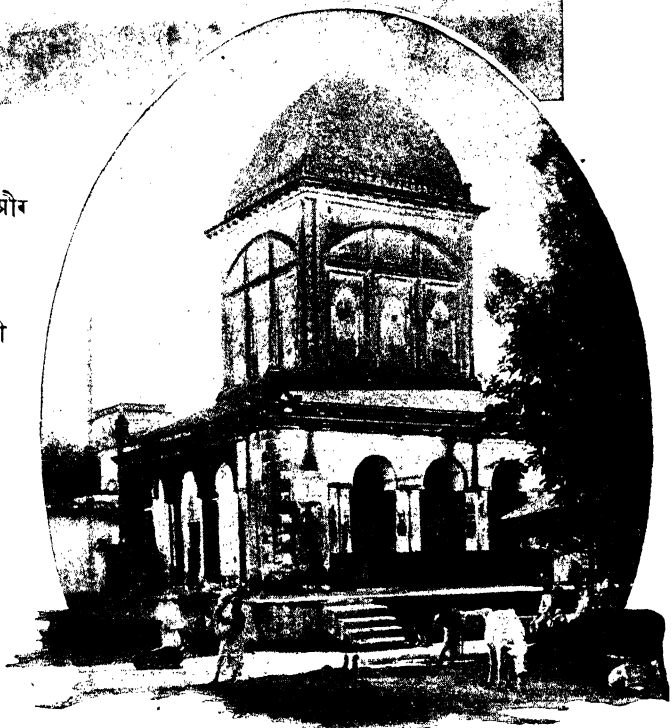
बंगडेल स्टेशन से एक शाखा रेल लाइन कलना, नवद्वीप, कटवा से होती हुई बरहरवा तक गई है। इस लाइनका प्रथम दर्शनीय

स्थान बांसबेड़िया वा वंशबाटी है। इस वंशबाटीके पूर्व राजपरिवारके देवमन्दिर बड़ेही रमणीक हैं। बाँसबेड़ियामें हंसेश्वरी देवीका मन्दिर ऐसा मनोहर है, कि उसके साथ मिलान करने योग्य सुहावना मन्दिर सारे बङ्गालमें एकही है, जो कान्तनगरका मन्दिर है। उस राजवंशके उत्तराधिकारी नृसिंहदेव रायके अधिकारसे निकल गयी हुई सम्पत्तिको लौटाकर पानेके लिये विलायतमें मुकद्दमा करना स्थिर किया। अपने वासस्थानमें रहनेसे थोड़े खर्च में गृहस्थीका निर्वाह करना असम्भव विचारकर वे मुकद्दमेके व्ययका धनसंग्रहार्थ काशीमें जा बसे। वहां वे भूकैलासके राजा जयनारायणके साथ मिलकर काशीखण्डका उलथा करने और योगका अभ्यास करने लगे। अन्तमें उनका मन सम्पत्तिकी वासनासे ऐसा रहित
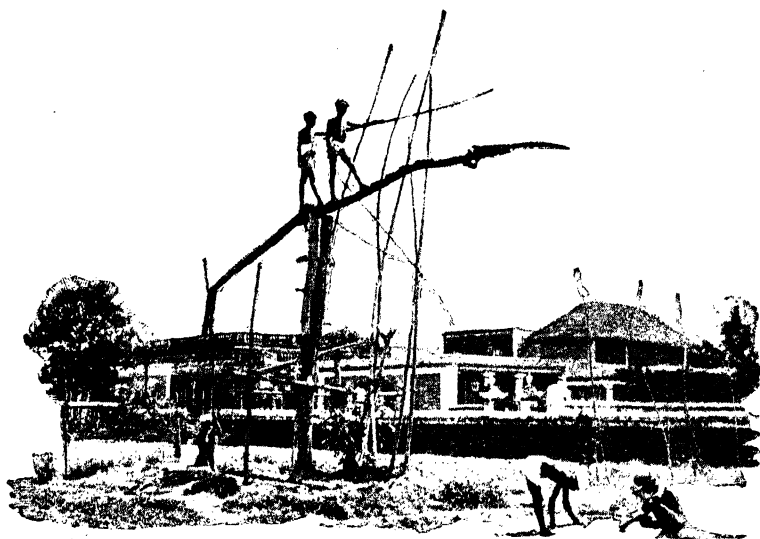
खेतकी सिंचाई।

हो गया, कि उन्होंने मुकद्दमेके खर्चके लिये जो धन बचाया था, उसको हंसेश्वरीके मन्दिरका निर्माण करनेमें लगा दिया। इस मन्दिरकी बात शायद न जाननेसे ही उसके दर्शनार्थियोंकी जैसी चाहिये वैसी भीड़ नहीं होती। कलकत्तेसे बांसबेड़िया जानेमें दो घण्टेका समयभी नहीं लगता। सवेरे ७-४ मिनिटकी गाड़ीमें बैठनेसे वहां गाड़ी ८-४० मिनिटके समय पहुंचा देती है।

बांसबेड़िया स्टेशनसे केवल दोही मील दूर त्रिबेणी—अर्थात् तीन नदियोंका सङ्गमस्थल है। यह भी गङ्गाके साथ यमुना और सरस्वतीका सङ्गम-स्थान है। प्रयागमें सङ्गम होकर वे तीनों नदियां एकही शरीर धारण करके आगे बढ़ी हैं और यहां वे तीनों परस्पर पृथक हुई हैं। प्रयागकी त्रिबेणी, युक्तबेणी है और यहां की त्रिबेणी मुक्तबेणी। पुव दिनों त्रिबेणीमें स्नानके पुण्य को लाभ करनेकी आशासे हजारों यात्रियों की भीड़ लगती है।

कालना कलकत्ते से ५७ मील दूर पर है। कालना एक समय व्यापारका केन्द्र था। उन दिनों यहां एक किला भी निर्मित था। बर्दवानके महाराजा महारागीयोंका आगमन कालनामें गङ्गास्नानके लिये होता था। इसीसे बर्दवानसे कालना तक पक्की सड़क है। उस सड़ककी बगलमें हरएक आठवीं मील पर तालाब और विश्रामभवन हैं। कालना में बर्दवानके महाराजाका राजभवन है और राजवंसके अनेकानेक देवालय बने हुए हैं। उस स्थानमें राजवंसके मृतोंकी स्मृतिअट्टालिका "समाज बाड़ी" कहलाती है।

नवद्वीप वा नदीया बङ्गालके इतिहासमें सुप्रसिद्ध है। विशेषतः बङ्गालमें वह ज्ञानका केन्द्र और चैतन्य देवके प्रेमका झरना होनेसे बड़ाही सम्मान पाता है। पहिले कृष्णनगरसे वहां जानेके लिये लोग नदीके मार्गकोही लेते थे। अब कृष्णनगरसे नवद्वीपकी गङ्गाके पार तक एक छोटी रेलवे लाइन बनगयी है। किन्तु हवड़े में ट्रेन पर बैठने से यात्रियोंको लगभग साढ़े ३ घण्टे में नवद्वीप पहुंचा देती है और इस सफरमें कहीं भी गाड़ी नहीं बदलनी पड़ती। एक समय नवद्वीप बङ्गालमें संस्कृत सीखनेका सर्वप्रधान केन्द्र था और नवद्वीपके पण्डितोंकी व्यवस्थाके अनुसार पश्चिम बङ्गालका हिन्दू समाज परिचलित होता था। पलासीमें जिस समय नवाब सिराजुद्दौलासे अङ्गरेज बीर क्लाइव का युद्ध हुआ उनदिनों बङ्गाल के अमर कवि भारतचन्द्रने नवद्वीप को "भारतीकी राजधानी" नाम दिया था। जब रेल नहीं थी और स्टीमर भी नहीं चलता था, तब भी सुदूर ओड़ीसा आदिसे विद्यार्थी नवद्वीपमें आते थे। यदि कहा जाये कि नवद्वीपमें जितने मन्दिर हैं उतनीही पंडितोंके घरकी पाठशालाएं हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होती। नवद्वीप वैष्णवोंका परम पवित्र तीर्थ है—गौराङ्गदेवकी पुण्यमयी स्मृतिसे पुनीत है। नवद्वीपमें ही गौराङ्गदेवने

प्रेमधर्मका प्रचार किया था। उस प्रेमकी बाढ़से मनुष्योंके बीच परस्पर जातिका भेद, धर्मका भेद धो गया था। गौराङ्गदेव आप प्रेमके भावावेशसे संकीर्ण न करते और मुसलमानको भी अपने प्रेमधर्मकी शीक्षा देते थे। वैष्णव सन्यासी होकर वे धर्मका प्रचार करते थे और अन्तमें जगदीशपुरी के नीले समुद्र के अन्दर अपने प्रेमके परम धन नीले माणिक देवको नयनगोचर करने के प्रेमोद्गार पुर्वक समुद्रकी नीलोर्मिमालामें कूदकर अदृश्य हो गये थे। उनके प्रचारित धर्मको यदि भारतके सब लोग अपनाते तो इस देशमें एक नवीन जातिका उदय होता उनका त्याग, उनका पवित्र आचरण तथा उनका धर्ममें निमग्न रहनेका भाव इतना अलौकिक था, कि अबतक उनकी स्मृति लोगोंके सम्मानकी है तथा एक सम्प्रदायके वैष्णव उनको श्रीकृष्णका अवतार मानकर पूजते हैं। अबतक अनेक वैष्णव धर्मावलम्बी नरनारी नवद्वीपमें जाकर निवास करते हैं और नवद्वीप वासको बृन्दावन वासकी तरह सौभाग्यका विषय मानते हैं। वैष्णवोंके उत्सवोंमें नवद्वीप अनेक यात्रियोंके समागमसे मुखर उठता है, जिससे यह कल्पना की जासकती है, कि नवद्वीपकी महिमा उक्त बड़ाईके दिनों कितनी अधिक थी। ईस्ट इण्डियन रेलवेके बननेसे भारतके जिन तीर्थों में जाना सुगम हो गया है, उनमें नवद्वीप एक है।

ईस्ट इण्डियन रेलवेके स्टेशनोंमें नवद्वीपके बाद कटोवाका उल्लेख किया जा सकता है। वह स्थान इसलिये प्रसिद्ध है, कि उस स्थानमें गौराङ्गदेवने सन्यास लिया था।

बर्दवानमें मुकाम।

बर्दवान कलकत्तेसे ६७ मील पर है। इसके जोड़का पुराना शहर बङ्गालमें अधिक नहीं। सन् १५७४ ई० में अकबर बादशाहकी फौजोंने यहीं दाउदखाँके कुटुम्बियोंको कैदकर लिया था। सन् १६२४ ई० में बादशाह शाहजहां (उन दिनोंके शहजादा कुर्रम) बर्दवानके किलेको अपने कब्जेमें ले लिया था। बादशाह जहांगीरने जब नूरजहाँ के स्वामीका बध करवाकर नूरजहाँको अपनी बेगम बनाया तबके पूर्व नूरजहां इसी बर्दवानमें थी। नूरजहाँके पूर्व स्वामी शेर अफगानकी कबर अबतक इसी बर्दवानमें है। उस घटनाके कुछही दिन बाद बर्दवान राजघरानेके प्रथम पुरुष आबूराय पञ्जाबसे बर्दवानमें आ बसे थे। उनके वंशवाले अनेकानेक
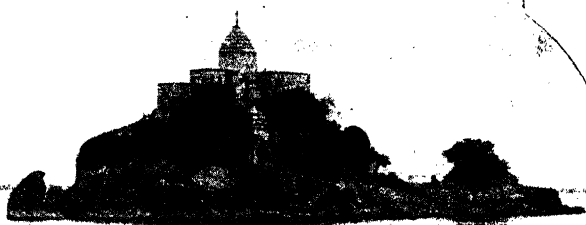
१। शान्तिनिकेतन विद्यालय—बोलपुर।
२। गबीनाथका मन्दिर—सुलतानगञ्ज।
३। विद्यार्थीवृन्द—शान्तिनिकेतन।

युद्ध बङ्गालमें भिड़ते और नानाप्रकार अवस्थाओंमें पड़ते हुए सम्पति को बढ़ाते आये। बर्दवानमें महाराजाका राजभवन, गुलाबबाग, श्यामशायर कृष्णशायर आदि दिघीयां देखने योग्य हैं। एक समय था, जब बर्दवान बङ्गालके स्वास्थ्यकर स्थानोंमें गिना जाता था। अब उस स्थितिका पूरा पूरा हेरफेर हो गया है।

बर्दवानसे कुछ आगे बढ़नेसे ही ईस्ट इण्डियन रेलवेकी लूप लाइन का आरम्भ होता है। बोलपुर इसी लूप लाइन पर अवस्थित है। बोलपुर पहिले अप्रसिद्ध स्थान था। किन्तु निर्जन होने से वहीं देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने धर्मचर्चाके लिये "शान्तिनिकेतन" बनाया था। उनके पुत्र पृथ्वी प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथने प्रथम इसी बोलपुरमें एक विद्यालय स्थापित किया और क्रमशः अब उसीको बढ़ाकर एक विशाल विश्वविद्यालयमें बदल लिया है। यह "विश्वभारती" अब भारतके मुख्य ज्ञानकेन्द्रोंमें हो गइ है और नाना देशोंके कोविद उस विश्वविद्यालयमें पधारकर ज्ञानका वितरण कर रहे हैं। "विश्वभारती" के विद्यार्थी भी नाना देशों में जाकर ज्ञानका संग्रह करते फिर रहे हैं। रवीन्द्रनाथके इस विश्वविद्यालयने कविकल्पनाके सच्चे रूपको लिया है। इसका यश पृथ्वी में सर्वत्र फैल गया है।

लूप लाइनके स्टेशनोंमें जमालपुर बड़ाही प्रसिद्ध हो उठा है। इस स्थानमें ईस्ट इण्डियन रेलवेका बड़ा भारी कारखाना चल रहा है।

जमालपुरसे मुंगेर जाना होता है। मुंगेर एक समय नामी ऐतिहासिक नगर और व्यापारका केन्द्र था। उन दिनों मुंगेरमें बढ़िया बन्दुक बनती थीं। मुंगेरमें आबनूस लकड़ीके सामान मनोहर बनते हैं। मुंगेरका किला एक समय सुरक्षित समझा जाता था। मुंगेर स्वास्थ्य सुधारनेका स्थान होने से बङ्गालके अनेक धनवान वहाँ बहुत दिनोंसे आबहवा बदलनेके लिये जाने लगे हैं। बङ्गालमें मुसलमान शासनकी इतिश्री इसी मुंगेर से हुई उसके बादही अङ्गरेजी अमलदारी कायम हुई। मुंगेरमें एक गर्म जलका झरना है। उसका जल अजीर्ण रोगीके लिये बड़े लाभका है। जो लोग स्वास्थ्यके लिये मुंगेर जाते हैं, वे उस जलको पीते हैं।

इसी लूप लाइनसे लोग राजमहल जाते हैं। राजमहलमें बङ्गाल के इतिहासकी बड़ी बड़ी प्रसिद्ध घटनाएं हो गयी हैं। राजमहल प्राकृतिक सौन्दर्य्य के लिये भी प्रसिद्ध है।
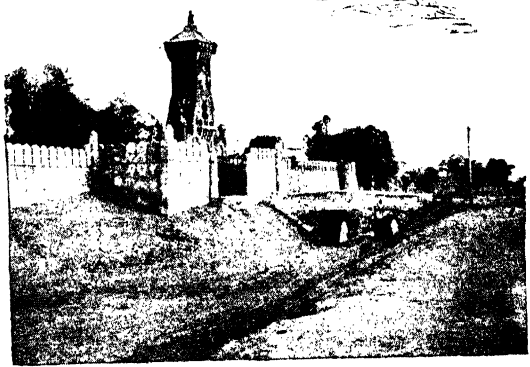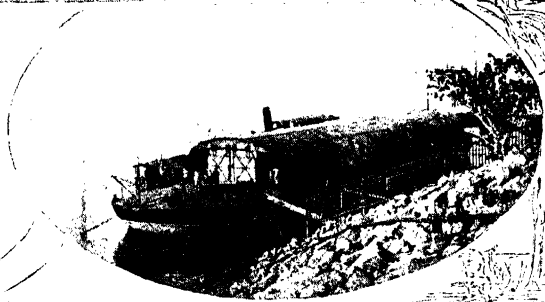
१। गङ्गासे मुंगेरका दृश्य।
२। स्टीमर पर पारका घाट, मुंगेर।
३। मुंगेरका किला।

बर्दवानके आगे कुछ दूर जाते जाते ही खानगी कोयलेकी खानियां दिखलाई देने लगती हैं। खानगी कोयलेके व्यापारका बङ्गाल और बिहार प्रान्तों के मुख्य व्यापारों मे कहनेसे कोई अतिशयोक्ति नहीं होती। इस व्यापार का यह फल हुआ है, कि एक समयके गहन वनाच्छादित स्थान व्यापार के बड़े बड़े केन्द्र बन गये हैं। सन १७७४ ई० इन् व्यापारके आरम्भका साल कहा जा सकता है। सन् १८२० ई० में पहिली बड़ी कम्पनीने कोयलेका काम आरम्भ किया। तबसे क्रमशः यह व्यापार बढ़ता आया है और हरएक केन्द्रमें हजारों नरनारियोंके पलनेका उपाय हो गया है। कोयलेकी खानोंमें मजदूरोंकी एक विशिष्टता देखनेमें आती है। अधिकतर स्थानोंकी खानोंमें स्त्री पुरुष दोनों मिलकर काम करते हैं। स्वामी कोयलेको फावड़ेसे काटता है और स्त्री उस कोयलेको गमलेमें लादती है। इस चालको बदलने का प्रयत्न हो रहा है। इस देशमें कोयलेके कामका असुभीता यह है, कि इतने दिनोंमें भी मजदूरों के सम्प्रदायकी सृष्टि नहीं हुई। जो लोग खानोंमें काम करते हैं, वे प्रायः सबके सब ग्रामोंसे काम पर आते हैं और खेतीका समय आने पर अपने अपने ग्राममें लौट जाते हैं. उस समय खानोंके कामका असुभीता होता है। इस देशमें जबतक कल कारखाना नहीं बढ़े थे तबतक अधिक कोयलेकी खपत नहीं होती थी। तब घरमे भी लोग लकड़ी जलाते थे। अब वह बात जाती रही है। बङ्गालका कोयला अब बम्बई और पञ्जाबके कलकारखानोंमें भी बरता जाता है। रेलसे व्यापारका जो माल जाता आता है, उसमें कोयला विशेष रूपसे गिनाने योग्य है। जर्मन युद्धके समय गवर्नमेण्टने इस देशसे कोयले की रफ्तानी बन्द कर दी थी। इसीसे यहांके कलकारखाने बन्द नहीं हुए थे। रानीगञ्ज कोयलेकी खानों का केन्द्र रूप है।

सन्थाल परगना—देवोनाथ।

कोयलेका प्रान्त समाप्त होने के पूर्व लोग रेल पर सन्थाल परगनेके जिस भागमें पहुंचते हैं, वह स्वास्थ सुधारनेके लिये बढ़िया होने मे मलेरिया से जकड़े हुए बङ्गालके निवासियोंके बड़े आदरका है। दुर्गापूजा और बड़े दिनकी छुट्टियोंमें वे सुभीता होते ही आब हवा बदलनेके लिये उन स्थानोंमे पहुंचते हैं। मिहिजाम, जामतारा, करमाटार, मधुपुर, गिरिडीह, बैजनाथ, सिमुलतला—ये स्थान नामी स्वास्थ सुधारने वाले हैं।

यह पहाड़ी प्रान्त है – जिसके बीच बीच छोटी छोटी पहाड़ियां हैं, और चारों ओर गहन साल बन है। यहाँ नदियां अधिकतर बालू ही बालूका विस्तार है बालूको खन्नेसे ही जल मिलता है। लोग उसी जलको लेकर काम निकालते हैं। किन्तु वृष्टि होनेसे ही नदियोंमें बड़े वेगकी बाढ़ आती है। आजकल कोई कोई इस प्रान्तके किसी किसी स्थानमें फलोंकी खेती कर धन पैदा करते हैं। मधुपुर और बैजनाथमें जो गुलाब उत्पन्न होते हैं उनका कलकत्तेमें समादर होता है। सिमुलतले से बड़े बड़े मोगरे भी कलकत्ते आते हैं। मधुपुर से गिरिडीह जाना होता है और वैद्यनाथसे
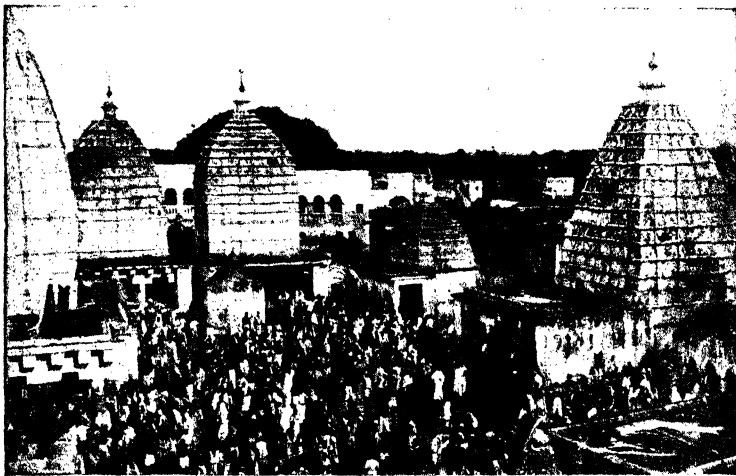
वैद्यनाथका शिवमन्दिर।

(जसीडीह) देवघर। देवघर अर्थात् देवता का गृह वैद्यनाथधाम के नामसे ही प्रसिद्ध है। इसकी प्राकृतिक शोभा मनोहर है। शहर के एक छोरमें नन्दन पहाड़ है। सूर्य्यके उदय और अस्त होते समयकी किरणावलीसे रङ्गकर त्रकुट पवत शहरसे ही दृष्टिगोचर होता है। तपे पहाड़ भी शहर से अधिक दूर पर नहीं है। बङ्गाल के नामी प्रत्नतत्वज्ञ विद्वान राजा राजेन्द्रलाल मित्र समय समय पर यहाँ आकर रहते थे और सुप्रसिद्ध राजनारायण बसु महाशयके जीवनका अन्तिम भाग देवघरमें ही बीता था। जलका सुभीता रहनेसे देवघरका सौन्दर्य्य बढ़ा है। किम्वदन्ती यह है,

कि दीर्घ काल पूर्व ब्राह्मणोंका एकदल पहाड़ी जातियों के निवासके इस ग्राममें आ बसा और शिवपूजन करने लगा। उनके पूजनके शिवलिङ्ग सम्बन्धी किम्वदन्ती भी वैसी ही अलौकिक बातोंकी है, जैसी अन्यान्य हिन्दू देवस्थानोंके विषयकी सुनी जाती है। जिस स्थानसे देवघर जानेके लिये गाड़ी बदलनी पड़ती है, वहां स्टेशनका नाम पहिले वैद्यनाथ था, जिससे यात्रियोंको भ्रममें पड़ते देख ईस्ट इण्डियन रेलवे कम्पनीने स्टेशनके उस नामको बदल दिया। अब देवघर ही वैजनाथ धामके नामसे लिखा जाने लगा है, इसलिये यात्री पहिलेकी तरह भ्रममें पड़नेसे बच गये। अब देवघर के चारों ओर छोटे छोटे ग्राम भी बस गये हैं, जिनमें बङ्गालके स्वास्थ्य चाहनेवाले मनुष्य जा रहते हैं।

सर ओङ्कारमल जटियाका भवन—जसीडीह।

आजकल हजारीबाग और राँचीको स्वास्थ्यप्रद स्थान होनेकी नामवरी प्राप्त हुई है। वे स्थान ईस्ट ईन्डियन रेलवेकी ग्राण्ड कार्ड लाइन पर अवस्थित हैं। उनका वर्णन आगे चलकर किया जायेगा। वह लाइन जब नहीं बनायी गयी थी, तब गिरिडीहसे पुस पुस नामकी डाक गाड़ी पर हजारीबाग जाना पढ़ता था। कविवर रवीन्द्रनाथने पुस पुस गाड़ीका वर्णन इस प्रकार किया है—"डाक गाड़ीको मनुष्य खींचते हुए ले जाते हैं। क्या इसको भी गाड़ी कहना चाहिये? चार पहियोंके ऊपर यह एक छोटासा पिंजड़ा बैठाया गया है।"

"पारसनाथ" और हजारीबाग।
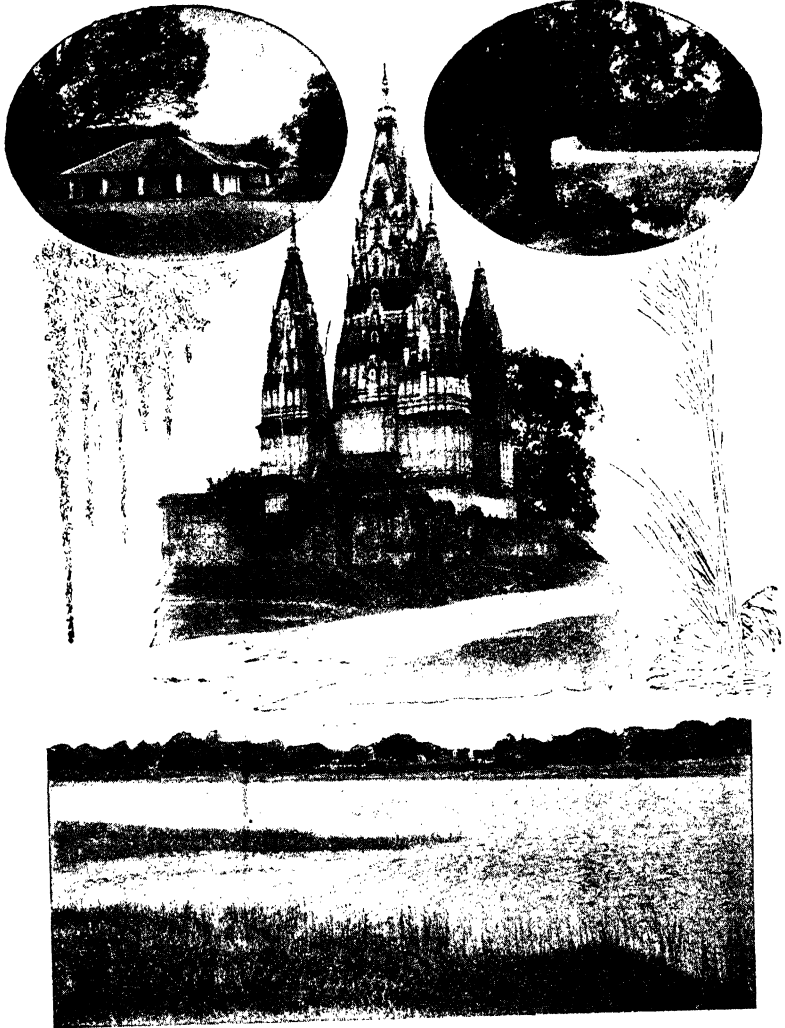
१। डुमरी डाक बङ्गला—डुमरी। २। ग्राण्ड ट्रङ्क रोड।
३। मन्दिर—हजारीबाग। ४। झील—हजारीबाग।

ग्राण्ड कार्ड लाइनका डुमरी स्टेशन कलकत्तेसे १९८ मील दूरी पर है। इसी डुमरी स्टेशनसे पारसनाथ जाना होता है। डुमरीसे मधुवन

कुल १३ मील है। मधुबन स्टेशन पारसनाथ पहाड़के ऐन नीचे अवस्थित है। मधुबन नामक स्थान दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन सम्प्रदायोंका तीर्थस्थान है। पहाड़ पर चढ़ना होता है। प्रतिवर्ष भारतके नाना प्रान्तोंसे जैनयात्री मधुवनके इस तीर्थमें आते हैं। गहन सालवनके बीचकी राहसे पर्वत पर चढ़ना होता है। जैनोंके चौबीस मन्दिर इस स्थानमें सुशोभित हैं। जैनोंने हिन्दुओंकी तरह रम्य स्थलमें देवालय निर्मित किये। जब रेलवेका विस्तार नहीं हुआ था, तो इस स्थानमें युरोपीय लोग सेहत सुधारनेके लिये आ बसते थे। बङ्गाल के पुर्व छोटे लाट लोग भी यहां कभी कभी आकर श्रमकी श्रान्तिका निवारण करते थे।

इसरीसे हजारीबाग रोड स्टेशन थोड़ी दूर पर है। हजारीबाग रोड स्टेशनसे हजारीबाग जाना होता है। आजकल उस स्टेशनसे हजारीबाग तक मोटरोंकी सवारीका सुभीता होगया है। इसलिये जानेआनेकी कोई दिक्कत नहीं झेलनी पड़ती। हजारीबाग स्वास्थ्यप्रद स्थान है। उसकी प्राकृतिक शोभासे मन मुग्ध होता है। स्टेशनके पासही एक गरम जल का झरना है। इसके उपरान्त हुडरू नामका जलप्रपात विशेष प्रसिद्ध है। बीच बीचमें पर्वत और हरी बनमालाके होनेसे झरना और जल प्रपातकी प्राकृतिक सुन्दरता बहुत बढ़ गयी है। वर्षके सभी समयोंमें अनेकानेक मनुष्य सेहत सुधारने और आनन्द मनाने के लिये हजारीबाग जाते हैं।

गया।

ईस्ट इण्डियन रेलवेसे यात्री थोड़े समयके अन्दर ही गया पहुंच जाते हैं। सन्ध्या ७ बजेके समय बम्बई मेल पर सवार होनेसे व रात्रिके ३ बजते बजते गयामें पहुंचते हैं। गया हिन्दुओंका परम पवित्र तीर्थ है। गयामें हिन्दुओंको पितरोंका पिण्डा देना होता है। चारों ओर की शैलमाला गयाकी प्राकृतिक शोभाको बढ़ा रही है। रामशिला, प्रेतशिला, ब्रह्मयोनि आदि शैल मालासे गया घिरी हुई है। प्रायः सभी पर्वतों के ऊपर ही मन्दिर निर्मित हैं। रामशिला ३७२ फीट ऊँची है। इस पर्वतके ऐन नीचेसे ऊपरके मन्दिर तक सोपानावली गयी है। प्रेतशिला के ऊपर अहल्या बाईका बनाया हुआ मन्दिर है। ब्रह्मयोनि पहाड़ बौद्ध साहित्यमें प्रसिद्ध है। बतलाया जाता है, कि गौतम बुद्धके अवस्थानकी

स्मृतिको चिरस्थायी करनेके लिये सम्राट अशोकने इस गिरिवरकी चोटी पर एक स्तूप निर्मित किया था। आजदिन उसका चिन्ह तक नहीं पाया जाता। फल्गुनदी गयाके नीचे बहती है। यह पहाड़ी नदी है। केवल बालूका विस्तार ही देखनेमें आता है। जल बालुके नीचे है। फल्गुके तटपर मन्दिर अनेक हैं। सब प्रधान मन्दिर विष्णुपादका है। इस विष्णुपाद पर पिण्डदान करनेसे जीवका उद्धार हो जाता है। विष्णुपाद का मन्दिर अहल्याबाईने निर्मित किया था। बुकानन साहबका कथन है, कि महाराष्ट्र प्रान्तकी महारानी अहल्याबाईने गयामें मन्दिर आदि स्थापित करनेमें १६ लाख रुपया व्यय किया था, जिसमेंसे एक इसी मन्दिरका निर्माण का ८ लाख रुपयेकी लागतसे हुआ था। बाकी धन ब्राह्मणोंको दान दे

गया फल्गु नदीतट का दृश्य।

दिया गया था। गयामें अनेकानेक शिलालिपियां मिली हैं, जिनसे गयाकी प्राचीनता और ऐतिहासिकता प्रमाणित होती है। यह इतिहास प्रसिद्ध है, कि गयामें हिन्दुधर्मसे बौद्धधर्म की टक्कर हुई थी।

गयाका उपनगर बुद्धगया है। बौद्ध लोग चार स्थानोंको बुद्धकी स्मृतिसे खचा हुआ पवित्र मानते हैं। (१) कपिलावस्तु जो बुद्धका जन्मस्थान है (२) उरुविल्व, जहां बुद्धने सन्यास लिया था, (३) वाराणसी, जहांसे बुद्धने धर्मप्रचार आरम्भ किया था, और (४) कुशी, जो बुद्धके निर्वाण प्राप्त करनेकी भूमि है। बुद्ध मुक्त होनेकी आशासे राजभवन और कुटुम्बको छोड़ आकर एक के बाद दूसरे सन्यासीकी सेवामें ज्ञानका अनुसन्धान करने

लगे। किन्तु कहीं भी उनके हृदयकी तृषा नहीं मिटी, जिससे वे बुद्धगयामें पहुंचे। वहां उरुविल्व ग्राममें उन्होंने षटवार्षिक व्रतानुष्ठान किया। तबभी वे शान्तिलाभ नहीं कर सके। आगे निरंजनाके जलमें स्नान पूर्वक
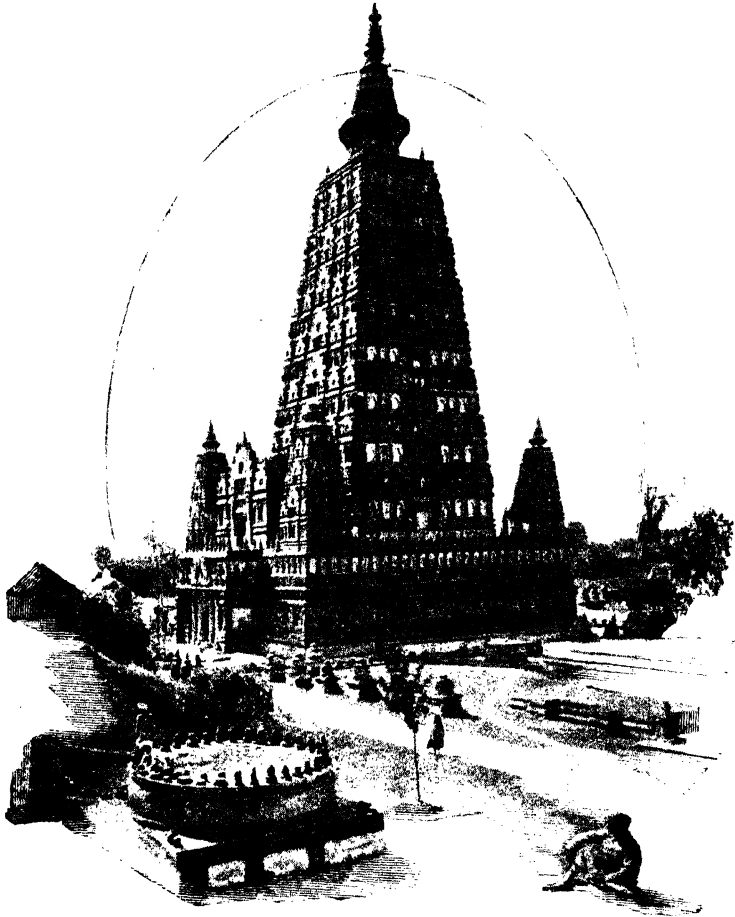
बुद्ध गया का मन्दिर।

ठण्डे हो और सुजाता नामकी लड़कीके दिये हुए आहारसे परितृप्त बनवे बोधिद्रुमके नीचे प्राणतक त्याग देनेके संकल्पसे साधनामें प्रवृत्त हुए और दिव्यज्ञान लाभ करनेमें समर्थ हुए। यही उरुविल्व बुद्धगया है।

इस स्थानको चिरस्मरणीय करनेके लिये बौद्ध नरेन्द्रों और दूसरे भक्तोंने सजावटोंसे सजाया। बुद्धगयाके मुख्य मन्दिरको अतुलनीय कहनेसे अतिशयोक्ति नहीं होती। इसका शिल्पकार्य्य असाधारण है। इस स्थानमें अबतक सम्राट अशोककी प्रस्तरमूर्त्ति है। अब यह निश्चित रूपसे कहना दुस्साध्य

बुद्धगयामें—बुद्धमूर्त्ति।

है, कि बुद्धगया कब हिन्दुओंके हाथ आया; किन्तु जब सन् ४३४ ई० में चीनदेशी परिव्राजक फाहियेन भारतमें आये थे, तब वे लिख गये, कि नगर मानों उजड़ा हुआ और आनन्दसे रहित है। क्रमशः ध्यान न पड़नेसे

मुख्य मन्दिरका अधिकांश बालसे आच्छादित हो गया। अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके पुरातत्व विभागकी देखरेखसे मन्दिरका उद्धार हुआ। अब एशिया के नाना देशोंसे बौद्ध धर्मावलम्बी मन्दिरके दर्शनके लिये आते हैं।

सोन—सहसराम—रोहतासगढ़।

गयासे कुछ आगे बढ़ रेलवे लाइन सोन नदके पार गयी है। सोनके ऊपरका पुल प्रसिद्ध है।
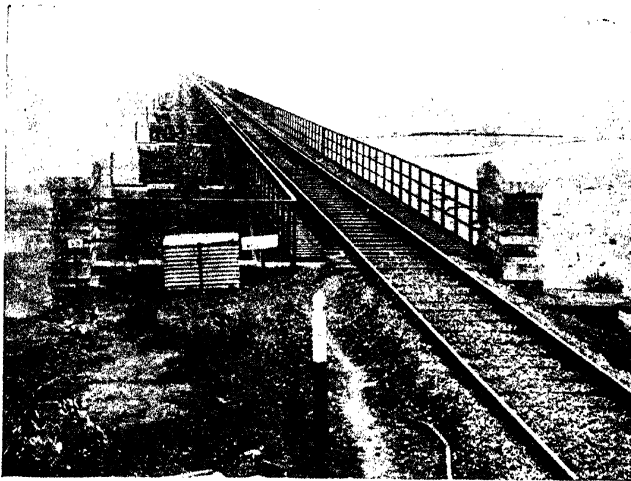
सोन नदके ऊपरका पुल।

सहसराममें हुमायूँ विजयी शेरशाहकी कबर देखने योग्य है। इस समाधि भवनके विशाल गुम्बद उल्लेखनीय हैं। किन्तु इस भवनकी सबसे बढ़कर विशिष्टता यह है, कि यह एक हजार वर्ग फीट विस्तारके एक तालावके बीच अवस्थित है। मार्मिक फर्गुसन साहबने इसको भारतकी श्रेष्ठ कबरोंमें गिनाया है। भारतकी भवननिर्माण विद्याका अनुराग जो लोग रखते हैं, उनकी दृष्टि और ध्यानको यह कबरगाह निस्सन्देह आकर्षित करेगा। बादशाही सड़क इसी शेरशाहकी कीर्तिको गाती है। सहसराम शहरमें और भी एक कबर है। वह शेरशाह के पिताकी है। उससे प्रायः १ मील दूर पर एक अपूर्ण कबर देखनेमें आती है, जो उनके पुत्रके लिये बनती थी।

सोन नदके तट परका डिहरी नामक स्थान स्वास्थ्य सुधारका है। डिहरीसे एक छोटी रेलकी लाइन रोहतासगढ़ तक गयी है। रोहतास पर्वतोंके ऊपर एक पुराना किला है, जिसके साथ हिन्दु मुसलमान और अङ्गरेज, तीनोंके अमलोंके इतिहासका सम्बन्ध है। किम्वदन्ती है, कि राजा हरिश्चन्द्रके पुत्र रोहिताश्वके नामानुसार इस स्थानका नाम पड़ा था। वह बात चाहे सही हो, या नहीं, किन्तु इसमें कोई सन्देह ही नहीं, कि वहाँ प्राचीन कालके हिन्दू नरेन्द्रोंका निवास था। इस स्थानमें जो मन्दिर थे, उनकी
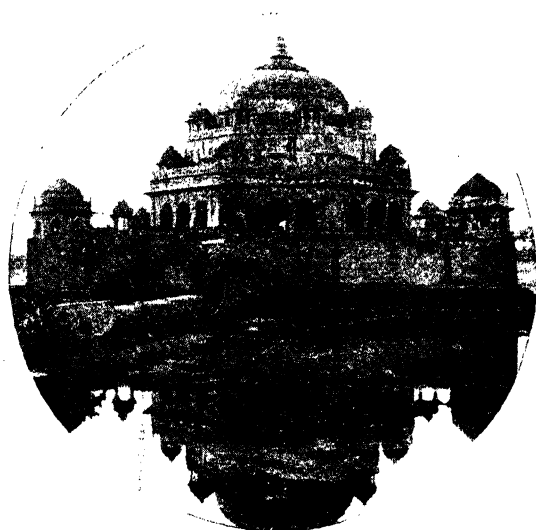
शेर—शाह की समाधि —सहसराम।

देवमूर्तियाँ औरङ्गजेब बादशाहकी आज्ञा से विध्वंस की गयी थी। शेरशाह जिन दिनों सम्राट हुमाऊँको राज्यसे च्युत करनेकी तैयारी करते थे, उन दिनों रोहतासमें एक दुर्भेद्य किला बनाया गया था, जिससे उसकी नामवरी फिर चमक उठी थी। राजा मानसिंह जिन दिनों बङ्गालके शासक नियुक्त किये गये थे, उन दिनों उन्होंने रोहतासगढ़की मजबूतीको विचार विपत्तिकी निवृत्तिके लिये उसी गढ़में अपने कुटुम्बको रखना समुचित जाना था। शाहजहाँने जब अपने पिताके विरुद्ध बगावतका झण्डा फहराया था, तो

आप उसी दुर्गमें रहना उन्होंने अपनी रक्षाके लिये आवश्यक माना था। बङ्गालके नवाब मीर कासिम जब अङ्गरेजोंसे लड़ाईमें भिड़े, तो कप्तानमें गडार्डने अङ्गरेजोंकी तरफसे रोहतासगढ़को कब्जेमें कर लिया था। लार्ड कर्जनके उद्योगसे रोहतासगढ़की प्राचीन स्मृति सुरक्षित की गयी है।

पटना।

वैद्यनाथ, सिमुलतला आदिके आगे चलकर बड़ा स्टेशन पटना आता है। पटना बड़ाही पुराना शहर है। प्राचीन भारतके इतिहासमें इसकी बड़ाईकी
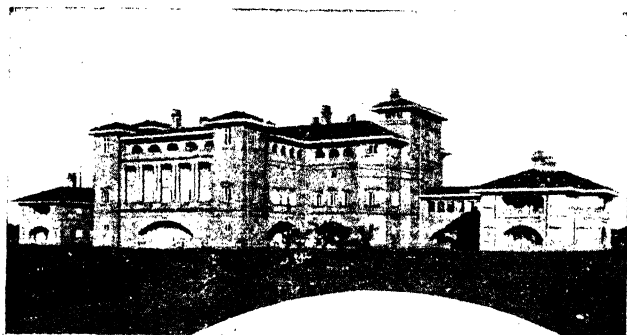
१। गवर्नमेण्ट हाउस। २। सुलतान अहमद साहिबका महल।

स्मृति है। पटनाही वह पाटलिपुत्र है, जो ईसामसीहके सन्का आरम्भ होनेके पुवकी छटीं सदीमें स्थापित हुआ था। बौद्धकाल के प्रारम्भिक दिनोंके

चिन्ह पटना शहरमें और पटना जिलेके अनेकानेक स्थानोंमें दिखलाई देते हैं। चीनदेशी परिव्राजक फाहियेन और ह्य येन्थसां पाटलिपुत्रमें पधारे थे। इसी स्थानमें बौद्धधर्मावलम्बी सम्राट अशोक की राजधानी थी और इसी स्थानसे सम्राटकी सहायता प्राप्त कर सैकड़ों श्रमण भारतके चारों ओर और भारत के बाहर शाक्यराजकुंवरके धर्ममतका प्रचार करने गये थे। इसी स्थानसे राजाज्ञानुसार भारतके अनेकानेक स्थानोंमें ऐसी खुदी हुई लिपियों वाले प्रस्तरके स्तम्भ स्थापित किये गये थे, जिनको भारतके लुप्तप्राय इतिहासका अक्षय मसाला कहनेसे भी अतिशयोक्ति नहीं होती। मौर्य्य साम्राज्यको जिन असामान्य

प्रसिद्ध अन्नसंग्रहालय—पटना (सन १७८४ ई०में निर्मित)।

वीर्य्यशाली सम्राट चन्द्रगुप्तने स्थापित किया था, उन्हींके समयसे ही पाटलिपुत्रने प्रतिष्ठा प्राप्त की। सन् ई० के ३०३ वर्ष पहिले बेबिलनमें सिकन्दरका देहान्त हुआ था। उसके बाद ही उनका वह राज्य छिन्न भिन्न हो गया, जो विशाल होने पर भी शृंखलाबद्ध नहीं था। इसी सुभीतेका लाभ उठाकर चन्द्रगुप्तने पराक्रमसे राज्यको विस्तृत करते करते इतना बढ़ाया, कि वह पूर्व ओर बङ्गालकी खाड़ीसे पश्चिम ओर अरब समुद्र तक और उत्तर ओर हिमालयसे दक्षिण ओर उज्जैन तक फैल गया। अशोकका राजभवन नगरके बीच था। सन् १८७२ ई०में जनरल कनिङ्घमने

पटने में पाटलिपुत्रके ध्वंसावशेषका आविष्कार करना चाहा था। तबसे गवर्नमेण्टके पुरातत्त्व विभागकी ओर से कभी कभी वह उद्योग होता आता है। कनिङ्कहमके प्रयत्नके अनन्तर रतन टाटाके धनसे पुनर्वार भूमि खनकर अनुसन्धान किया गया। इस उद्योगसे पटनेके उपनगर भागमें एक विशाल अट्टालिकाका ध्वंसावशेष आविष्कृत हुआ। यह अट्टालिका मौर्य्य साम्राज्यके समयकी थी अर्थात् सन् इसवीकी तीसरी सदीकी। सम्राट अशोकने इस स्थान पर अनेकानेक अट्टालिकाएं निर्मित करायी थीं। किसी

"पर्य्यटक" यात्रियोंकी गाड़ीका भीतरी दृश्य।

अनिर्दिष्ट कालमें—शायद सन् इसवीके आरम्भकाल में जलकी बाढ़ अट्टालिकाओंमें घुसकर कीचड़ छोड़ गयी होगी। जो अट्टालिका आविष्कृत हुई उसकी छत लगभग १०० स्तम्भों पर अवस्थित पायी गयी। स्तम्भ चुनारके बलुआ पत्थरके बने हुए और बढ़िया पालिशवाले हैं। इस अट्टालिकाके दाँयीं ओर स्तम्भोंकी कतारके पिछवाड़े अवस्थित लकड़ीकी सोपानावली भी आविष्कृत हुई है। सीढ़ियाँ ३० फीट लम्बी, ६ फीट चौड़ी और ४ फीट
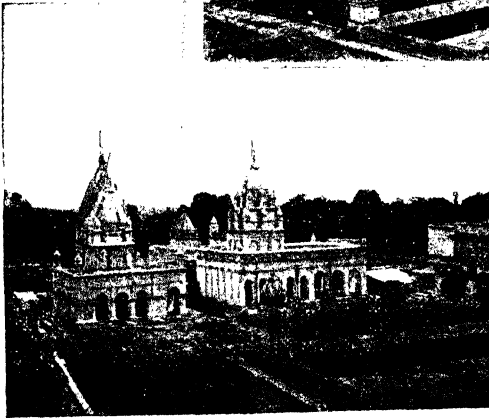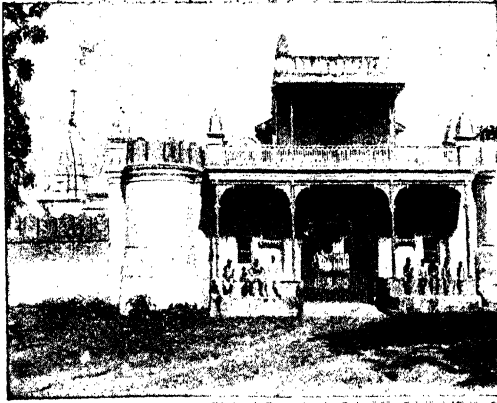
१। मधुवनमें मन्दिरका तोरण फाटक।
२ और ३। श्वेताम्बर जैनियोंके मन्दिर।

ऊँची है। वे ३० फ़ीट लम्बाईकी सागवनकी लकड़ीकी बनी हुई हैं। लकड़ी अबतक नहीं गली है।

पटना अब बिहार प्रान्तकी राजधानी है। बङ्गाल जब दो भागोंमें बाँटे जानेके बाद जोड़कर एक किया गया और उससे अलग निकाल कर बिहार और ओड़ीसाका पृथक प्रान्त बनाया गया, तबसे पटना उस नये प्रान्तकी राजधानीका सम्मान पा गया। पटनेमें हाईकोर्ट, युनिवर्सिटी आदि स्थापित की गयी हैं। इस प्रकारसे मौर्य्य सम्राटोंकी राजधानी को पुनर्वार एक प्रान्तकी राजधानीका गौरव प्राप्त हुआ है। पटनेके बाद दानापुर बड़ा स्टेशन है—वह सिपाहियोंके ग़दर की नामवरी रखता है। आगे का आरा स्टेशन भी उल्लेख योग्य है यहां शोणभद्र नदी के ऊपर रेलवे पुल निर्मित हुआ है। यह पुल ४ हज़ार ७ सौ ३१ फ़ीट लम्बा है। सन् १८५६ ई०में इस पुल का काम आरम्भ किया गया और सन् १८६२ ई० में समाप्त हुआ। इस समयके बीच सिपाहियोंका ग़दर उठ खड़ा होनेसे पुलका काम समाप्त होनेमें देरी पड़ गयी। ईंटोंके स्तम्भों पर लोहेका पुल अवस्थित है। ग़दरके दिनों सिपाहियोंने इसके निर्माणका सामान इतना अधिक नष्ट कर दियाथा, कि उसका मूल्य ६ लाख ३० हज़ार रुपया था।

मोगलसराय स्टेशन कलकत्ते से ४ सौ ७० मील दूरी पर है। ईस्ट इण्डियन रेलवेका यह स्टेशन बड़ा भारी जङ्क्शन स्टेशन है। यहाँसे काशीकी ओर रेल गयी है। अब ग्राण्ड कार्ड लाइन भी यहीं मेन लाइन से आ मिली है। ग्राण्ड कार्ड लाइन आसनसोल स्टेशनसे कुछ ही दूर पर आरम्भ होकर मोगलसराय तक आयी है।

विन्ध्याचल।

ईस्ट इण्डियन रेलवेके मुख्य लाइन पर मोगलसराय से आगे बढ़ने के अनन्तर बड़े स्टेशन मिरजापुरके इधर विन्ध्याचल आता है। गङ्गा के तट पर विन्ध्यगिरिश्रेणी के एकांशमें पहाड़के उपर विन्ध्यवासिनी देवीका प्राचीन मन्दिर है, जिससे पृथक स्थानमें नवीन मन्दिर निर्मित हुआ है। बिन्ध्यवासिनी देवीकी इस विहार भुमिसे सोपानावली गङ्गामें उतरी है। घाटके ऊपर पहाड़को काट घाटका समतल हेल बढ़ा वहाँ मन्दिर बनाया गया है।

चौकके चारों ओर दुर्गापाठ और हवन होते हैं। नवरात्रके समय चौकमें जो अग्नि अग्निकुण्डमें डाली जाती है, वह ९ दिन ९ रात नहीं बुझने दी जाती। उसमें हवन होता रहता है। विन्ध्यवासिनीकी दो मूर्तियाँ हैं एक भोगमाया और दूसरी योगमाया। ऊँचे पर्वत-शिखर पर योगमाया विराजती हैं और उससे नीचे समतल पर भोगमाया। इनसे पृथक स्थानमें कपालिनीका मन्दिर और तीर्थकुण्ड प्रभृति हैं। और एक स्थानमें गिरिशिखर स्वत: ही

काली खोह मन्दिर।

मन्दिरके आकारका है, जिससे पर्वतगात्र को खोदकर वहाँ भी देवी की मूर्ति गठन पूर्वक प्रतिष्ठित की गयी है।

विन्ध्याचल स्वास्थ्य सुधारनेका स्थान है। आजकल अनेक स्वास्थ्य चाहनेवाले विन्ध्याचलमें जा रहते हैं। ऐसे स्वास्थ्यप्रद स्थानमें स्वास्थ्य सुख लाभ होनेके साथ साथ सुगमतापूर्वक देवीके भी दर्शनका सौभाग्य प्राप्त होता है इस विचारसे बहुतेरे विन्ध्याचलमें ही—स्वास्थ्यके लिये जाना पसन्द करते हैं।

दुर्लभ तीर्थ की यात्रा—काशी।

मोगलसराय एक बड़ा स्टेशन है। इस स्टेशनसे काशीकी ओर रेल गयी है।

काशी हिन्दु भारतकी राजधानी और हिन्दू धर्मका केन्द्र है। काशीकी महिमा गङ्गाके घाटों और देवदेवियोंके मन्दिरोंसे खिली है। कहा जा सक्ता है, कि काशीमें गङ्गाका किनारा घाट ही घाटका है। बगदाद शहरमें नदीका किनारा जैसा पक्का बँधा हुआ है, वैसीही बात काशीमें घाटोंसे हो गयी है। काशीमें घाट कोई ५० हैं। दशाश्वमेध

काशी—गङ्गातीरका दृश्य।

घाट घाटों से ठसे हुए गङ्गाकिनारेके घाटोंमें बीचका कहला सकता है। इसके बाद ही मान-मन्दिर घाट है। यह मान मन्दिर भी अपने संस्थापक जयपुरके महाराजा जयसिंहकी अपूर्व कीर्तिका द्योतक है उन्होंने ज्योतिषकी गणनाके लिये जयपुरमें दिल्लीमें उज्जैनमें, मथुरामें और बनारसमें मान-मन्दिर बनाये थे। काशीके नीचे गङ्गा आधे चाँदके आकारको धारण कर उत्तरकी तरफ बहती है। उसके किनारे लगातार घाटोंकी भरमार है। मान-मन्दिर घाटके बाद ही मणिकर्णिका घाट प्रसिद्ध है। इनके बीच नैपाली मन्दिर और छोटासा नैपाली घाट है। मणिकर्णिका बनारसका विशाल श्मशान है। काशीमें शरीर छोड़ना और मणिकर्णिकामें भस्मीभूत होना हिन्दुओंकी बड़ी कामना का है। बङ्गालके

एक पूर्व छोटे लाट सर रिचार्ड टेम्पलने ठीक ही कहा है, कि नदीतटमें काशीके जोड़की सुन्दरता पृथ्वीमें और कहीं नहीं। घाटसे सटे हुए घाटोंकी सोपानावली नदीके जलमें बड़ी गहराई तक घुसी हुई है। घाटोंपर अनेक वर्णोंके वस्त्र पहिरकर सैकड़ों स्नानार्थी और स्नानार्थिनियोंका दल देखनेमें आता है इस तीर्थमें देशदेशके राजाओंने घाट बनाकर पुण्यसंग्रह किया है।
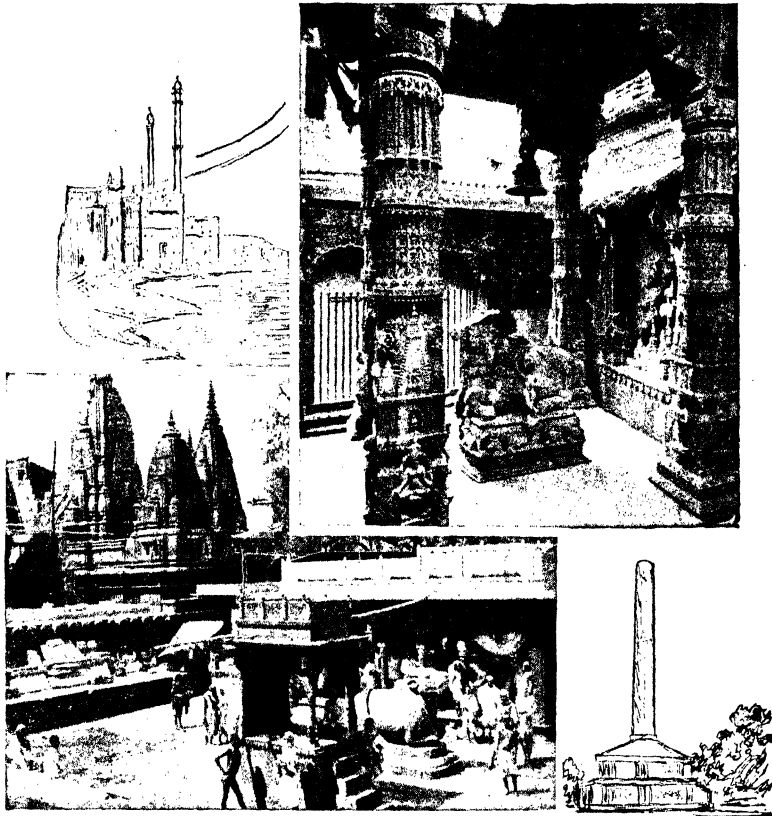
१। ज्ञानवापी। २। गुँसाई मन्दिर।

देवालय काशीके सर्वस्व हैं। जबसे भारतमें हिन्दुधर्मका अभ्युदय हुआ है, तभीसे काशी हिन्दुधर्मका पवित्रतम तीर्थ है। तभीसे काशीमें धर्म और ज्ञानके तृषातुरोंका समागम होता आता है। इसीलिये काशी पर औरङ्गजेब

बादशाहकी क्रोधभरी निगाह पड़ी थी। विश्वेश्वरका वर्त्तमान मन्दिर पुरानेकी अपेक्षा कहीं छोटा है और अधिक दिनका भी नहीं। पुराने मन्दिरको तुड़वाकर उसपर औरङ्गजेबने मसजिद बनवाई। मसजिदकी दीवारमें लगे हुए खुदाईवाले प्रस्तर से यह प्रमाण मिल जाता है, कि मन्दिरके सामानसे ही मसजिद बनायी गयी। मसजिदकी बगल में ही ज्ञानवापी है। प्राचीन मन्दिरको मुसलमान जिस समय बादशाहकी आज्ञासे ध्वंस करने लगे, उस समय मन्दिरके पुरोहितोंने विश्वेश्वरको ज्ञानवापी कूपमें डालकर ध्वंस होनेसे बचाया था।
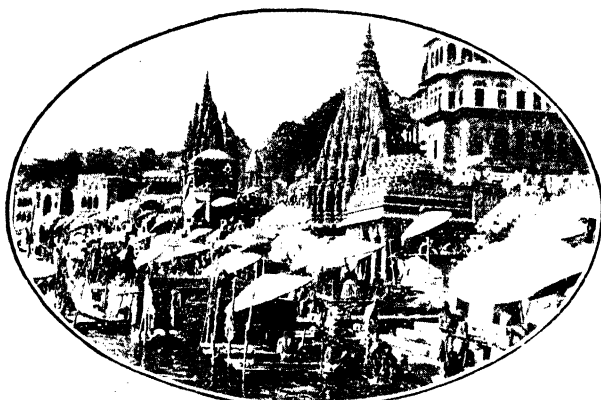
गङ्गातीरके मन्दिर—काशी।

बनारसमें विश्वेश्वर और अन्नपूर्णाके मन्दिर ही सबसे प्रसिद्ध हैं। दोनों ही मन्दिर तङ्ग गलीके पथ पर अवस्थित हैं। विश्वेश्वरके मन्दिरकी विशेषता यह है, कि तीन ओर से मन्दिरके गर्भमें प्रवेश किया जा सकता है।

एक समयकी "अर्द्ध वंगेश्वरी" महारानी भवानीने अपनी पुण्यकीर्त्ति से काशीमें वङ्गदेशवासियोंका नाम समुज्वल बना दिया है। उनकी कीर्त्तियोंके दो विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। प्रथम—काशीकी सीमाका निर्णय और काशी प्रदक्षिणाके पञ्चक्रोशी पथका संस्कार। दूसरे दुर्गामन्दिरकी स्थापना। उस मन्दिर में अनेकानेक बन्दरों को शरण लेते देखकर विदेशी पर्य्यटक उसको Monkey Temple नाम देते हैं। इस मन्दिरकी बगल में ही दुर्गाकुण्ड तालाब है।

काशीके तमाम मन्दिरोंका परिचय देना असम्भव है। हिन्दुओं के लिये काशीमें देवताओंका दर्शन अत्यावश्यक विचारा जाता है।

काशीके दूसरे पार काशीनरेशका विशाल राजभवन है। कुछ दिनोंसे भारत गवर्नमेण्टने इनको दूसरे देशीय नरेन्द्रोंके जोड़का सम्मान दे दिया है।

पूर्वकालमें काशी विद्याका जैसा केन्द्र था, वैसाही फिर होता आता है। सरकारी कालेज—कुइन्स कालेज—बहुत दिनोंका है। इसका भवन मनभावन है। नामी पुरातत्वज्ञ मेजर कीटोके आदर्शानुसार वह
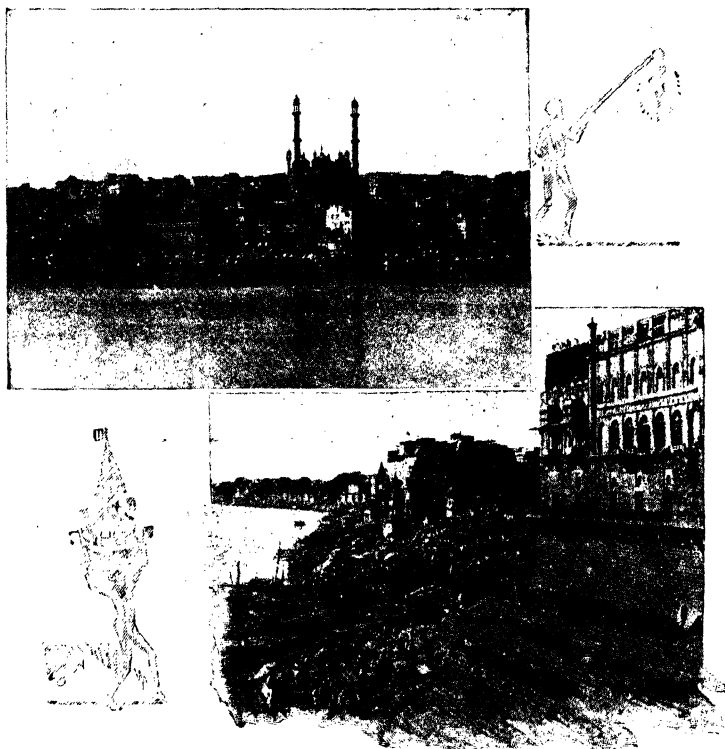
१—बेनी घाट। २—दशाश्वमेध घाट।

भवन सन् १८५३ ई०में निर्मित हुआ। किसी किसीकी राय यह है, कि इस देशमें अङ्गरेजोंने और कोई वैसा भवन नहीं बनाया।

सेन्ट्रल हिन्दू कालेज मिसेस बेसण्टकी चिरस्थायी कीर्ति है। उस कालेजके आधार पर पंडित मदनमोहन मालवीयके उद्योगसे हिन्दू विश्वविद्यालयके भवनादि निर्मित हुए हैं। समग्र भारतमें उस विश्वविद्यालयका जोड़ा,

नहीं। उसके नाना बिभागोंमें बिभिन्न बिषयोंकी शिक्षा देनेका सुप्रबन्ध किया गया है। विस्तृत भुखंड पर मानों एक ज्ञानपुरी रची गयी है। भारत के सभी प्रान्तों के मनुष्योंने उसकी सुफलताके लिये धन प्रदान किया है।

सर सैयद अहमदने अलीगढ़में मुख्यत: मुसलमानोंके लिये जो विद्यालय खोला था, वह इसके साथ मिलान करने पर यदि तुच्छ कहा जाये, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सारनाथ काशीका उपनगर है। वही बौद्धसाहित्यका प्रसिद्ध मृगदाव है। निर्वाण—मुक्तिके उपायका अनुभव कर गौतम बुद्धने यहां पधारनेके अनन्तर अपने बिचारे हुए धर्मका प्रथम यहींसे प्रचार आरम्भ किया
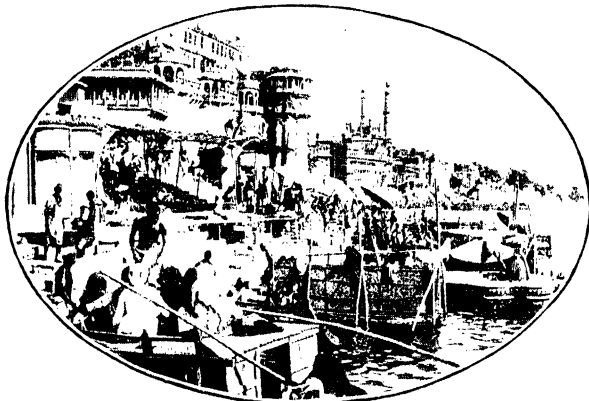
गङ्गाका घाट—काशी।

था वही प्रचार धर्मचक्रका प्रवर्त्तन कहलाता है। उन दिनोंकी प्रथा यह थी कि काशीमें धममतकी प्रतिष्ठा करानेमें असमथ होनेसे किसी धर्मप्रचारका अभिमत नहीं माना जाता था। सारनाथके भवनादि बहुत दिनों तक भुमिके नीचे गड़े हुए थे। अब उनका आविष्कार होनेसे प्राचीन कालके संस्कार और शिल्पके चौंकानेवाले चिन्ह प्रत्यक्ष हो रहे हैं। वे चिन्ह एक जादूघरमें सजाये गये हैं और सजाये जा रहे हैं। उन चिन्होंमें से बढ़िया पालिशवाला स्तम्भ और उसके माथे परका सिंहमुख शिल्प बिनोदियों को भली भाँति परिचित हो चुके हैं।

बौद्धधर्म ज्ञानका है। उसमें कर्म्मकाण्डके विषय न होनेसे वह साधारण मनुष्योंके चित्ताकर्षक नहीं हुआ। इसलिये भारतवर्षसे उसका तिरोभाव हुआ अथवा हिन्दुओंके आचारोंसे ठसे हुए धर्ममें उसकी विलय हो गयी।

इलाहाबाद।

इलाहाबाद अथवा प्रयाग गङ्गायमुनाके सङ्गमक्षेत्रमें अवस्थित है। कालिन्दी यमुनाकी काली जलधारा गङ्गाके जलमें आमिली है। बड़ी दूर तक कालीधारा और श्वेतधाराका मेल नहीं खपने पाता इलाहाबादका किला अकबरने बनाया था और शहर भी उसी अकबर शाहने ही बसाया था। वह स्थान सन् ११९४ई० में मुसलमानोंके हस्तगत हुआ और सन् १५८४ ई०में प्रान्तीय शासकके निवासके लिये निर्दिष्ट किया गया। जहाङ्गीर इलाहाबादके किले में रहते थे और इलाहाबादका खुसरोबाग उनके बागी पुत्र खुसरोकी कबरको छातीमें लेकर उस शाहजादाकी यादको जगा रहा है। सन् १७३९ ई०में मराठोंने इलाहाबादको हस्तगत कर लिया था। उसको सन् १८०१ ई०में अङ्गरेजोंने अधिकृत किया।

सिपाहियोंके गदरके बाद जब सम्राज्ञी विक्टोरियाने भारतका शासनभार अपने हाथ ले लिया तो गवर्नर जनरल लार्ड कैनिङ्गने इलाहाबादमें दरबार कर महारानीकी घोषणा पढ़ सुनायी।

एक ऊँचे तोरणके बीच से खुसरोबागमें जाना होता है। उस मनोहर सजावटके बागमें तीन समाधियाँ हैं। प्रथम समाधि शाहजादा खुसरोकी दूसरी उसकी बहिन शाहजादीकी और तीसरी उसकी माता बेगम साहिबाकी। जहाँगीर बादशाहकी ये बेगम राजपुत कुलकी थीं। खुसरोकी समाधि बड़ी ही सुन्दर है। पहिले वह और भी मनोहर थी। पर अब उसपर अङ्कित चित्रादिके रङ्ग फीके हो गये हैं।

इस बागके पूर्व ओर पुराना शहर अवस्थित है।

अकबरके समयका बना हुआ किला नदीके ऊपरसे बड़ाही रौनकदार दिखलाई देता है। इसको इन दिनोंके उपयुक्त बनानेके लिये इसके ऊँचे ऊँचे स्तम्भ और दीवारका परिवर्त्तन किया गया है जिससे इसकी सुन्दरता घट गयी है, इसमें कोई सन्देह नहीं। किलेके मुख्य फाटकके ऊपर एक गुम्बद है। किलेके भीतरी भाग में जानेसे स्तम्भोंकी आठ कतारों पर एक चौकोर कमरा दिखलाई देता है। स्तम्भोंकी हरएक कतारमें आठ स्तम्भ हैं। उस
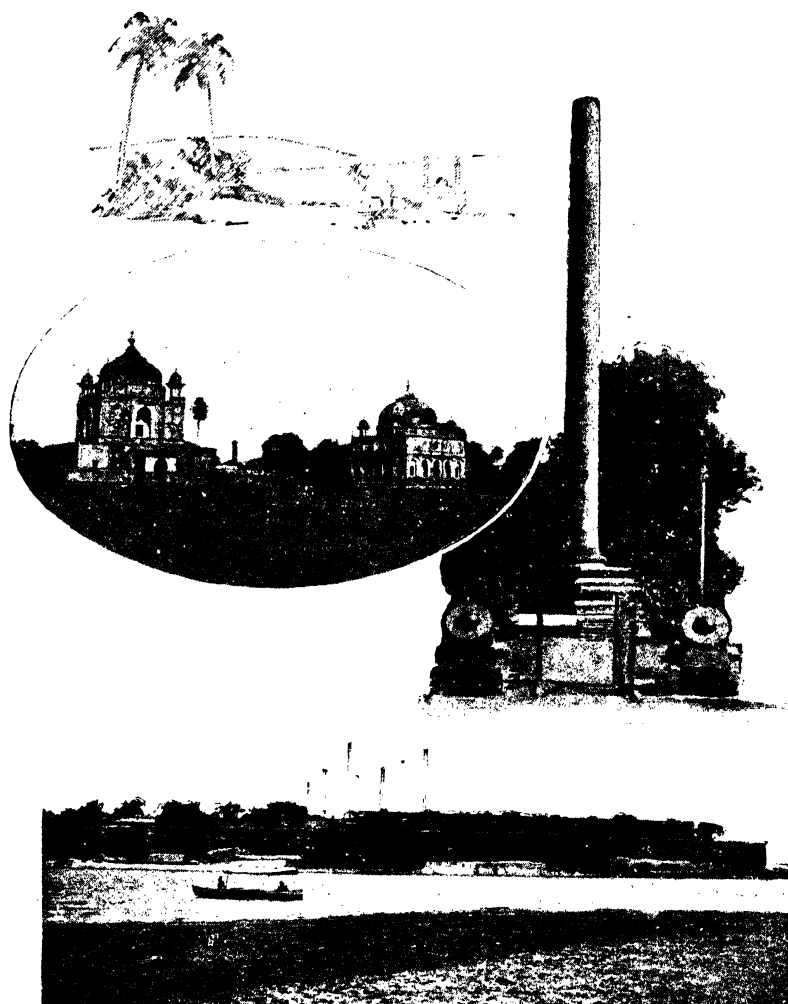
१ । समाधी—खुसरू बाग।   २ । अशोक का स्थम्भ ।

३ । किला—इलाहाबाद ।

इलाहाबाद।
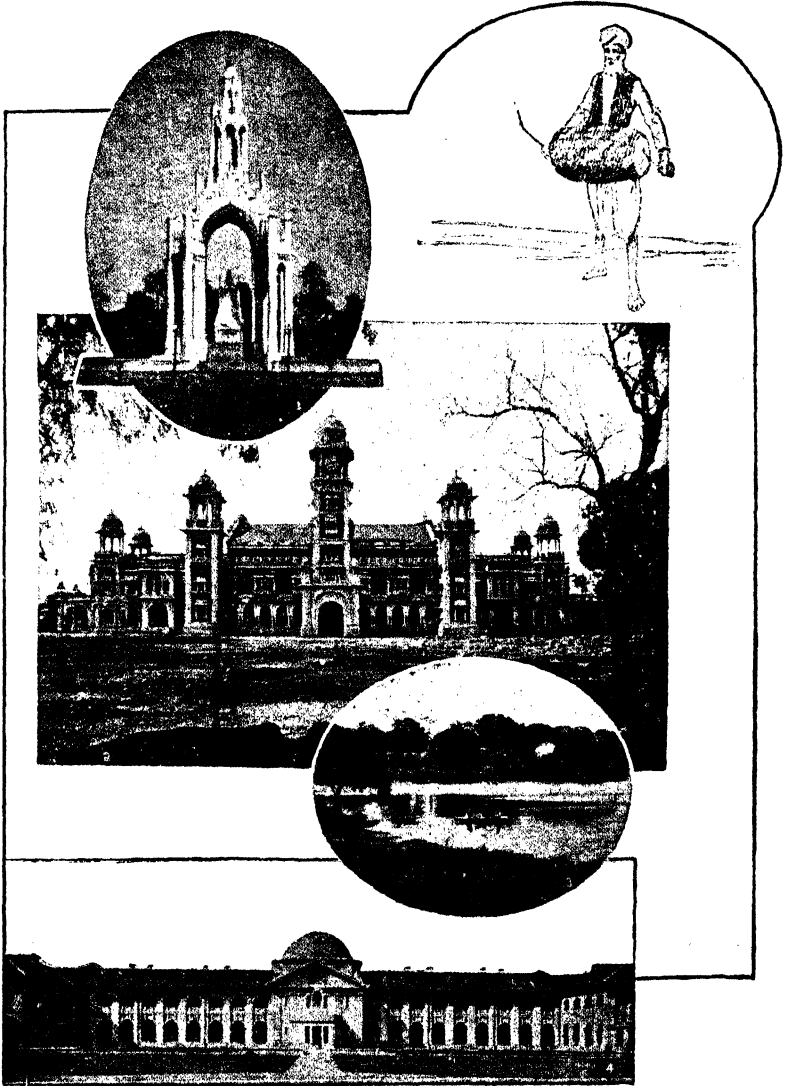
१। विक्टोरिया स्मृति अट्टालिका। २। विश्वविद्यालय।
३। मैकफरसन झील। ४। हाईकोर्ट।

बृहत कमरेके चारों ओर अटारियाँ हैं। अटारियोंके खम्भे दो दो एक साथ जुड़े हुए हैं।

इस स्थानमें सम्राट अशोकके राज्यकालका निर्मित एक ३५ फीट ऊँचा लाट है, जिस पर अशोकका अनुशासन खुदा हुआ है। सम्राट समुद्रगुप्तकी विजयवार्त्ता भी आगे उसी लाट पर खोदी गयी।

किलेके अन्दर अक्षय बट है, जिस पर हिन्दुओंका चित्त आकर्षित होता है। सन् ईसवीकी सातवीं सदीमें चीनदेशी परिव्राजकने

गङ्गा यमुना सङ्गम, प्रयाग।

प्रयागमें अक्षय वट देखा था। परिव्राजकके लेखसे विदित होता है कि नगर के मध्यस्थलमें हिन्दुओंका मन्दिर था और उसके सामने अक्षयवट था। वह नगर अब अकबर बादशाहके उक्त दुर्गके नीचे दबा हुआ है। इसलिये दुर्गके नीचे सीढ़ियोंसे उतर कर दीयेकी रोशनीसे अक्षयवटके दर्शन कराये जाते हैं। जिस वृक्षके दर्शन कराये जाते हैं, वह अब जीवित नहीं है। किसी वृक्षकी सूखी हुई मोटी पेड़ी ही अक्षयवट बतलायी जाती है। जहाँ इस "अक्षयवट" के दर्शन कराये जाते हैं, उस स्थान का नाम "पातालपुरी" बतलाया जाता है।

अयोध्या—लखनऊ।

"हम भागी कली काल में, बने रेल सब काज।
दूर देश की यात्रा, सरल भई है आज॥"

मोगलसराय स्टेशन से लखनऊ जाने की राहमें अयोध्या आती है। अयोध्या रामायणका मुख्य आधार है—अयोध्या रामचन्द्रकी बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्थाकी लीलास्थली है। अयोध्या सरयु नदीके ऊपर अवस्थित है। फैजाबादसे जो पथ अयोध्या गया है, उसीकी बगलमें रामचन्द्रके जन्मस्थानका मन्दिर है। मन्दिरकी चौखट चाँदीकी है। मन्दिरके भीतर सीता और रामकी मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। रामचन्द्रके अङ्गभूषणरूप एक मणिकी शोभा उज्वल रही है। इस स्थान को लोग साधारणतः हनुमानगढ़ कहते हैं, इसके उत्तर—पश्चिम ओर कनकभवन वा सोनागढ़ नामक स्थान है। यही सीतारामकी सवर्ण मुकुटोंसे सजी हुई मूर्त्तियां बिराज रही हैं। इसीलिये उस मन्दिरका नाम भी कनकभवन है।

जन्मस्थान कहलानेवाले स्थानमें रामचन्द्रने जन्म लिया था। राम जन्मका प्राचीन मन्दिर ध्वंस होने पर उसके स्थानमें जो नवीन मन्दिर निर्मित हुआ था, उसको भारतके प्रथम मोगल बादशाह बाबरने मसजिदमें बदल लिया था। उस भवनमें प्राचीन मन्दिरके बारह खम्भे हैं, जो कसौटी के हैं।

जन्मस्थानके बाद स्वर्गद्वार वा रामघाट है। यहाँ रामचन्द्र जीकी शव देहका दाह किया गया था। लक्ष्मण घाट लक्ष्मणके स्नान करनेके स्थान पर निर्मित हुआ है। तदनन्तर मणिपर्वत, कुबेर पर्वत, सुग्रीव पर्वत आदि हैं।

एक समय अयोध्यामें भी बौद्धोंका प्रभाव फैला था। उसके बाद वहाँ वन हो गया था। एक हिन्दू नरेशने सन् ईसवीकी दसवीं सदीमें वनको कटवाकर अयोध्याका उद्धार किया था।

अबतक अयोध्यामें कई सौ देवालय हैं, जिनमेंसे कई विष्णुके मन्दिर हैं और कई शिवके।

अजोध्या ।
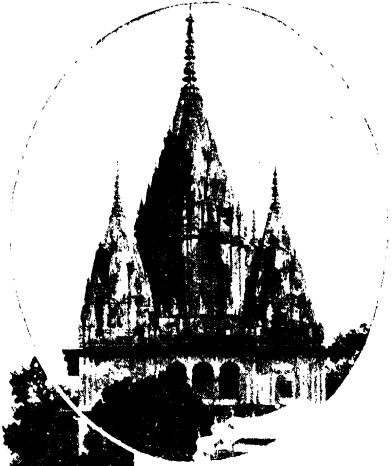
श्रीराम चन्द्रका जन्मस्थान ।

कनक भवन ।
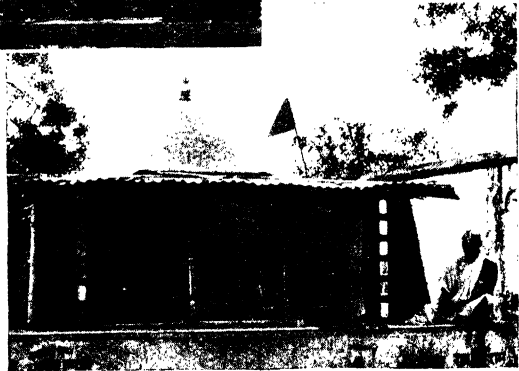
हनुमानजी का मन्दिर ।

रामचन्द्रकी लिलास्थली अयोध्यामें आजतक रामलीलाके उत्सव अवश्यही बड़े समारोहसे मनाये जाते हैं।

अयोध्यासे थोड़ी दूर पर फैजाबाद देखने योग्य है। वहाँ अवध के नवाबोंकी राजधानी थी और वहीं अवधको बेगमोंके रहते समय उनपर जुल्म करनेके अभियोग से उन दिनों के गवर्नर वारन हेस्टिंगसको इङ्गलैण्ड में पार्लिमेण्टके आगे अभियुक्त होना पड़ा था। जिन दो बेगमोंने उस अभियोगको पहुँचाया था, उनमें से एकका मोकबरा उस प्रान्तकी अट्टालिकाओंमें ऊँची नामवरी रखता है।
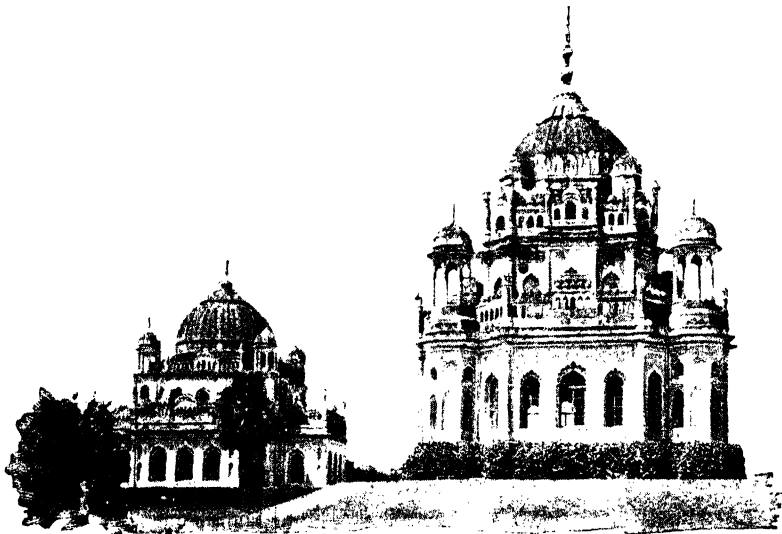
लखनऊ में नवाबों के मोकबरे।

लखनऊ गोमतीके किनारे अवस्थित है। किम्बदन्ती यह है, कि जहाँ इन दिनोंका लखनऊ नगर है, वहाँ रामचन्द्रके परम भक्त अनुज लक्ष्मण ने अपनी पुरी का निर्माण किया था। किन्तु वर्तमान लखनऊ नगर अधिक दिनोंका नहीं है। उसको अवधके नवाबोंने बसाया था। उन नवाबोंमेंसे इकी राजधानी फैजाबादमें थी। नवाब आसिफ-उद्दौला अपनी राजधानी वहीं से लखनऊ उठा लाये थे। आसिफ-उद्दौलाने ही दौलतखाना महल, इमामबाड़ा और मसजिद, रूमी दरवाजा, खुरशेद मञ्जिल आदि बनवाये थे। मच्छी भवनका निर्माण उनके पहिले कराया गया था। नवाब सादत अलीने

मोतीमहल और दिलकुशा तथा लाल बारादरी और रसोडन्नी भवन बनवाये थे।

उस घरानेके अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह ने कैसरबागकी अट्टालिकाओंका निर्माण कराया था। विलासपुरी बनानेमें वाजिद अली शाहने ८० लाख रुपये खर्च किये थे। उसमें वे ३०० रूपवतियोंको लेकर विलासमें डुबे रहते थे। राज्य का शासन अच्छी तरह न करने की बदनामीसे अङ्गरेजोंने वाजिद अली शाहका राज्यच्युत कर कलकत्ते के उप नगर मटियाबुर्जमें नजरबन्द रखा था।
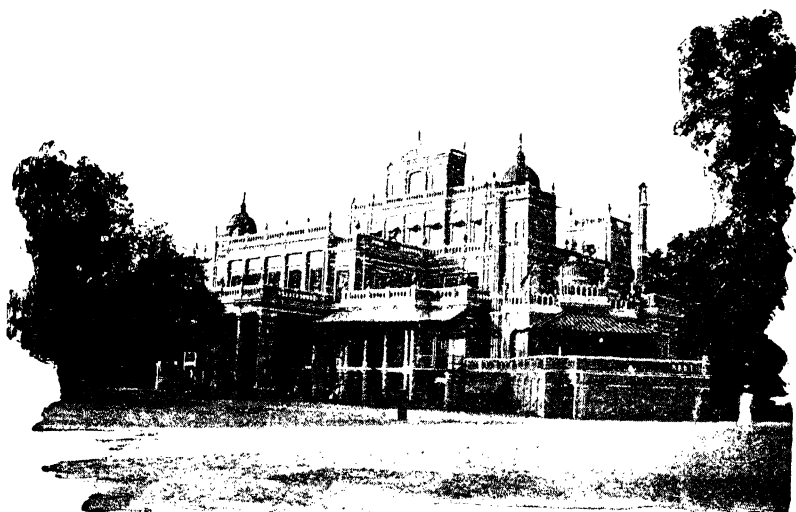
शैशन-उद्दौलाकी अदालत।

सन् १७८४ ई०में अकाल से घबड़ायी हुई प्रजाकी आजीविकाका उपाय करनेके लिये नवाब आसिफ--उद्दौलाने इमामबाड़ेका निर्माण कराया।

नवाब नसर-उद्दीन ने अपनी बेगमों के लिये छत मञ्जिल नामक राजभवन बनाया। उसके ऊपर एक छत है, जिससे उसका वह नाम पड़ा।

विलासपरायण नवाबोंकी राजधानी होनेसे लखनऊ अपने थोड़े दिनों की सोभाग्यमें ही सौसे अधिक सुन्दर सुन्दर राज—अट्टालिकाओं से सज गया। सब अट्टालिकाओं का वर्णन करना सम्भव नहीं। विलास

प्रवाहसे अवधका नवाबी घराना बहकर लापता हो गया, केवल उस तट पर बनी हुई रम्य अटारियाँ मनुष्यके वैसे कामके निश्चित परिणामकी खेदजनक गवाही दे रही हैं। उन अट्टालिकाओंके सौन्दर्य्यकी नामवरीसे खिँचकर
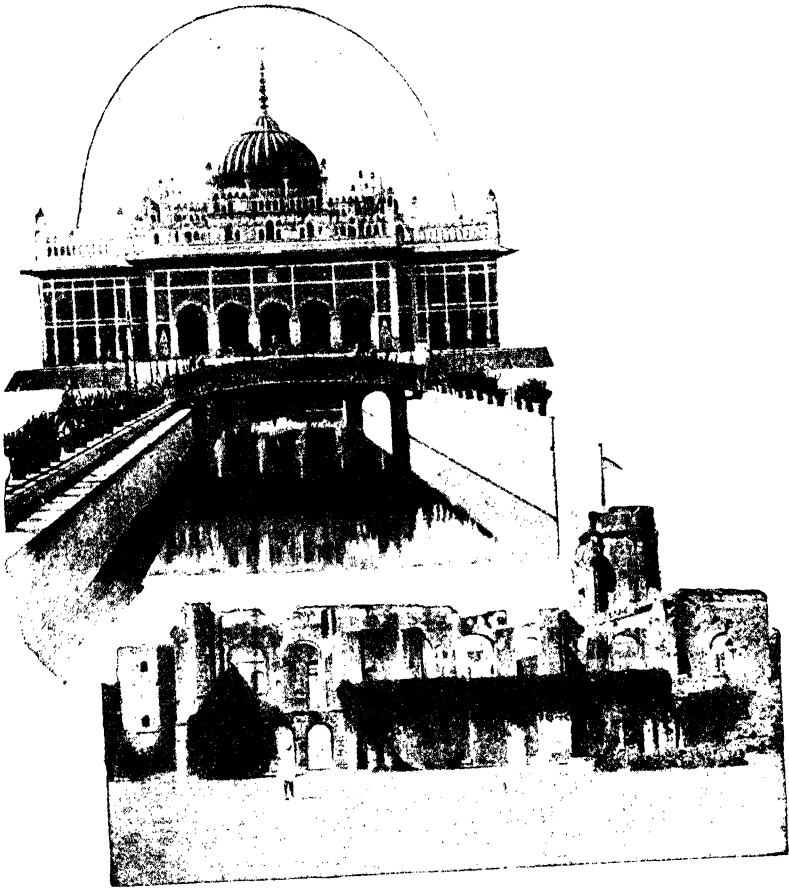
१। मच्छीभवन—लखनऊ। २। बेलीगाड—लखनऊ।

अबतक उनको देखनेके लिये अनेकानेक मनुष्य लखनऊ जाते हैं। नवाबोंकी राजधानी होनेसे लखनऊ एक समय नाना प्रकार शिल्पकुशलताका केन्द्र हो

गया था। अब उन शिल्पोंकी अवनति हुई है। तिस पर भी अभी तक लखनऊ शहरकी मिट्टकी पुतलियाँ, छोटें आदि भारतमें बेजोड़ हैं।

सिपाहियोंके गदरके दिनों लखनऊ बड़ाही चमक दमक कर नामवर हो उठा था। स्थान स्थानके विद्रोही सिपाहियोंने वहाँ इकट्ठे होकर अङ्गरेजों पर आक्रमण किया था। उन दिनों सर हेनरी लारेंस लखनऊके रेसीडण्ट थे। उनके समान न्यायनिष्ठ, साहसी राजकर्मचारी कम मिलते हैं। उन्होंने अपार साहस और अनुपम कौशलके साथ उस प्रान्तके अङ्गरेज नरनारियोंको लखनऊ में शरण देकर उनकी जिवनरक्षा की थी। गदरके दिनों लखनऊ शहरमें अङ्गरेजोंका इतिहास उनके पराक्रम का—उनकी मृत्युजय करनेवाली कीर्त्तिका द्योतक है। सर हेनरी लारेन्सकी उस विपत्तिके समय मृत्यु हो गयी। समाधि भूमिमें उनकी ब्रिगेडियर जनरल नीलकी तथा लगभग दो हजार अङ्गरेज नरनारियोंकी समाधियाँ हैं। लारेन्सकी समाधि पर ये वाक्य खुदे हुए हैं—

"इस स्थानमें हेनरी लारेन्सकी समाधि हुई।
उन्होंने अपने कर्त्तव्यको पालनेका प्रयत्न किया।
ईश्वर उनकी आत्माका कल्याण करें।
उनकी समाधि परके वाक्य इतनी ही सादगीके हैं।

दिल्लीमें शाहजहाँ बादशाहकी प्यारी पुत्री जहानआराकी समाधि भी छोटिसी है। वह मिट्टीसे छिपा दी गयी है, जिस पर घास जमाकर सिरहानेके पत्थर पर निम्न आशयकी कविता खोदी गयी है,—

न कबरको करो मेरी मल्मसे अधिक मसृण।
शाहजादी जहांनारा दीनात्मा साज तृण॥

सिपाहियोंके गदरके समय लखनऊ जिन निरपराध अङ्गरेज नरनारियोंके रक्तसे लाल हो गया था, उनकी आत्माओंको तृप्त करनेका तपण हो गया है। अब उसउत्पातकी स्मृतिके ऊपर कालने विस्मृतिका पर्दा डाल दिया है। वह सादी समाधि उस स्मृतिको लौटा लाती है सही, पर छातीमें बहुत नहीं गड़ती।

युक्त प्रान्त की दूसरी राजधानी के रूपमें लखनऊ अब इलाहाबादकी टक्करका हो गया है।

लखनऊ अबतक व्यापारका एक प्रसिद्ध केन्द्र है।

आगरा।

आगरा पुराना शहर है। किन्तु मुसलमानोंके आने और आक्रमण करनेके पूर्वका आगरा सम्बन्धी इतिहास ऐसा अन्धकाराच्छन्न है, कि जाननेका कोई उपाय नहीं। मुसलमानोंमेंसे लोदीवंशवाले ही प्रथम आगरेमें आ बसे थे।

सिकन्दर लोदी सन् १५१५ ई०में आगरेमें मृत्यु कवलित हुए। सिकन्द्राके समीप बारादरी प्रासाद उन्होंने बनाया था। बाबर ने यहाँ यमुनाके पूर्व तटमें बाग और प्रासाद का निर्माण कराया था सही, पर उनका चिन्ह तक अब नहीं रहा है। बाबर सन् १५६८ ई० में फतहपुर-सिकरीमें जानेके पूर्वतक आगरे में थे। सन् १६०५ ई०में उनकी आगरे में मृत्यु हुई। शाहजहाँने ५ वर्ष आगरेमें वसकर अकबरके दुर्ग और राजप्रासादकी मरम्मत, हेरफेर और वृद्धि की तथा भारत की सर्वोत्तम अट्टालिका ताजमहलका निर्माण कराया। तदनन्तर उन्होंने दिल्लीकी रचना की। किन्तु राजधानीको पूरी तौर पर दिल्लीमें उठा ले जानेके पहिले ही वे अपने पुत्र औरङ्गजेबसे आगरे में ही कैद किये गये। आगरेमें ही उनका देहान्त हो गया। उसी समयसे आगरे की अवनति आरम्भ हुई। जाट, मराठे, मुसलमान, जिनसे बना उन्होंने ही आगरेको हस्तगत किया। अन्तमें सन् १८०३ ई०में आगरा अङ्गरेजोंके अधिकारमें आया।

आगरा सौन्दर्यपुरी है। आगरे को उतना सुन्दर शाहजहाँने ही बनाया। शाहजहाँके दिनोंकी अट्टालिकाओंमें निम्नलिखित प्रसिद्ध हैं,—

(१) ताजमहल।

(२) जामा मसजिद।

(३) दुर्गाभ्यन्तरकी मोती मसजिद, दीवाने-आम, दीवाने-खास, खासमहल।

अकबरने सन् १५६६ ई०में सलीम शाहके दुर्गका पुनर्गठन आरम्भ किया। दुर्ग बड़े भारी आकारका है। दुर्गके अन्दर ही मसजिद और प्रासाद हैं। दिल्ली दरवाजेसे आगे बढ़ खाई को पार करनेके अनन्तर हाथीपुलसे निकलना पड़ता है। हाथीपुलसे मोती मसजिदमें जाना होता है। यदि कहा जाये, कि इस मसजिद का सौन्दर्य्य अतुलनयी है, तो अतिशयोक्ति नहीं होती। मसजिदके तीन

गुम्बद जिस तरहसे स्थापित किये गये हैं, उससे उसकी अपार शोभा खिल उठी है। मसजिदके कारनिस पर सङ्गमरमरके साथ संगमूसे का जैसा जोड़ खपाया गया है, वह रमणीकता भी उल्लेख योग्य है।

मीनाबाजारके बीचसे दीवाने-आममें जाना होता है। मीनाबाजार पुराना है। उसमें वणिक मूल्यवान सामग्रियोंको सजाकर बैठे रहते और दरबारियों की दृष्टि आकर्षित कर लेते थे। दीवानेआमके विशाल कमरेमें खम्भोंकी तीन कतारोंपर छत है। कमरा लाल रङ्गके बलुए पत्थरका है। पत्थर पर गारे के साथ चूनेके मेलका पालिस खूब चमकाया गया है। दिल्लीकी तरह आगरेमें भी इस कमरेकी एक बगलमें बादशाहका सिंहासन विराजता था। उसके पीछेसे जनानेमें जानेका पथ निर्दिष्ट था। सिंहासनके बाँयीं और दाँयीं ओर के कमरे पत्थरकी जालीदार खिड़कियोंके हैं। इन्हीं खिड़कियों से बेगमें दरबार देखती थीं। दीवानेआमके सामने एक विशाल हौज एकही पत्थरको खोद कर बनाया गया है, जिसके भीतर और बाहर सोपानावली है। यह जहाँगीर हौज कहलाता है।

दीवानेआमसे जनानेमें जाते समय दूसरे मीनाबाजारके बीचसे जाना होता था। इस बाजारकी चीजोंको बेगमें खरीदती थीं। वे प्रासादकी अटारी पर बैठकर चीजवस्तुओंको देखतीं और पसन्द करती थीं। समय समय पर इस मीनाबाजारमें मेला लगता था। उस समय रूपवतियोंकी रूपछटा चारों ओरसे उछलती थी। बेचनेवालियाँ खरिदनेवालियोंकी तरह रूपवती होनेके कारणरूप ही रूपका हाट लग जाता था। रूपवतीसे रूपवती बड़ी धूमसे भाव मोलाई करनेमें डट जाती थी। कभी कभी बादशाह भी उस धूममें भिड़ जाते थे। मानों दो पैसे अधिक देनेसे सम्पत्ति लुट जायेगी, इस तरहकी कैफियत होती रहती थी।

इसके बाद चित्तौड़ विजयके स्मृतिचिन्ह रूपी चित्तौड़ दरवाजेसे मच्छी भवनमें जाना होता है। यह पहिले बागीचा था, जिसमें कहीं कहीं फव्वारे और नयन मोहनेवाली सुन्दर जीवित मच्छियोंके जलभरे काँचपात्र थे। इन सामग्रियोंको लूटकर जाटोंने डीगके राजप्रासादमें रखनेके लिये सूरजमलके हवाले किया था। और गवर्नर जनरल लार्ड बेण्टिङ्कने भी इसके तथा अन्य अंशोंके जालीदार सङ्गमरमर खण्डोंको लेकर नीलाममें बेच दिया था। केवल समुचित मूल्य न मिलनेसे ही ताजमहल बिक जानेसे बच गया।

नाज़ीना मसजिद औरङ्गजेबने बनायी। उन्होंने बेगमोंके लिये इसको बनानेमें मोती मसजिदकी नकल उतारी।

आगरेका दीवानखास दिल्लीके दीवानखासहीकी तरह सुन्दर है। इसमें नानावर्णोंके पत्थरोंको जड़कर जो फलोंकी रचना की गयी है, वह असामान्य
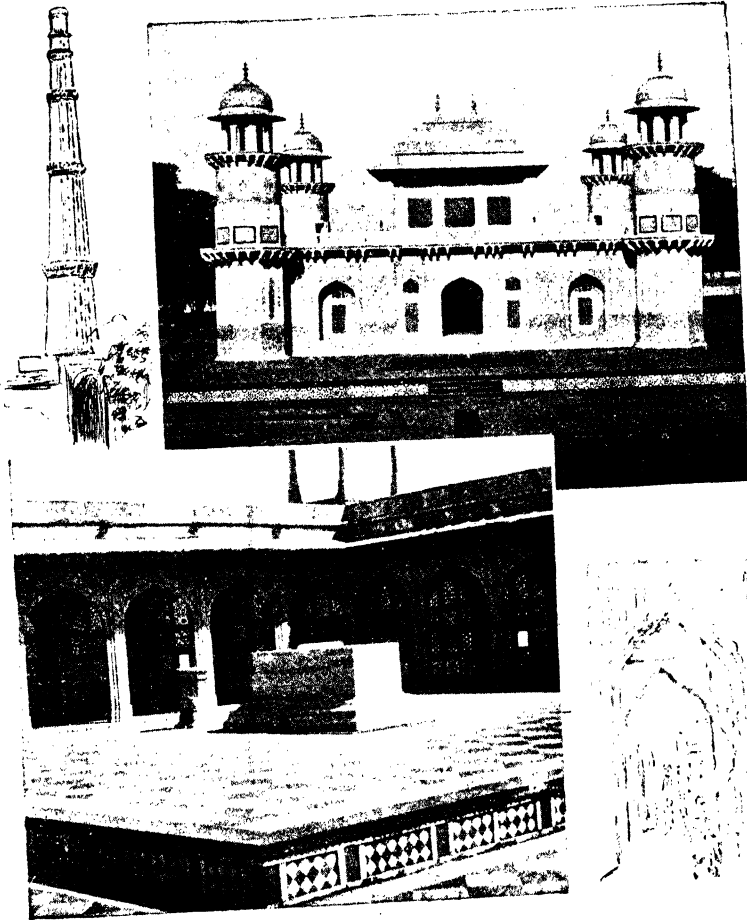
१। इतमाद-उद्दौला। २। अकबरकी समाधि—सिकन्द्रा।

शिल्पकुशलताके द्योतक है। दीवानखासके सामने चबूतरे पर दो सिंहासन बिछे हुए हैं। वे दोनों जहाङ्गीरके कहलाते हैं। इनके बाद ही हम्माम है।

दीवानिखासके पिछवाड़े जो फाटक है, उससे नदिकी ओरके दोमञ्जिले गृहमें जाना होता है, जिसका नाम ससान बुर्ज है। यह गृह नूरजहाँ बेगम का था। आगे ममताजमहल इसी गृहमें रहती थीं और इसी गृहमें कैद रहकर ताजमहलको देखते देखते सम्राट शाहजहाँका देहान्त हो गया था। जो पहिले हिन्दुस्थानमें सम्राट थे, उनके पास उस कैदसे महामुक्ति के राज्यमें जाते समय शाहजादी जहाँनाराको छोड़कर और कोई नहीं था। उस समय दिवसान्तका सूर्य्य ताजमहलके सुफेद कलेवरको किरणावली से मानों नहला रहा था। बादशाह प्रियतमाकी उस समाधिको एकटक निरीक्षण करते थे। धीरे धीरे दिनका आलोक अन्धकारके ग्रासमें घुसकर अदृश्य हो गया। बादशाह ने अपने अपराधोंके लिये विधातासे क्षमा माँगकर तथा कई वाक्योंसे पुत्री को ढाड़स देकर अन्तिम सांसको छोड़ा। उनके भी जीवनका आलोक बुझ गया।

खास महल जनानेके एक भागमें है। उसके सामने अङ्गूरी बाग पूर्वकाल के मोगलाई नमूनेका है।

जहांगिरी महलकी विशेषता उधर आँखको फेरते ही देखनेमें आती है।

जुमा मसजिद दिल्लीके नमूनेकी होने पर भी उसके सौन्दर्य्यके सामने नहीं ठहर सकती।

ग्रीष्मके दिवसोंमें ठण्डकका सुख लूटनेके लिये प्रासाद कई तहखाने हैं।

स्निग्धनीली जलधाराकी यमुनाके तट पर सङ्गमरमरकी धौली अट्टालिका ताजमहलका जोड़ा इस जगतमें नहीं। शाहजहाँने नूरजहाँके भाई आसफ खाँ की बेटी नूरमहलसे बिवाह किया था। उस समय नूरमहल १८ वर्षकी थी और शाहजहाँ २१ वर्षके। स्वामीके साथ युद्धमें जा बुरहानपुरमें नूरमहलकी मृत्यु हुई। यह नूरमहल ही ममताजमहल नामसे प्रसिद्ध हुई। शोकार्त्त शाहजहाँकी आज्ञासे प्रियतमाकी लाश आगरेमें लायी गयी। ममताजमहल की स्मृतिको स्थिर रखनेके लिये शाहजहाँने चार करोड़ रुपया खर्चकर ताजमहल बनाया। बीस हजार मनुष्योंने १७ वर्षों के परिश्रमसे इसका निर्माण किया। ताजमहल वास्तवमें ही प्रेमका मर्म्मररचित स्वप्न है।

शाहजहाँने जब इस अट्टालिकाके निर्माणकी कल्पना की, तो उनका सङ्कल्प इसको सर्वाङ्गसुन्दर बनानेका हुआ। दिल्ली, बगदाद, मुलतान, समरकन्द, सिराज—सभी स्थानोंसे शिल्पकुशल मनुष्य बुलाये गये। जयपुर, पञ्जाब, चीन,

आगरा—फतेहपुर सिकरी।
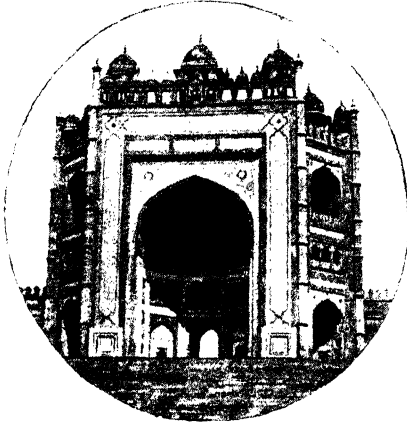
बुलन्द दरवाजा।

हाथी पोल।
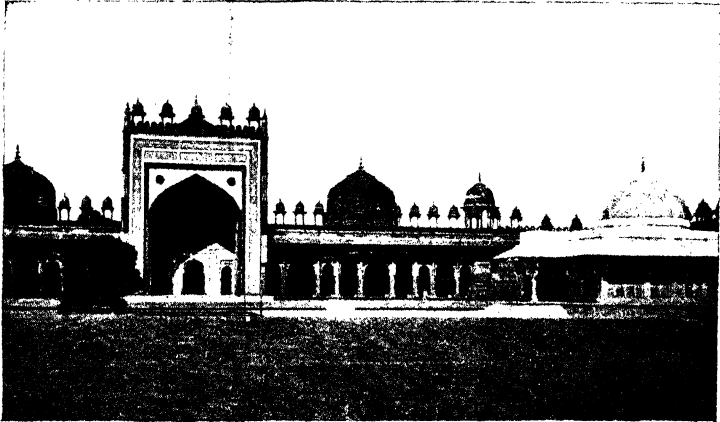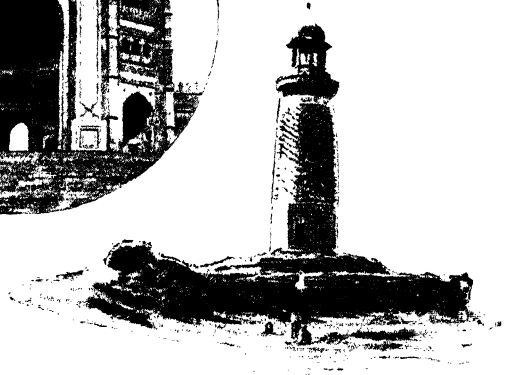
समाधी—सलीम चिश्ती।

तिब्बत, सिंहल, अरब, पन्ना, इरान—नानादेशों से सामग्रियोंका संग्रह किया गया। उन सामग्रियोंमें सुवर्ण, रजत, मणिमाणिक्योंकी कमी नहीं थी। कबर मूल्यवान मोतियोंकी ढक्कनसे आच्छादित रखी जाती थी। वे सभी मूल्यवान वस्तुएँ लूट ली गयी हैं। केवल बाकी बचा है, ताजमहल—शाहजहाँके प्रेम का साक्षी—भारतकी शिल्पकलाका नमुना। ताजमहलकी कविता अनुभवका विषय है—वर्णनसे वह नहीं समझायी जा सकती। ताजमहल केवल अट्टालिका ही नहीं—वह स्वप्न भी नहीं, पर है वह हृदयके भावका विकास।

ताजमहलको एकही बार देखनेसे उसका स्वरूप ध्यानमें नहीं आता बारबार देखनेसे ही वह इच्छा पूरी हो सकती है। विशेषतः उज्वल चाँदनीमें उसको बिना देखे उसके माधुर्य्यकी वास्तविक छवि मानों हृदयमें नहीं अङ्कित होती। ताजमहलको देखनेके लिये युरोप और अमेरिकासे भी अनेक पर्य्यटक भारतमें आते हैं।

ताजके प्रवेशपथका तोरण भी ताजके ही उपयुक्त है।

यमुनाके दूसरे पार इतमाद-उद्दौलाकी समाधि है। इतमाद-उद्दौला नूरजहाँ बेगमके पिता थे। बेटीने बापकी समाधिको यह अट्टालिका बनायी। इसको देखने से यह ध्यानमें आ जाता है, कि अकबरके दिनों अट्टालिका बनानेके शिल्पकी जैसी परिपाटी थी, वह शाहजहाँके दिनों बदली गयी थी। जहाँगीरी महल और ताजके बनाये जानेके मध्यवर्त्ती कालमें इतमाद-उद्दौला की समाधि अट्टालिका बनायी गयी थी।

उस समाधिके समीप चीनीका रौजा और रामबाग है। चीनीका रौजा वा चीनासमाधि शायद अफजल खाँ की समाधि होगी। रामबाग के साथ बाबरकी स्मृति जटित है। बाबरकी मृत्युके बाद उनका शव समाधि के लिये काबुल भेजा गया था। काबुल भेजा जानेके पहिले वह रामबागमें रखा गया था। उस बागकी रचना नूरजहाँने की थी। उस बागके समीप और एक बाग था, जो बाबरकी बेटी शहजादी जोहराका था।

सिकन्द्रा आगरेसे ५ मील दूर है। वहाँ जानेकी राहमें अनेक पुराने भवन और भवनोंके भग्नावशेष हैं। सिकन्द्रामें अकबरकी समाधि है। अकबरने आपही उस समाधि अट्टालिकाकी कल्पना कर मृत्यु से पूर्व उसका निर्माण आरम्भ कर दिया था। उस अधूरे निर्माणकी पूर्णता उनके बाद जहाँगीरको करनी पड़ी थी। जहाँगीरने उस अट्टालिकाकी कल्पनाके सम्बन्धमें भी कुछ फेरफार किया था। मोगलोंकी साधारण समाधि अट्टालिकाओंसे इसका बहुत भेद पाया जाता है। इसकी कल्पनाका हिन्दु शिल्पसे मेल है। बौद्ध बिहार में

जैसे बहुतेरे मञ्जिलवाले गृह होते हैं, वैसी ही यह अट्टालिका है। फतहपुर सिकरीमें अकबरने आप जो पांच मञ्जिल तक निर्माण कराया, वह इसी नमूने का है।

फतहपुर सिकरी एक समय राजधानी थी, पर पीछे त्याग दी गयी। स्मृति उसके घर घर खिलखिला कर हँसती हुई फिर रही है। पूर्वके छोटेसे गाँवड़ेसे वह राजधानीका ऐस्वर्य्यशाली रूप पागयी थी। उस गाँवड़ेमें शेख सलीम चिश्ती नामके एक मुसलमान पीर रहते थे। सन् १५६४ ई०में युद्धसे लौटते समय अकबरने पीरके स्थानके समीप छावनी डाली थी। उसके थोड़े दिन पहिले अकबरकी रजापुतनी बेगमकी सभी सन्तानोंकी मृत्यु हो गई थी। वे अपने राज्यके उत्तराधिकारी पानेके सोचसे व्याकुल थे। पीरकी दुआसे अकबरके पुत्र जन्मा। जहाँगीर वही पुत्र थे। इस स्थानके पीरके बरदानसे पुत्र पाकर अकबरने इसी स्थानमें राजधानी बसायी। छोटासा गाँवड़ा मोगल बादशाहकी राजधानीका भव्य रूप पा गया। उसका सौन्दर्य्य असामान्य हो गया। किन्तु १७ वर्ष बाद अकबर फतहपुर सिकरीको छोड़कर आगरेमें जा बसे। किसी किसीका कहना यह है कि वहाँ जलकी कमी होनेसे अकबर नहीं रह सके। दूसरे बतलाते हैं कि राजधानीके कोलाहलसे पीर घबड़ा उठे और वहाँसे चल देने लगे. जिससे अकबर बोले आपका दास ही यहाँसे चल देता है। बस ६ मीलोंके विस्तारका नगर बातकी बातमें त्याग दिया गया। नगरके तीन ओर ऊँची दीवार बनायी गयी थी। चौथी ओर एक कृत्रिम झील थी। आज दिन वह सूखकर एक बार ही निर्जल हो गयी है। नगरसे निकलनेके ९ फाटक घेरेकी दीवारमें बनाये गये थे।

अब उस त्यागे हुए नगरमें लोग मुख्यत: आगरा दरवाजे से प्रवेश करते हैं। उसके ऊपर नहबतखाना है। उससे कुछही दूर पर टँकसालका भवन त्यागा हुआ है।

वहाँका महले-खास अकबरका प्रासाद था। उस प्रासादमें हिन्दू पुरोहित के लिये भी स्थान था। उसके बाद ही तुर्की सुलताना का प्रासाद उल्लेख योग्य है। वह सुलताना कौन थी, यह अब जाननेका उपाय नहीं रहा। पर इसमें सन्देह नहीं, कि वह अकबरकी बड़ी प्यारी थी।

प्रासाद के चबूतरे पर एक बगलमें एक पचीसी खेलनेका घर है। यहाँ अकबरशाह बेगमोंके साथ पचीसी खेलते थे। लौण्डियाँ खेलकी गोटियोंके रूप में काम में लायी जाती थीं।

फतेहपुर-सिकरीका दिवानि-खास प्रथम देखनेसे दोमञ्जिला जान पड़ता है। किन्तु वह दो-मञ्जिला नहीं है। बीचमें एक बड़ा भारी खम्भा है, जिसका सौन्दर्य्य अनुपम है। उसी खम्भे पर बादशाहका सिंहासन रखा जाता था। वह खम्भा समुची धरतीके स्तम्भ का प्रतीक है।

इसके बाद आँखमिचौली और दिवानि-आम है।

फतेहपुर-सिकरीमें मरीयमकी कोठी है। इसमें पत्थर पर खोदी हुई विष्णु की मूर्त्ति को देखने से जान पड़ता है, कि यह बादशाहकी राजपुतनी बेगम—
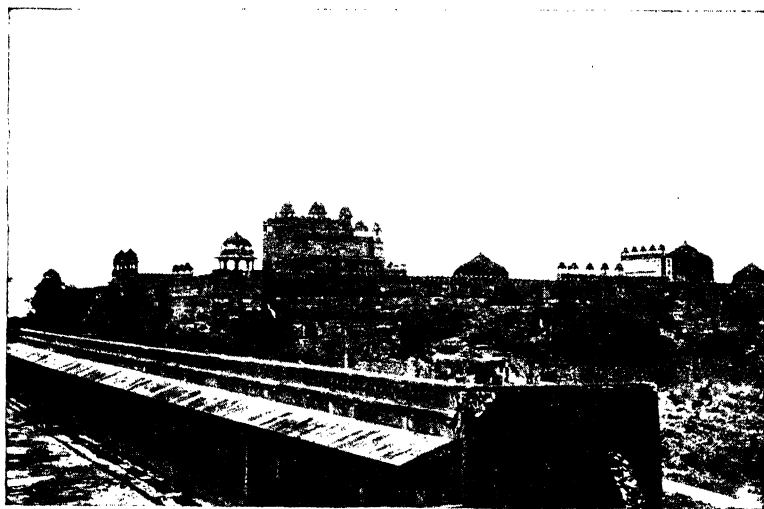
आगरा किला

जहाँगीर की माता के रहने का स्थान था। किन्तु प्रासादका जो भाग जोधाबाई का कहलाता है, वह भी जहाँगीर की माताके रहनेका स्थान था। इसमें भी राजपुतानेका हिन्दू शिल्प-विद्याके नमूने हैं।

प्रासादकी कतारोंमें उस गृहकी सजावट और सुन्दरता अपार है, जो बीरबल का कहलाता है। यह अन्दरके भागमें है। इसलिये यह वास्तवमें बीरबलका नहीं माना जासकता। बहुत ही सम्भव है, कि यह अकबरकी दूसरी बेगमों में से और किसीका महल रहा होगा।

बीरबल के गृहके पाससे एक पथ नीकली झीलकी ओर गया है। यह पथ हाथीपुल है। इसके दोनों बगलोंमें दो पत्थरके हाथी थे।

फतहपुर-सिकरीमें भी जुमा मसजिद है। यह तो होना ही चाहिये। इसके सौन्दर्य्य, माधुर्य्य और बड़ाई असाधारण हैं। इस मसजिदमें अकबर अकसर मुल्लाओंके साथ मजहबी बहस करते थे और इसकी वेदीपरसे उन्होंने अपने मजहबी अभिमतके प्रचारका निष्फल प्रयास किया था।

अकबर जिस राहसे मसजिदमें जाते थे, उसके सिवा दूसरा तोरण बुलन्द दरवाजा कहलाता है। यह विशाल तोरण वाला फाटक दक्षिण भारतमें अकबरकी जयको प्रचारित करनेके लिये बनाया गया था। मसजिदसे मिलान करने पर यह तोरण वाला फाटक बहुत बड़ा निकलता है।

मथुरा और वृन्दावन।

हवड़े से जो ट्रेन आजकल मथुरा होकर दिल्ली जाती है, उसीपर मथुरा जानेका अच्छा सुभीता होता है। क्योंकि उसपर चढ़नेसे मथुरा जानेमें गाड़ीको बदलनेकी आवश्यकता नहीं होती।

मथुरा इतिहासमें प्रसिद्ध और पुराणोंमें प्रख्यात प्राचीन नगर है। वह नगर ब्रजमंडलके अन्तगत है। राधाकृष्णकी जिस प्रेमलीलाने भारत भरके साहित्योंको सम्पन्न किया है, जिसकी प्रतिध्वनि भारत के घर घर गूंज रही है, उस प्रेमलीलाका स्थल मथुरा ही है। मथुरा यमुनाके तट पर अवस्थित है और उसके घाटकी सुन्दरता असाधारण है। यमुना तटका पथ पत्थरसे मढ़ा हुआ है। उस पथसे यमुना के घाटोंकी सीढ़ियाँ जलमें उतरी हैं। उन घाटोंमें चबूतरे और चाँदनियाँ हैं। मथुराके घाटोंमें विश्रामघाट विशेष प्रसिद्ध है। इसघाट पर सन्ध्याकी आरतीको देखनेके लिये हजारों मनुष्योंकी भीड़ लगती है। वह आरती देखने ही योग्य होती है। काशीमें विश्वेश्वर की आरती मन्दिरके भीतर होती है—उसमें गम्भीरता अवश्य ही है। किन्तु खुले हुए आकाशके नीचे यमुनाके जलके सामने यमुनाके तट परकी आरती सन्ध्याके समय अतुलनीय मनोहर होती है। आरती के समय स्थल पर अनेक गायें और वानर तथा जल पर दलके दल कछुए इकट्ठे होते हैं और उनको खाद्यसामग्री बाँट दी जाती है। यमुनाके जल से अनगिनें कछुए सूँड़ निकाल निकाल टुकुर टुकुर ताकते रहते हैं। विश्रामघाटके समीप एक पत्थरका स्तम्भ है,

जो सतीबुर्ज कहलाता है। किम्बदन्ती है, कि कंस जब श्रीकृष्णके हाथ से मारा गया, तो उसकी रानियोंने वैधव्यके क्लेशोंसे बचनेके लिये यहीं चितारोहण पूर्वक शरीर भस्मीभूत कर दिये थे। मथुरामें केशवका मन्दिर अतिशय प्रख्यात था। सम्राट औरङ्गजेबकी आज्ञासे उसको तोड़कर उसकी जगह लाल पत्थरकी मसजिद बनायी गयी थी। अब यह पता लगा है, कि केशवका मन्दिर भी पुराने बौद्धविहार के ध्वंसावशेष पर निर्मित किया गया था। मथुरामें बौद्धोंके दिनों के बहुतेरे चिन्ह देखे जाते हैं।

मथुरा बौद्धयुगमें भी प्रसिद्ध हुई थी। मुसलमानोंने बारबार उस पर आक्रमण कर उसकी प्रसिद्धिके अनेकानेक चिन्ह बिगाड़ दिये। इन दिनों मिट्टीके नीचेसे उन चिन्होंके भग्नावशेष खोद खोद कर निकाले जा रहे हैं।

आजकल मथुरामें घाटोंके उपरान्त जो और और मुख्य दर्शनीय स्थान हैं, वे ये हैं:-

यमुनाबागकी छतरी, होली दरवाजा तोरण, राधाकृष्णका मन्दिर, विजय गोविन्दका मन्दिर, मदनमोहनका मन्दिर, दीर्घ विष्णु मन्दिर, गोवर्धन घाट का मन्दिर, विहारीजीका मन्दिर मोहनजीका मन्दिर। मथुरासे बृन्दावन थोड़ी दूर पर है। छोटी (लाइट) रेल पर अथवा घोड़ेकी गाड़ी पर मथुरासे बृन्दावन जाना होता है। मथुरा ऐश्वर्यकी लीला भुमि है, बृन्दावन माधुर्य्यका लीलास्थल है। कवियोंकी कल्पनाने पौराणिक कालके बृन्दावनको क्या ही शोभामय बनाया है। गोप बालकों के सिङ्गेकी ध्वनिसे बृन्दावन मुखरित होता है, विशाल नैनी गोपवधुटियोंके प्रेमोद्गारों से बृन्दावनके रजकण तक प्रेममय हो जाते हैं। यही बृन्दावन भक्तोंका काम्य स्थान है। बृन्दावनके तरुलतारेतों तक से प्रेमका रस निःसृत होता है भक्तोंका विश्वास यह है, कि बृन्दावन की रजको भी छूनेसे मोक्ष हो जाती है। हिन्दू धर्मानुसार भक्ति कई प्रकारोंकी है। साधारण और सरल भावसे वह शान्त है, किन्तु वैसी भक्ति बिना क्रियाकी है। क्रियायुक्त भावसे भक्तिके ४ प्रकार रस वा रतियाँ हैं, (१) दासभाव, (२) भीमार्जुनके अनुभवका सख्य भाव, (३) यशोदा आदिके अनुभव का वात्सल्यभाव और (४) ब्रजगोपियोंके अनुभवका माधुर्य्य भाव। बृन्दावन गोपियोंके इसी भक्तिभावकी अनूठी भुमि है।

इसकी प्राकृतिक शोभा बड़ी ही मनोहर है। ब्रजमण्डलमें जीवों का वध निषिद्ध है। इसीसे हिरन हिरनी, मोर मोरनी आदि निःशङ्क चित्त से
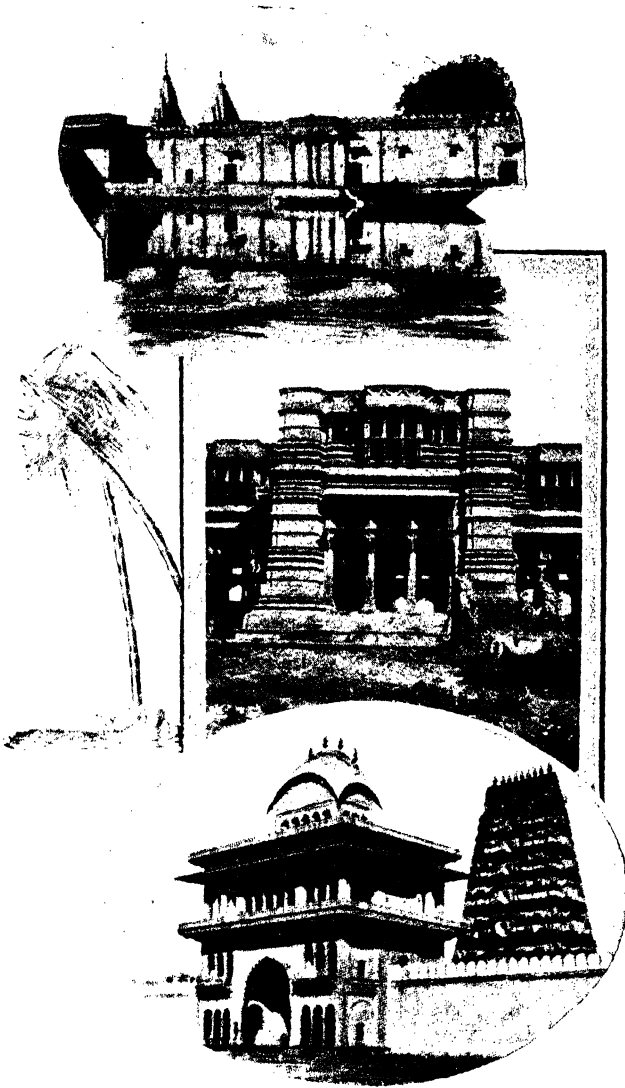
१। सेठजीके मन्दिर का भीतरी दृश्य। २। गोविन्दजीका पुराना मन्दिर।
३। सेठजीका मन्दिर।

चारों ओर बिचरते देखे जाते हैं। जीवोंका यह निःशङ्क विचरण प्राकृतिक शोभामें अनुपम माधुर्य्यका सञ्चार कर देता है।

वृन्दावन भी यमुनाके तट पर अवस्थित है। यमुनामें एक घाट से लगा हुआ दूसरा घाट आता है—घाटोंमें चबूतरे और चाँदनियाँ हैं। किन्तु यमुना अब वृन्दावनके नीचेसे बहुत दूर हट गयी है। वर्षाऋतु को छोड़कर और कभी घाटोंके पास जल नहीं रहता। आजकल फिर यमुनाको वृन्दावनके नीचेसे बहनेवाली बनानेका प्रयत्न हो रहा है। वृन्दावनमें श्रीकृष्णके सैकड़ों मन्दिरोंमेंसे तीन मुख्य हैं, गोविन्द जीका मन्दिर, मदनमोहनजीका मन्दिर और गोपिनाथजीका मन्दिर। गोविन्दजीका पुराना मन्दिर लाल पत्थरका बना हुआ है। सारे पश्चिमोत्तर भारतमें इसके जोड़का बढ़िया हिन्दू मन्दिर कोई नहीं है। गोवर्धन के हरदेवजीका मन्दिर इसके साथ कुछ कुछ मिलानेके योग्य है। औरङ्गजेबकी आज्ञासे उस मन्दिरका ऊपरी भाग तोड़ दिया गया था। पुराने भवनोंकी रक्षाके अनुरागी लार्ड कर्जनके उद्योगसे उसके तोड़े हुए अंशकी मरम्मत हो गयी है और अब वह सुरक्षित दशामें अवस्थित है। यह प्रसिद्ध है, कि वह मन्दिर तो तोड़ा गया था, पर उसके अभ्यन्तर के गोविन्दजीका विग्रह जयपुरमें पहुँचाया गया था। यमुना तटके एक टीले पर मदनमोहनजीका मन्दिर है। इसका निर्माण दक्षिण भारतकी शिल्पविद्याकी पद्धतिसे हुआ है। यह मन्दिर भी त्याग दिया गया है। इन दिनों गोविन्दजी और मदनमोहनजी दोनोंके विग्रह ही नये छोटे देवालयोंमें हैं। लाखों यात्री उन सब मन्दिरोंमें देवताके दर्शनोंके लिये जाते हैं तथा अनेक मनुष्य अपने अपने घर गृहस्थीसे विरक्त होकर वृन्दावनमें जा भी बसते हैं।

वृन्दावनमें भक्तनिर्मित और भी कई एक मन्दिर प्रसिद्ध हैं। उनमेंसे मथुराके सेठोंके बड़े भारी मन्दिरका उल्लेख सबसे पहिले करना चाहिये। इसको लार्ड नार्थब्रुकने दुर्ग कहा था इसकी ऊँची चोटी दक्षिण भारतके मन्दिरोंका स्मरण दिलाती है। इस मन्दिरकी चौकमें जो गरुड़स्तम्भ है, उसको लोग साधारणतः "सोनेका ताड़" कहते हैं। इस मन्दिरके ऐश्वर्यकी नामवरी सभी देशोंमें है। सेठोंके मन्दिरके बाद ही शाहजीका मन्दिर उल्लेख-योग्य है। शाहजी ने मन्दिर सुफेद सङ्गमरमरका बनाया है, जिसपर चित्र अङ्कित कर नाना वर्णोंके प्रस्तर लगाये गये हैं। इस मन्दिर के सौन्दर्यमें पौरुष भाव लवलेश भी नहीं, सभी मानों कोमल भावका आधार है, नफीस

कान्ति का विकास करता है। इसके प्रथम प्रवेशकी उँचाई रोमके सेण्टपीटर गिर्जेकी याद करा देती है। बङ्गदेशके पाइकपाड़ा—राजवंशवाले "लाला बाबूने" गृहस्थी के बन्धन को तोड़कर वृन्दावनमें निवास किया था और वहाँ एक मन्दिर बनवाया था, जो "लाला बाबूकी कुञ्ज" नामसे परिचित होता है।

भारत के देशीय नरेन्द्रोंके जो मन्दिर वृन्दावनमें हैं, उनमें से गवालियर नरेशकी "ब्रह्मचारी कुञ्ज" और जयपुर-नरेश के नवीन मन्दिरने अच्छी प्रसिद्ध प्राप्त की है।

यात्री ले जानेके मोटर गाड़ी—मथुरासे वृन्दावन।
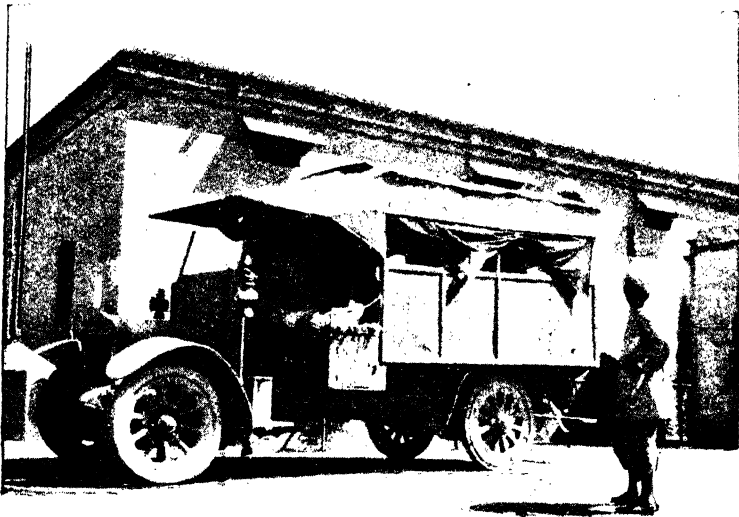
बाँके बिहारीजी के मन्दिरमें भी यात्रियोंकी बड़ी भीड़ लगती है। वृन्दावन बङ्गाल की सीमाके बाहर उससे बड़ी दूरका स्थान होने पर भी उसके साथ बंगालके निवासियोंने जितना घना सम्बन्ध स्थापित किया है, उतना और किसी बाहरी प्रान्तके निवासियोंने नहीं किया है। भारत के प्रान्त प्रान्तमें श्रीकृष्णकी पूजा नाना रूपसे होती है। कहीं तो उनकी पार्थ—सारथि मूर्त्तिकी और कहीं उनके पाण्डव-सखा-रूप आदि की। किन्तु माधुर्य्य के अवतार श्रीकृष्ण अपनी युगल भुजाकी मुरलीधर मुर्तिमें बङ्गदेश-बासियोंके हृदय-वृन्दावनमें रासलीला करते हैं और वहाँ नित्य सत्य रूपसे विराजित रहते हैं। बङ्गालका गहन वैष्णव साहित्य हिन्दी साहित्यको जो

भांति गोपी प्रेमके भावसे रंगा हुआ है। अनेकानेक वङ्गदेशवासियों ने वृन्दावनमें कुञ्ज (गृह) निर्मित कर उनमें राधाकृष्णकी मूर्त्ति स्थापित की है। इसके साथ ही क्षेत्रोंमें (सत्रोंमें) नित्य अनेक मनुष्योंको अन्नदान करने का प्रबन्ध भी है। इसलिये वृन्दावनमें प्रायः किसीको भी किसी दिन भूखों नहीं रहना पड़ता। यह प्रबन्ध इसीलिये आवश्यक विचारा गया था, कि लोग निश्चिन्त मनसे देवता की पूजें और धर्म्मचर्चापर ध्यान जमावें। किन्तु अब उस प्रबन्धसे केवल आलसियोंकी संख्या बढ़ रही है।

वृन्दावनमें यमुना जलमें जैसे कछुए भरे हुए हैं, वैसे ही वृक्षों पर बन्दरोंकी पलटनें हैं। बन्दरोंके उधमोंसे लोगोंके नाकों दम आ जाता है। किन्तु व्रजमण्डल में जीव हत्याका निषेध रहने से उनकी ओर कोई उंगली भी नहीं उठाता।

पुराणोंमें श्रीकृष्णके जैसे जैसे उत्सव वर्णित हुए हैं, तदनुसार अनुष्ठान सदैव वृन्दावनमें होते रहते हैं और उन उत्सवों के समय यात्रियों की भीड़के आनन्द कोलाहलसे वृन्दावन मुखर उठता है। अनेकानेक उत्सवोंमें रास, होली, हिंडोला आदिके समय तो इतने अधिक मनुष्य वृन्दावनमें इकट्ठे होते हैं, कि जिनकी संख्या नहीं की जा सकती। किन्तु वृन्दावन ऐश्वर्य्यका नहीं, माधुर्य्यका लीलास्थल है। उसका सौन्दर्य्य अटारियोंका नहीं, पर बनोंके जोड़का है। वृन्दावनमें जाकर गोपियोंकी तरह अपनेको भुलाकर भगवानके प्रेममें तन्मय हो जाना ही हिन्दुओंके जीवनकी वासना है। भारतमें सर्वत्र भक्तके हृदय के तारोंसे जैसी झङ्कार उठती है, वह इस गीतसे प्रकट होता है—

> वृन्दावन की गली गलीसे।
> मधुलूँगा मैं कली कलीसे।
> प्रेमयमुना लहर उछलीसे।
> होगा कण्ठ तर अञ्जलीसे।

जिन जिन बनोंमें गोपियोंका कृष्ण प्रेम जिस जिस तरहसे उछला था, वृन्दावनके उन्हीं उन्हीं स्थानोंमें उसी उसी प्रकार प्रेमलीलाका आनन्द मनाया जाता है। जन्माष्टमीके बाद ही यात्री "वन करने" अर्थात वृन्दावनके समीपवाले बनोंका विचरण करनेके लिये यात्रा करते हैं। वह वन विचरण भी मानों एक उत्सव है। उसमें लोगों का कितना बड़ा उत्साह पाया जाता है!

मथुरा से "महावन" में जाना होता है। वहां एक समय जो राजधानी थी, उसको गजनीके महमूदने विध्वंस कर दिया था। राजा ने पराजय को निकट जानकर शत्रु के हाथ कैद होनेके अपमान से बचनेके लिये सकुटुम्ब प्राण त्याग दिये थे। "महावन" के कुछ ही दूर पर गोकुल है वहाँ एक स्थान को दिखलाकर यात्रियों से बतलाया जाता है, कि यहीं नन्दबाबाका राजभवन था। गोकुल का घाट वल्लभाचार्य के सम्प्रदायवालों का परम तीर्थ है।

सेठजी के मन्दिरकी चौक—बृन्दावन।

बृन्दावनके समीप बलदाऊजी वा दाऊजी नामक प्रसिद्ध स्थान है। किन्तु गोवर्धन और राधाकुण्ड समधिक प्रसिद्ध स्थान हैं। बृन्दावनमें खासकर बङ्गाली यात्रियोंके आगे माथुर बालक बिगुल बजाकर नाचते हुए गाते हैं:—

"श्यामकुण्ड राधाकुण्ड गिरिगोवर्धन,
मधुर मधुर बंसी बजे यही बृन्दावन।"

गिरिगोवर्धन जिस शैलमाला पर अवस्थित है, वही "गिरिराज" है। कृष्णने इस पर्वतको धारण कर उसकी ओटमें ब्रजवासियोंकी ऐसी रक्षा की थी, कि इन्द्रके क्रोधसे होती हुई सात दिनोंकी निरन्तर जल बृष्टि उनकी कोई क्षति नहीं कर पायी थी। गोवर्धन ग्राम मानसी गङ्गानामक सरोवरके तट पर बसा हुआ है। उस सरोवरके चारों ओर ईंटों की दीवारका घेरा है। सरोवरके दूसरे पार भरतपुरके दो राजाओं की "छतरियाँ" हैं।

गोवर्धनसे लगभग तीन मील पर राधाकुण्ड और श्यामकुण्ड हैं। गोवर्धनसे उन कुंडोंमें जानेके मारग पर भरतपुरके वर्तमान राजघरानेके

संस्थापक राजा सूरजमलकी छतरी है, जिसके पिछे बाग और सामने "कुसुम सरोवर" नामक एक विशाल सरोवर है। राधाकुण्ड और श्यामकुण्ड दो छोटी छोटी झीलें हैं, जिनमेंसे हरएकके ही चारों ओरसे सोपानावली जलके नीचे तक चली गयी है। दोनों के बीचका स्थल भी पत्थरसे जड़ा हुआ है। वहाँ के शोभा मन भावन है।

वृन्दावनसे कुछ दूर पर बरसाना और डीग प्रसिद्ध स्थान हैं। बरसाना राधिकाका जन्मस्थान माना जाता है। डीगमें भरतपुरके सूरजमलका राज-भवन है। फर्गुसन साहबका कथन यह है, कि राजभवनके गृहोंके सौन्दर्य्यने विशेष जानकारोंको भी मोह लिया है। डीगमें पहिले युद्ध भी हुआ था। कोई कोई यात्री वृन्दावनसे बरसाना और डीगको भी देखने जाते हैं पर आजकल समयकी कमी बहुतेरोंको उस सुखसे वञ्चित करती है।

अलीगढ़।
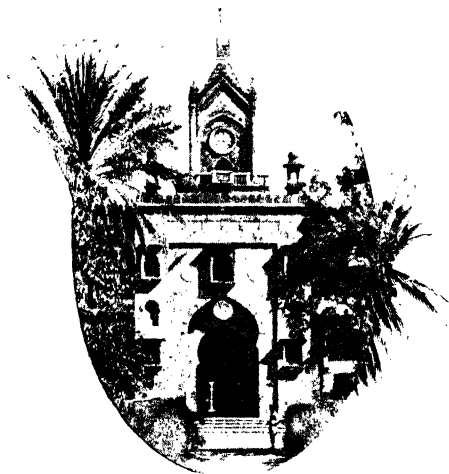
विकटोरिया गेट—अलीगढ़ युनिवर्सिटी।

अलीगढ़ कलकत्तेसे ८२५ मील दूर पर है। गङ्गा यमुना दोआबमें बुलन्दशहरके पास अलीगढ़ पहिले एक गढ़ वा दुर्ग ही था, जिसकी प्राचीनता का प्रमाण पाया जाता है। वह किला प्रथम एक राजपुत हिन्दु नरेन्द्रके अधिकृत था। औरङ्गजेबकी मृत्यु के बाद मराठे, जाट, अफगान, रुहेले आदि

सभोंने ही अलीगढ़ पर लालच की दृष्टि डाली थी, क्योंकि वहाँसे अनेक ओरके पथोंकी रक्षा की जासकती है। सन् १७५९ ई: में अफगानोंने वहाँसे जाटोंको खदेड़ दिया था। उसके कई वर्ष बाद नाजफ खाँने रामगढ़दुर्ग को मरम्मत और दुरुस्तकर उसका अलीगढ़ नाम दिया सन् १७८४ ई०में सिन्धिया महाराजाने अलीगढ़को जीतकर उसमेंसे करोड़ रुपयेके सोने, चाँदी आदि प्राप्त किये। तदनन्तर उस किलेको लेकर सिन्धिया और मुसलमानोंमें लड़ाई चलने लगी। अन्तमें उसको लार्ड लेकने सिन्धियासे जीत लिया।

इस समय अलीगढ़ का सर्वप्रधान द्रष्टव्य सर सैयद अहमद खाँका स्थापित किया हुआ एङ्गलो-ओरियेण्टल कालेज है मुख्यत: ऊँचे घरानेके मुसलमानोंको अङ्गरेजी सिखलानेके सङ्कल्पसे सन् १८७५ ई० में सर सैयद अहमद खांने विलायती कालिजोंके अनुकरण से इस कालिजकी नीव डाली। यह क्रमश: विश्वविद्यालय बन गया है।

कैलकी ऊँची भूमि पर एक बड़ी मसजिद है, जिसके बीचमें ३ गुम्बद हैं और बगलोंमें दो। जहाँ यह मसजिद है, वहाँ हिन्दुयों और बौद्धोंके दिनोंके भवनों आदिके ध्वंसावशेष दिखलाई देते हैं। शहरके बीच एक स्वच्छ जलवाला सुन्दर सरोवर है। सरोवरके उपर शाखाएँ फैलाकर वनस्पति अपने बीच कई मन्दिर लिये हुए अवस्थित हैं। उन वृक्षों पर बन्दरोंकी भरमार है।

मुसलमानोंके लिये अब अलीगढ़ अवश्य द्रष्टव्य हो गया है। क्योंकि तरुण मुसलिमोंकी शिक्षाका केन्द्ररूप बनकर अलीगढ़ भारतमें विलक्षण प्रसिद्ध पा गया है। अलीगढ़में प्रतिवर्ष एक मेला लगता है।

अलीगढ़के बाद ईस्ट इण्डियन रेलवे पर प्रधान स्थान दिल्ली है। इस समय दिल्ली भारतकी राजधानी है और दिल्ली स्टेशनसे रेलें नाना ओरको गयी हैं।
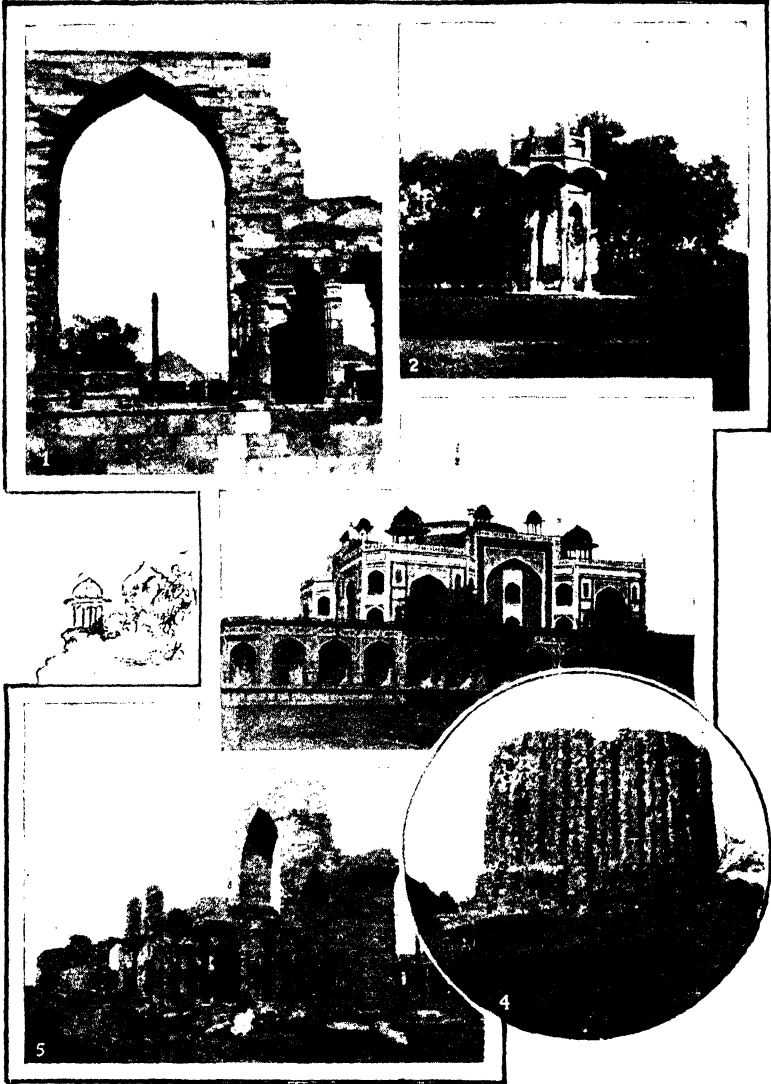
१। तोरण और लाट। २। कुतब मीनारकी चोटी।
३। हिमाँऊ बादशाहकी समाधि। ४। कुतब मीनारके सामनेका ध्वंसावशेष
५। पृथ्वीराजके राजभवनका ध्वंसावशेष।

दिल्ली।

दिल्लीका ऐश्वर्य्य, दिल्लीका सौन्दर्य्य, दिल्लीका इतिहास, सभी प्रसिद्ध हैं दिल्ली हिन्दू पुराणोंका इन्द्रप्रस्थ है। यहीं युधिष्ठिर ने अपनी राजधानी स्थापित की थी। अबतक "पुराना किला" इन्द्रप्रस्थ कहलाता है। पर वहाँ से हिन्दुओं के उस प्राचीन राज्यकालका कोई चिन्ह अभीतक आविस्कृत नहीं हुआ है। उस किलेमें हेमाँऊके पठनालयके साथ एक मसजिद दिखलाई देती है।

यह कहा जा सकता है, कि दिल्ली एक महान श्मशान है। वह अनेकानेक राजवंशोंकी समाधि भुमि है। इन दिनोंकी दिल्लीके उत्तर ओर लगभग ४५ वर्ग मील स्थानमें नाना राजवंशोंके राजभवन, दुर्ग, विलास-भवन, मसजिद आदिके ध्वंसावशेष हैं। अनङ्गपालके दुर्ग और पृथ्वीराजके दुर्ग तथा कुतब मीनारके पासवाला लाट (लौह स्तम्भ) हिन्दू नरेन्द्रोंकी स्मृतिको जगा रहा है। तुगलकाबाद तुगलक शाहका पुराना किला हेमाँऊकी और लाल किला वा शाहजहानाबाद शाहजहाँकी कीर्त्तिके द्योतक हैं।
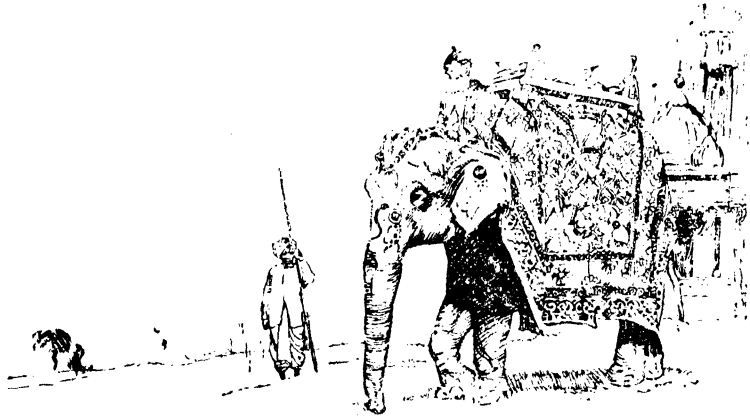
दिल्ली पर वारंवार शत्रुकी चढ़ाई हुई है। आक्रमण करने वालोंमें नादिरशाह-का उत्पात ही अतिशय भयङ्कर हुआ। मुसलमान वंशोंके अन्तिम बादशाह बहादूर शाह हो गये। दिल्लीके भवनादि कई भागोंमें बाँटे जासकते हैं—

(१) प्रारम्भिक पठान राज्यकालके (सन् ११९३ से १३२० ई०)
कुतबुद्दिनकी मसजिद और कुतबमीनार। अलतामशकी समाधि अलाई दरवाजा। जमायतखाना मसजिद।

ये सब प्रथम हिन्द भवनादिके मसालोंको लेकर हिन्दू गृहनिर्माण विद्या की परिपाटीकी नकलसे बने । क्रमशः उस हिन्द विद्याके साथ मिलावटके फलसे उपजी हुइ दूसरी परिपाटी उत्पन्न हुई ।

(२) पठान राज्य कालके मध्य भागके (सन् १३२० से १४१४ ई०)

तुगलकाबाद और तुगलक शाहकी समाधि अट्टालिका। कल्लन मसजिद। फ़ीरोजशाहकी कोटलावाली मसजिद । कदमशरीफ़। निज़ामुद्दीनकी मसजिद ।

(३) पठान राज्यकाल के अन्तिम भागके (सन् १४१४ से १५५६ ई०)

सैयद और लोदी बादशाहोंकी समाधि-अट्टालिकाएं। पुराना किला और मसजिदें आदि।

(४) मोगल राज्यकालके (सन् १५५६ से १६६० इ०)

हैमाऊँकी समाधि-अट्टालिका। दिल्लीका दुर्ग और राजप्रासाद। जामा मसजिद सुनहरी मसजिद। सफ़दरजङ्गकी समाधि अट्टालिका आदि।

दुर्ग और दुर्गान्तर्गत राजप्रासाद ही सबसे बढ़कर प्रसिद्ध है। उन उन समयोंके ऐतिहासिकोंके निर्णयानुसार उन सब भवनादिके निर्माणका व्यय निम्नरूप हुआ था: —

दुर्ग और दुर्गाभ्यन्तर के भावनादि	... ...	६० लाख रुपया।
दुर्गाभ्यन्तर का राजप्रासाद	... ...	२८ ,, ,,
दीवाने खास	... ...	१४ ,, ,,
दीवाने आम	... ...	२ ,, ,,
बेगमों आदिके बास भवन	... ...	७ ,, ,,
दुर्ग की दीवार और गढ़	...	२१ ,, ,,

यह तो सर्वविदित है कि उन दिनों शिल्पियों और श्रमिकोंका मिहनताना तथा मसालोंका मूल्य इनदिनोंसे मिलान करनेसे बहुत ही कम देना होता था।

दिल्ली शहर की मुख्य सड़क पर अवस्थित चाँदनी चौक से होते हुए लाहौर दरवाजेमें जाकर दुर्ग में प्रवेश करना होता है। इस तोरणवाले फाटकके ऊपर तिमञ्जिला गृह है। फाटकका पथ ४१ फ़ीट उँचाई का और २४ फ़ीट चौड़ाई का है। इस फाटकसे नहबतखाने तकका पथ छतसे ढका हुआ है।

तदनन्तर दीवानेआम है। इस बिशाल कमरेमें कतारकी कतार खम्भे हैं। इस कमरेके अन्दर ऊँचे चबूतरेके ऊपर संस्थापित सिंहासनसे बादशाह प्रजाके

आवेदन-पत्रों को लेते थे। वह सिंहासन जहाँ स्थापित था, वहाँकी दीवारके पत्थर पर खुदी हुई चित्रकारी फल, फुल, चिड़ियों आदिकी है। कहा जाता है, कि वह चित्रकारियाँ किसी फ्रान्सीस शिल्पकुशलकी हैं। दरबार के समय उस गृहकी जो शोभा खिलती थी, उसकी आजदिन केवल कल्पना ही की जा सकती है। वह कमरा १०० फ़ीट लम्बाईका और ६० फीट चौड़ाईका है। दरबारके समय अमीर-उमरे उस कमरेमें समवेत होते थे। उस समय कमरे की जैसी सजावट होती थी, वह तात्कालिक पर्य्यटकोंकी पुस्तकोंके वर्णनोंसे विदित होता है।
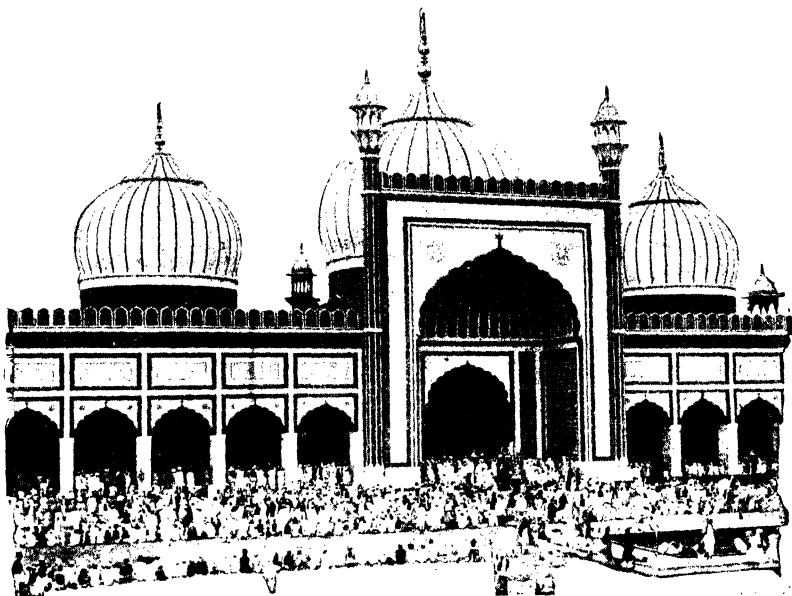
जुम्मा मसजिद—दिल्ली।

दीवाने-खासकी बात सबत्र प्रसिद्ध है। वह सङ्गमरमरका कमरा है, जिसकी दीवारोंके ऊपरी भाग पर सुनहरे काम हैं। यह कमरा ८० फीट लम्बा और ६७ फीट चौड़ा है। कमरेकी दीवार पर इस आशयकी फारसी कविता खुदी हुई है :—

कहीं स्वर्ग हो धरती ऊपर।
यहीं—यहीं, वह, मात्र यहीं पर।

कमरेका चंदवा सनहरे कामदार चाँदीका था। यह चदवा ३९ लाख रुपये खर्चसे बनाया गया था। सन् १७६० ई०में मराठोंने उसको लूटकर गलाया था, जिससे तब भी वे २८ लाख रुपया पाये थे।

दिवाने-खास मे ही जगत्प्रसिद्ध तख्त-ताऊस (मोर-सिंहासन) था। वह सिंहासन ७ वर्षों के परिश्रम से शिल्पियोंने प्रस्तुत किया था। यह निर्णय करना कठिन है, कि उसको बनवाने मे कितना खर्चा हुआ था। किन्तु टावानियर का कथन है, कि उसके निर्माणका व्यय साढ़े ९ करोड़ रुपया हुआ था।
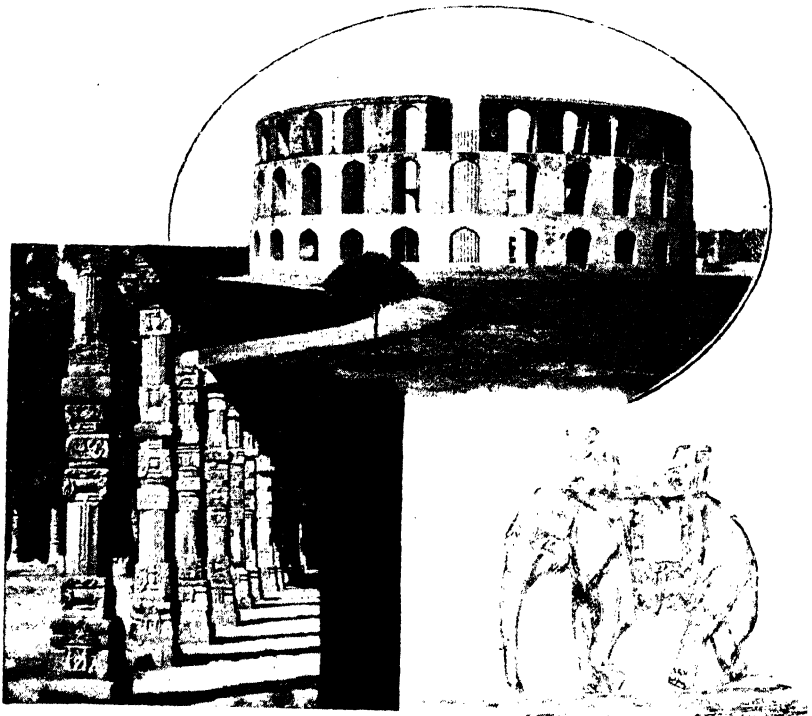
पृथ्वीराज के मन्दिर का ध्वंसावशेष।

दीवाने-खास मे कितनी ही लीलाएँ हो गई शाहजहाँकी बदतीके दिनों यही उनका प्यारा कमरा था। सन १७१६ ई० मे बादशाह फर्रुखशायर को नीरोगकर डाक्तर हैमिल्टनने इसी कमरे से अङ्गरेजो के लिये गङ्गातट पर के ३८ शहरों में कोठियों के खोलने का अधिकार प्राप्त किया था। उसीके फलसे

इस देश मे अङ्गरेजी राज्य की नीव पड़ी। इसी कमरे मे सन् १७३९ ई० में अपने से पराजित महम्मदशाह को अपना मणिकाणिक आदि समर्पित कर देने पर लाचार किया था। इसी कमरे मे गुलामकादिर ने बुढ़े बादशाह शाह आलम की आँखें निकाल ली थी। इसी कमरेमें बादशाहने सेन्धियाके उत्पातों से बचाने का धन्यवाद लार्ड लेकको दिया था। सन् १८५७ ई० में बागी सिपाहियोंने इसी कमरेसे दूसरे बहादुर शाहको हिन्दुस्थानका बादशाह बनानेकी घोषणा की थी और इसके सात मास बाद इसी कमरेमें दूसरे बहादुर शाहकी बग़ावत का विचार किया गया था।

दुर्ग के अभ्यन्तरस्थित रङ्गमहल, हम्माम आदि विशेष वर्णनयोग्य हैं। एक हम्मामकी ही नकाशियोंको देखनेसे अनुमान किया जा सकता है, कि समूचे राजप्रासादके शिल्पिकार्य्य कैसी ऊंची श्रेणीके हैं। दिल्लीके हम्मामको शाहजहाँ और औरङ्गजेबके बाद और कोई बादशाह अपने काममें नहीं लाये थे। उस हम्माम के गर्म जलके लिये नित्य १२५ मन लकड़ी जलायी जाती थी।

राजप्रासादमें जल लानेके लिये ६० मील दूरकी नदीसे राजप्रासाद तक नहर खनी गयी थी। नदी मे उस नहर की राह जल आकर झरने की तरह हड़हड़ाकर गिरता और समूचे दुर्गभर में परिचालित किया जाता था।

मोगलोंके ऐश्वर्य्यकी बात क्यों सारी दुनियामें कहावतकी तरह फैल गयी थी, यह दुर्गाभ्यन्तर स्थित प्रासादके अवशेष को देखनेमे किसी के समझने मे बाकी नहीं रह जाता।

प्रासादके अन्दर ही मसजिद है।

इसी प्रासादसे ही मोगल बादशाह उसके नीचे समवेत प्रजाजनवृन्दको दर्शन देतेथे। सम्राट पञ्चम जार्जके राज्याभिषेक दरबारमें राजदर्शनकी वह प्रथा फिरसे चलायी गयी।

मोगल बादशाह राजधानीको चारों ओरकी ऊँची दीवारोंसे घेरते थे और दीवारोंमें अनेकानेक तोरणवाले फाटक बनाते थे। दिल्लीसे निकलनेके अनेक फाटक हैं, जिनमें कश्मीर दरवाजा, काबुल दरवाजा आदि कई बड़े प्रसिद्ध हैं।

चाँदनी चौककी पुरानी शोभा अब नहीं रही है। पहिले सड़कके मध्यभाग में वृक्षोंकी कतार थी। लार्ड हार्डिञ्जकी ओर तानकर किसीने बम फेंका था। यह विचारकर, कि किसी वृक्षकी ओटसे उसने वह अनर्थ किया होगा, वे तमाम वृक्ष काट डाले गये। चाँदनी चौक की ओर दुर्ग है और दूसरी ओर जुम्मा मसजिद। मसजिद भी शाहजहाँने बनायीं-वह ऊँचे चबूतरे पर बड़े भारी आकार
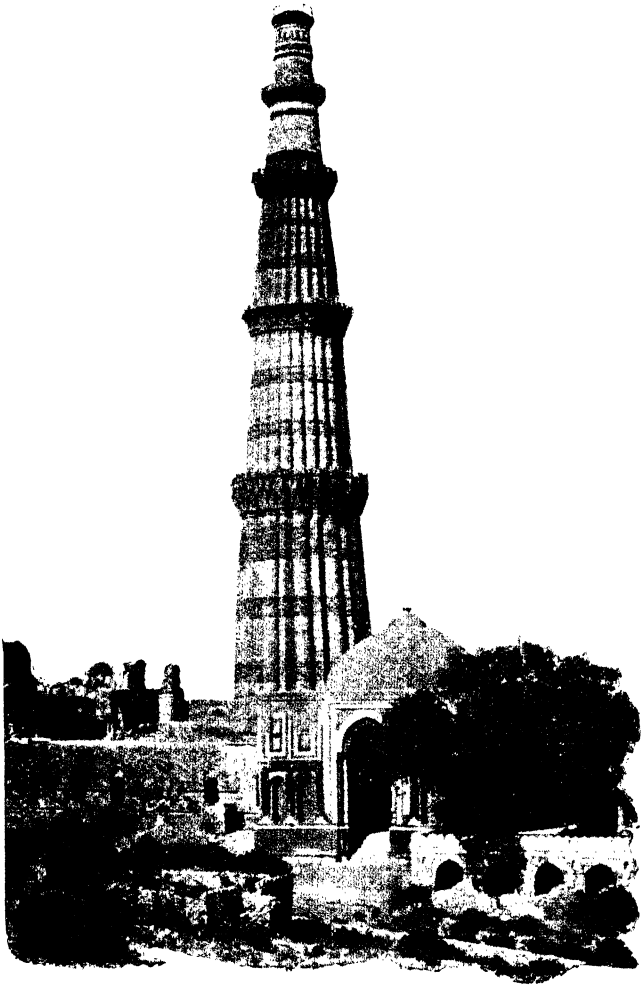
कुतबमीनार—दिल्ली।

की है। उसके तीन गुम्बद सङ्गमरमरके हैं। उनपर बीच बीच समानन्तर रेखाए काले पत्थर की बनाकर विचित्रता का सञ्चार किया गया है। लार्ड कर्जनका कहना है, कि सारे पूर्वी देशोंमें इसके जोड़की बढ़ियां मसजिद और कोई नहीं।

दिल्ली मुसलमानोंकी राजधानी थी, जिससे वहाँ मसजिदों की अधिकता अवश्यही होनी चाहिये। दिल्ली दरवाजेके पासकी सुनहरी मसजिद, कलन मसजिद आदि द्रष्टव्य हैं।

दिल्लीमें एक जैन मन्दिर है, जिसके शिल्पकार्य्य विशेष उल्लेख योग्य हैं।

पुराने बागोंमें कुदशिया बाग अबतक अनेक दर्शकोंको आकर्षित करता है, रोशनारा बाग भी बढ़िया है।
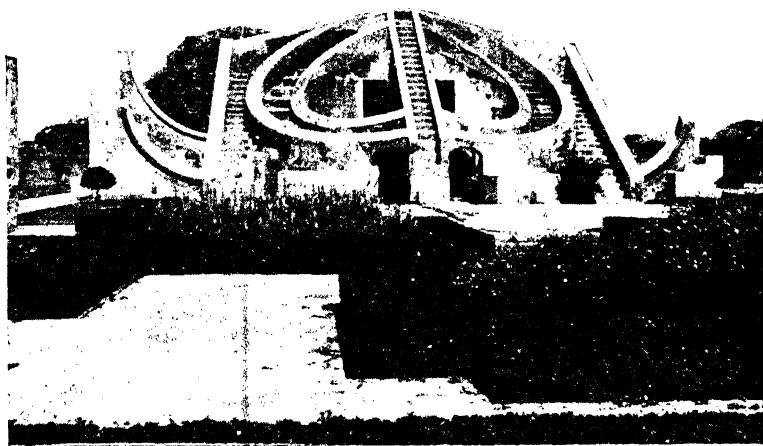
प्राचीन मानमन्दिर—दिल्ली।

दिल्लीके किनारे पहाड़ोंका सिलसिला है, जिनके एक स्थानमें हिन्दूराव का भवन—पुराना प्रासाद है। इस पहाड़ी सिलसिले पर एक ओर सिपाहियों के ग़दरका एक स्मृतिस्तम्भ है तथा एक अशोकस्तम्भ भी है। इसके दूसरी ओर फिरोजशाहके कोटलेमें और भी एक स्तम्भ अशोक का है। यह दूसरा अशोक स्तम्भ अम्बाला जिलेके टपरा नामक स्थानसे उठा लाकर वहाँ स्थापित किया गया है। फीरोजशाहके कोटलेमें फिरोजाबाद का किला था। दिल्लीकी दो समाधियाँ प्रसिद्ध हैं – एक हेमांऊकी स्मृति-अट्टालिका और दूसरी सफदरजङ्गकी। हेमाऊँकी

समाधि बहुत बड़ी अट्टालिका है। सिपाहियोंके गदरके बाद अन्तिम बादशाहके शहजादे इसी अट्टालिकामें जा छिपे थे और यहीं मारे गये। सफदरजङ्गकी समाधि अट्टालिका इसीकी नकलसे बनायी गयी है। किन्तु वह किसी तरहसे भी हुमाऊँकी समाधिके जोड़की नहीं कही जा सकती।

दिल्लीमें द्रष्टव्य स्थानों और अट्टालिकाओंकी कमी नहीं। उनको थोड़े दिनोंमें देख लेना असम्भव है। किन्तु कुतबमीनारकी तरह इतिहास प्रसिद्ध पदार्थको न देखनेसे दिल्ली दर्शन अपूर्ण रह जाता है। यह मीनार वा स्तम्भ २३८ फीट ऊँचा है। यह कई तहोंमें ऊपरको उठा है। प्रथम तह ८५ फीट ऊँची है। स्तम्भका कलेवर बीच बीचमें खाँदलवाला है। विशेष जानकार फर्गुसन साहब कहते हैं—यह कहनेसे अतिशयोक्ति नहीं होती, कि पृथिवीमें कहीं भी इसके जोड़का सुन्दर स्तम्भ नहीं। इसको देखनेसे फोरेन्सकी कैम्पानाइल (Campanile) याद आती है। वह स्तम्भ कुतबमीनारसे भी ३० फीट अधिक ऊँचा है। किन्तु वह कुतबमीनारकी तरह सुन्दर नहीं। कोई कोई इसको किसी हिन्दुराजाकी कीर्त्ति मानते हैं, पर इस बातका प्रमाण नहीं मिलता। शायद कुतुबुद्दीन ऐबकने इसकी नीव डाली और इसको मसजिदकी मीनार बनानेकी इच्छा की होगी। इसमें सन्देह नहीं, कि इसकी बारबार मरम्मत हुई है। इसकी चोटीके ऊपर जो छत थी, वह नष्ट हो गयी है। ३७८ सीढ़ियोंको तय करनेसे कुतबमीनारकी चोटी पर चढ़ा जाता है। कुतब-मीनारकी चोटी परसे दिल्लीका दृश्य बड़ाही मनोहर जान पड़ता है।

कुतबमीनार जहाँ है, उसके चारों ओर प्राचीन कालके नाना चिन्होंमें हिन्दु कीर्त्तिके भी चिन्ह दिखलाई देते हैं। उन हिन्दु तथा अहिन्दु चिन्होंमें विशेष उल्लेख योग्य अलतामशकी समाधि और आलाई दरवाजा है। समाधिके अभ्यन्तर भागमें सूक्ष्म शिल्पकार्य्य झकाझक चमक रहे हैं। आलाई दरवाजा कुतबमीनारके पासकी सर्वोत्तम रचना है। वहाँ मुसलमान राज्यकालकी कीर्त्तियोंके होने पर भी देखनेसे ही यह स्पष्ट प्रतीत होता है, कि हिन्दु नगरके ध्वंसावशेष पर यह मुसलिम कीर्त्ति रचित हुई। किन्तु कालक्रमसे वह मुसलिम नगर भी श्मशानमें परिणत हुआ। इन दिनों केवल प्राचीन कालकी कीर्त्ति देखनेके इच्छुक ही कुतबमीनार और उसके निकटस्थित कई अट्टालिकाओंको देखनेके लिये दिल्लीसे वहाँ जाते हैं। नहीं तो वहाँ अब सुनसानका ही सन्नाटा छा गया है। जिस स्थलमें विजयी वीरोंने कालजयी कीर्त्ति रचनेकी आशाकी थी, वहाँ उस ध्वंशावशेषके बीच

बैठकर काल मानों मनुष्यकी शक्तिका उपहास कर रहा है और समझा रहा है, कि मनुष्य की शक्तिकी सीमा कहाँ होती है ।

कुतबमीनारके समीप दिल्लीका सुप्रसिद्ध लाट है। यह भारतके हिन्दु नरेन्द्ररचित हिन्दु गौरवकी स्मृतिका चिन्ह है। सन् ईसवीकी पाँचवीं अथवा छठीं सदीमें वह लाट निर्मित हुआ था। लाटके कलेवरमें जो लिपियाँ खुदी हुई हैं, उनके अनुसार ही उसके निर्माण कालका वह निर्णय किया गया है। लिपियाँ केवल कई पंक्तियोंकी हैं। उनको पढ़नेसे यह विदित होता है, कि चन्द्रराजाने विष्णुके नामसे उस लोह स्तम्भको संकल्प कर दिया। उसमें
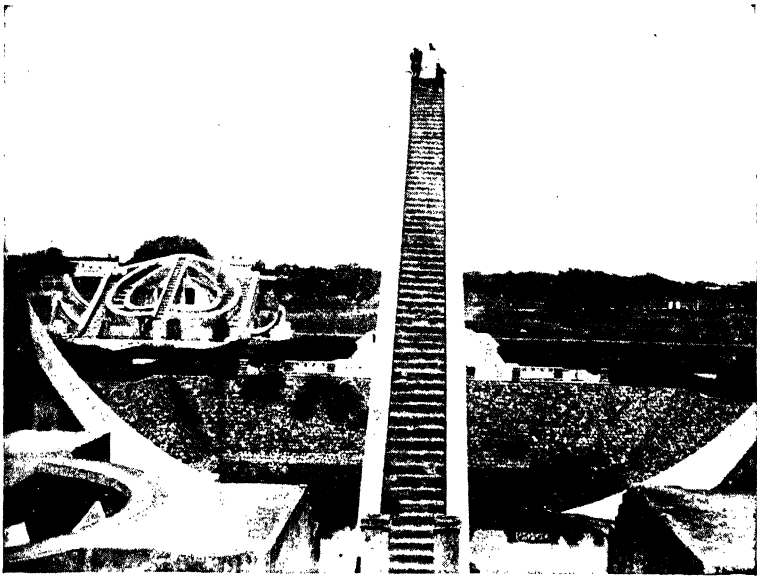
मान मन्दिरका दूसरा दृश्य—दिल्ली।

यह बात भी है, कि दूसरे अनङ्गपालने (सन् १०५२ ई० में) दिल्लीको पुनर्वार बसाया। वह लाट २३ फीट ८ इञ्च ऊँचा है। यह अनायास ही अनुमान किया जाता है, कि किसी समय लाटकी चोटी पर गरुड़की मूर्त्ति थी। यह लोह स्तम्भ जिस समय बनाया गया था, उस समय युरोपके बड़े से बड़े कारखानेमें भी ऐसे स्तम्भ का बनाया जाना सम्भव नहीं था। लोहको शोध विशुद्ध करके ऐसा स्तम्भ उससे बनाना असाधारण निपुणताको सूचित करता है। अतएव

स्पष्ट हो जाता है, कि उस समय भारतवासियोंने लोह शिल्पमें बड़ी भारी उन्नति की थी। वह शिल्प अब भारतमें भुला दिया गया है।

दिल्लीमें भी जयसिंहने मान मन्दिर स्थापित किया था। यन्त्र उसमें उन्हीं दिनोंके विद्यमान हैं। वे सबके सब स्थिर हैं।

दिल्लीके समीप ही तुगलकाबाद है, जो अब परित्यक्त है। वह नगर सन् १३२७ ई० से सन् १३३३ ई० के बीच महम्मद तुगलकसे बसाया गया था और महम्मद तुगलकसे परित्यक्त हुआ था। वहाँ तुगलक शाहकी समाधि है, जो अबतक नष्ट नहीं हुई है।

दिल्लीके बाहर निजामुद्दीन औलियाका स्थान और समाधि है। वहाँ उस समाधिके साथ ही और और समाधियाँ भी हैं। उन सभोंमें शाहजहाँकी पुत्री की समाधि विशेष प्रसिद्ध है। उसके पास ही कवि अमीर खुसरोकी समाधि है। खुसरोकी कविताकी कीर्त्ति सुप्रख्यात है। थोड़ी ही दूर पर चौसठ खम्भों का कमरा है। यह खाकी मरमर पत्थरका बना हुआ है और आदम खाँके कुटुम्बकी समाधि है।

उन दिनोंकी कहावत यह चली आती है, कि—"हनोज दिल्ली दूर अस्त"—यानी दिल्ली अभी तक बड़ी दूर है। किन्तु अब दिल्ली दूर नहीं। सन्ध्याके बाद कलकत्ते से गाड़ीमें बैठकर दूसरे दिन आधी रातके समय यात्री दिल्लीमें पहुँच जाते हैं। दिल्लीके सौन्दर्य्य और सम्पदको आँखों से न देखने से उनका अनुमान नहीं किया जा सकता। जिसने उनको नहीं देखा, वह दया का पात्र है। दिल्लीमें अङ्गरेजोंने जो राजधानी रची है, वह भी भारतमें बेजोड़ है। राजधानी जब पूरी तैयार हो जायेगी, तो अनेक लोगोंको अपनी ओर खींचेगी।

हरिद्वार।

हरिद्वार गङ्गाके दक्षिण तट पर है। इस स्थानसे गङ्गा पर्वतके बीचसे बाहर निकली है। इसका नामान्तर कपिल स्थान है। यात्री गङ्गाद्वार घाट पर स्नानकर पुण्य प्राप्त करते हैं। इसके ऊपर विष्णुके चरणका चिन्ह अङ्कित है। यह स्थान मायापुरी कहलाता है। हिन्दुओंका विश्वास यह है, कि इस स्थान में स्नान करनेसे सब पापक्षय हो जाते हैं। स्नानके समय लोगों का बड़ा भारी असुभीता देख गवर्णमेण्ट ने यहाँ ६० सीढ़ियोंका एक घाट बना दिया है। प्रतिवर्ष चैतसे कार्त्तिकके बादका दिन स्नानके योग है। प्रति बारहवें वर्ष कुम्भ मेला होता है। उस समय यहाँ अनेक यात्रियोंका समागम होता है। कुम्भ स्नानके समय हरिद्वारमें ५/६ लाख मनुष्योंकी भीड़ होती है। और समय समय इस बात पर दङ्गे हङ्गामे होते हैं, कि किस सम्प्रदाय वाले पहिले स्नान करेंगे। सन् १७६० ई०में गोस्वामियों और वैरागियोंके दङ्गे से १८ हजार १७ मनुष्य मरे। सन् १७८६ ई०में सिखोंने ५ सौ वैरागियोंके प्राण लिये।
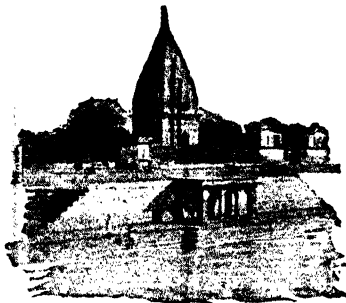
हरिद्वारमें जीवहत्याका निषेध है, जिससे बड़े बड़े आकारकी मच्छियाँ आनन्दसे गङ्गाजलमें विचर रही हैं।

युगावर्त्त घाटमें पितरोंका तर्पण किया जाता है।

इसी स्थानमें दक्षेश्वरका मन्दिर है। प्रसिद्ध है, कि दक्षके यज्ञमें शिव की निन्दा सुनकर सतीके शरीरको त्याग देने पर दक्ष दण्डित किया गया। उसी स्थल में यह मन्दिर निर्मित है। जहाँ सतीने शरीर त्यागा था, वह सतीकूण्ड नामसे प्रसिद्ध है। हरिद्वारमें ३ पुराने मन्दिर हैं।

नारायण शिलाका माया देवीका और भैरवका।

कनखलका दृश्य।

स्नानघाट कनखल।

प्रभात तोरण कनखल।

मायादेवी के मन्दिर के पास पर्वत के ऊपर बिल्वकेश्वर देव हैं। माया देवी का मन्दिर बहुत पुराना और पत्थर का है।

गङ्गा के भुमि पर उतरने का स्थान होने से हरिद्वार हिन्दुओं का बड़ाही पवित्र तीर्थ है।

लक्ष्मन झुला।

हरकी पैड़ी।

हरिद्वारसे अनेकानेक यात्री पर्वतके ऊपर केदार और बदरीनाथकी यात्रा करते हैं।

अङ्गरेजोंने इस देशमें खेतीकी उन्नतिके लिये जो नहर बनायी है, उनका आरम्भ हरिद्वारसे हुआ है। हरिद्वारसे नहर कानपुर तक गयी है और उससे अनेक स्थान उपजाऊ बने हैं। नहर जब खनी जाती थी, तब लोगोंके उलटे संस्कारके साथ विज्ञानके खटकने पर एक कविने कविता लिखी थी। वह इस प्रकार है:

नहर है हो हरिद्वार चली गयी कानपुर।
हुई विज्ञान विद्याकी अब वृद्धि है प्रचुर॥
लगा खनक जब खोदने नहर बहुत वह बड़ी।
तो त्योरियाँ पण्डोंकी ऊँची हो अति चढ़ी।
किचकिचाकर कहाँ खनी बने जिस दूर नहर।
न जायगी गङ्गाजी त्रिकालमें बढ़ उधर॥
भरोसे स्वविज्ञानके खनकने कहा यही।
मान शङ्क गयी तो थी गङ्गपूर्व चल सही॥
पर कोड़े मैं फटकार लाऊँगा नहरमें।
न चलेगा पण्डई हठ कलिके इस पहर में॥

पहिले ही कहा गया है, कि हरिद्वारसे अनेक यात्री केदारनाथ और बदरीनाथके दर्शनोंको जाते हैं। यात्रियोंके लिये दुर्गम पर्वत बहुत कुछ सुगम कर दिया गया है। पहाड़ी पथ पर स्थान स्थानमें विश्राम स्थान निर्मित किय गये हैं। यात्री उन सब चट्टियोंमें सुस्ताकर आगे जाते हैं। पथ बड़ा ही रमणीक दृश्योंका है। बीच बीचमें झरने हैं। हिमाचलकी छातीके ऊपर। मनुष्योंके वासस्थानसे बड़ी दूर ये सब देव मन्दिर हैं। पहिले इन सब स्थानोंमें देव दर्शनके लिये जाते समय अनेक लोगोंकी मृत्यु हो जाया करती थी। इस समय सुप्रबन्ध सर्वत्र ही किया गया है। गत वर्षसे इस पथमें कुछ दूर तक मोटर भी चलने लगी है। दिनों दिन दूरके इन तीर्थोंमें जाना सुगम हो रहा है और साथ ही यात्रियोंकी संख्या भी बढ़ रही है। हिन्दुओंके तीर्थ बहुधा रम्य स्थानोंमें गम्भीर प्राकृतिक दृश्योंके बीच अवस्थित हैं। बदरीनाथ और केदारनाथके बाद हो कश्मीरमें अवस्थित अमरनाथका उल्लेख करना चाहिये। वह तीर्थ बड़ाही दुर्गम है। किन्तु इन दिनों उस तीर्थमें भी अनेक लोग जाते हैं। परन्तु यह नहीं, कि उस पथमें समय समय पर दुर्घटनाएं नहीं होती।

देहरादून—मसूरी।

देहरादून मनोहर पहाड़ी नगरों में है। यह २३०० फीट पहाड़ी उपत्यका के घेरेके अन्दर है। इसके समीप अशोककी अनुशासनशिला पायी गयी है।

हिन्दुओंके मतानुसार यह केदारखण्ड का अंश है—महादेव के विराजने की भूमि है। राम और लक्ष्मणने आकर रावण-बधके दोषसे मुक्त होनेके लिये यहां प्रायश्चित किया था और पाण्डुपुत्तों ने महाप्रस्थान के समय इस स्थानमें विश्राम किया था। ये सब पुराणों की बातें हैं। किन्तु सन् ईसवीकी सतरहवीं सदीके पहिले इतिहास में देहरादूनका पता नहीं मिलता। उस समय सिख गुरु राम राय पञ्जाबसे निकाले जाकर यहाँ आ बसे थे। उन्होंने जो मन्दिर बनाया था, वह अबतक देहरादूनका आभुषण बना हुआ है। आगे सन् १७५७ ई०में सहारनपूरके शासक नसिर उद्दौलाने देहरादून को अधिकृत किया था। सन् १७७० ई०में नजीर उद्दौलाकी मत्यु हुई। तबसे गोरखे आदिके आक्रमण देहरादूनको उत्पीड़त करते थे। सन् १८८५ ई० में गोरखा युद्ध समाप्त होने पर वह अङ्गरेजों के हाथ आया। उन दिनों के कुलुङ्गा किलेका युद्ध इतिहासमें प्रसिद्ध है।

इनदिनों देहरादूनमें वन विद्यालय स्थापित हुआ है। उसके शामिल उद्भिदोंका एक बाग है। भारत के भिन्न भिन्न स्थानों की लकड़ियाँ यहाँ जाँचि की जातीं हैं।

देहरादूनके रास्ते मसूरी जाना होता है। पर्वत के जिस स्थान में मसुरी है, वह अर्द्धचन्द्रके आकारसे ऊपरको उठा है। इसके प्राकृतिक शोभा मनको मोहती है। इस स्थान से समीप और दूर पर पवतपुञ्ज दिखलाई देते हैं। और बीच बीच की उपत्यकाऐ दृश्यकी विचित्रताका सञ्चार करती हैं। उत्तर और पर्वतोंके सिलसिलेके नीचे वनाच्छादित भुमी है। उस बनमें ओक, रडोडेनड्रन और चारोंवृक्षोंकी ही अधिकता है। स्थान स्थानमें आफल, अमरूद आदि फलों के भी वृक्ष हैं।

१। पर्वत से मसूरी का दृश्य। २। लण्डौरसे मसूरी का दृश्य।
३। दुग-उडविलसे दृश्य। ४। मसूरी का दृश्य।

थोड़ीहीदूर पर लण्डौर है। यहाँ अङ्गरेजों ने एक गोरा बारिक बना रखा है। लण्डौरमें कुछ युरोपियन बाशिन्दे देखे जाते हैं। इसकी आबहवा उनका पसन्द है।
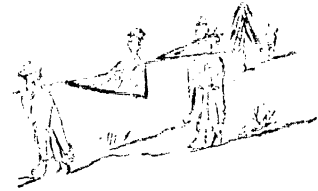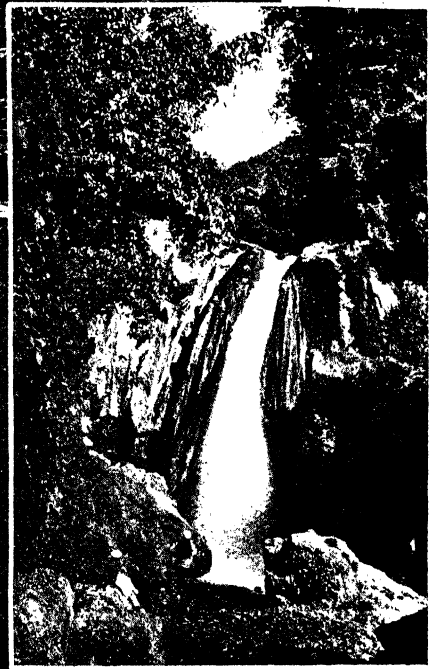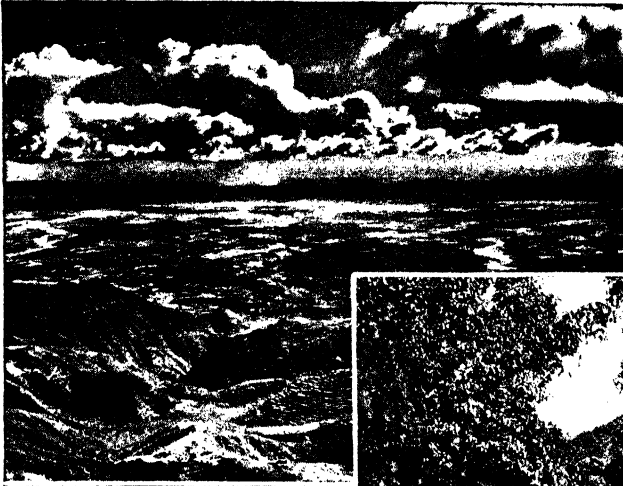
१। शिवालिक। २। जलप्रपात

३। बटा जलप्रपात

नैनीताल—रानीखेत—अल्मोड़ा।

बरेली होकर काठगोदाम स्टेशनको जाना होता है। वहाँसे नैनीताल २१ मील है। यह पहाड़ी शहर है। रेल स्टेशनसे समतल भुमिपर दो मील जाकर चढ़ाईका आरम्भ होता है। युक्त प्रान्तमें यही सबसे बढ़कर समादरका पहाड़ी शहर है और युक्त प्रान्तके गवेनर नैनीतालमें ही रहकर ग्रीष्म कालको बिताते हैं। नैनीतालमें स्वभावकी शोभा मनोहर है। विशेषतः जो ताल वा झील है, वहतो परम सौन्दर्य्य का केन्द्र हैं। यह पहाड़ी झील १ मील लम्बी और ४०० गज चौड़ी है। इसके एक ओर गन्धक की धारा निकलती है—झीलके जलमें गन्धककी अधिकता है।

नैनीतालमें और कई पहाड़ी झीलें हैं। उनमें १२ मील दूरकी भीमताल, नौकुचियाताल और मालवाताल विशेष रूपसे उल्लेख योग्य है।

इन स्थानोंमें मछली पकड़नेके लिये और दूसरे शिकारोंके लिये अनेक युरोपियन जाते हैं।

रानीखेत नैनीतालसे अधिक दूर नहीं है। सूर्य्यके उदय और अस्त समयकी किरणावली हिमावलकी तुषारमण्डित चोटियोंको जैसी मनोहर बनाती है, उस दृश्यको देखनेके लिये अनेकानेक मनुष्य नैनीतालसे राणीखेत जाते हैं।

इसके बादही अल्मोड़ा उल्लेख योग्य है। गोरखा युद्धके समय इसके समीप भयङ्कर लड़ाइयाँ हुई थीं। जिनको फेफड़ेकी बीमारी सताती है, उनके लिये अल्मोड़े को आबहवा बड़ेही फायदेकी है। इसलिये वैसे लोग वहाँ जाते हैं। वहाँ रामकृष्ण मिशनका एक केन्द्र है।

अल्मोड़ेमें और उसके समीपके स्थानोंमें एक नये व्यापारका आरम्भ हुआ है। ये सभी स्थान नाना प्रकार फलोंकी खेतीके योग्य है। इसलिये किसी किसी युरोपियन ने यहाँ फलोंके बाग बनाये हैं। इन स्थानोंसे फल डाकसे भारतके नाना स्थानोंमें भेजे जाते हैं। जो फल युरोपमें पैदा होते हैं, उनमें से बहुतेरे इन सब पहाड़ी स्थानोंमें उत्पन्न किये जा सकते हैं। इस व्यापारकी दिनों दिन जैसी बृद्धि होरही है, उससे जान पड़ता है, कि इसका विशेष विस्तार थोड़े दिनोंमें होकर अनेक मनुष्यों की आजीविकाका सुभीता कर देगा

नैनीताल।
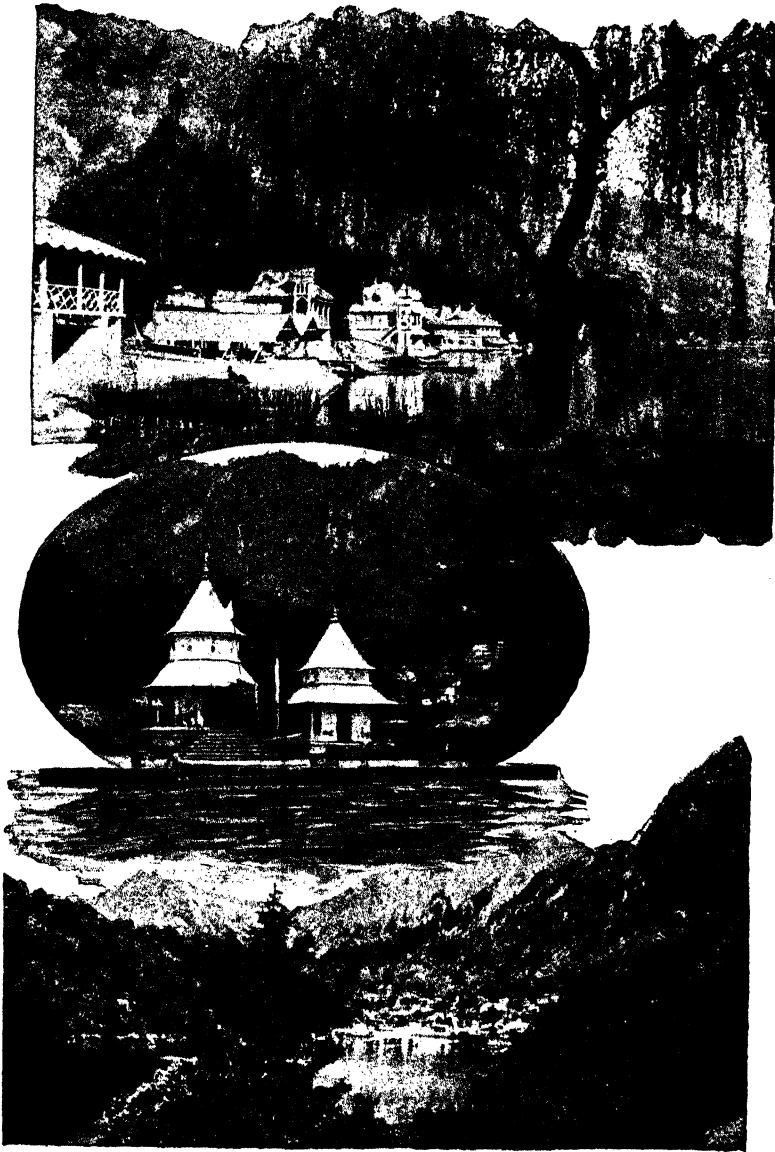
१। झीलके तट पर नाव रखनेका स्थान। २। नैनी देवीका मन्दिर।
३। झील—नैनीताल।

शिमला।

दिल्लीसे शिमला जानेके पथ पर पानीपत और कुरुक्षेत्र आते हैं।

भारतके इतिहासमें पानीपत सदासे प्रसिद्धता रखता है। इस स्थानमें ३ वार भारतके भाग्यका फैसला हो गया है। इसी स्थानने विजयमालिका जिसके गले डाली, वही भारतका अधीश्वर बना।

तुषार मण्डित सिडार वृक्ष—शिमला।

प्रथम युद्ध यहाँ सन् १५२६ ई० में हुया। २१ अप्रैलको पानीपतके मैदानमें बाबरने दिल्लीके शाह इब्राहीम लोदीको परास्तकर दिल्लीका सिंहासन प्राप्त किया। मोगलोंके बर्णनसे जाना जाता है, कि युद्धके खेतमें १५ हज़ार भारतीय योद्धे काम आये थे।

दूसरा युद्ध सन् १५५६ ई० में हुया। ५ नवम्बरको नवयुवक अकबरने पिताका राज्य प्राप्त कर हेमूको पानीपतमें परास्त किया।

तीसरा युद्ध सन् १७६१ ई० में हुया। ७ जनवरीको अहमदशाह दुर्रानी ने इस युद्धमें मराठोंको परास्त किया।

शिमला का दृश्य ।
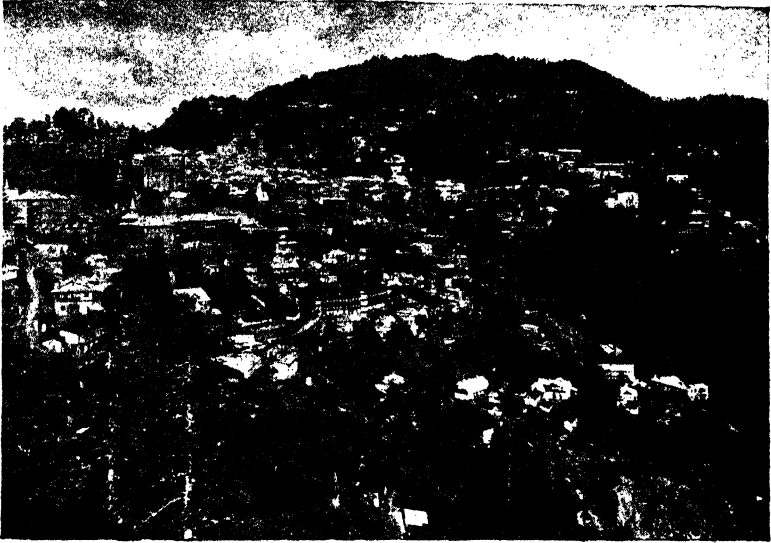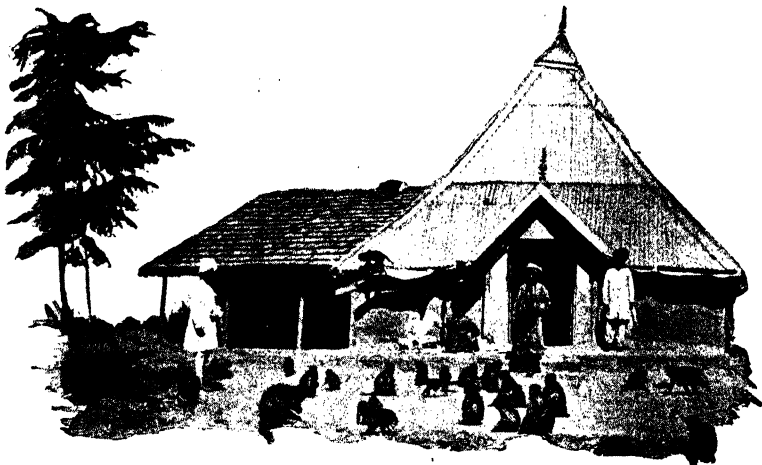
यक्षका मन्दिर—शिमला ।

थानेश्वर और कुरुक्षेत्र इतिहासमें प्रसिद्ध हैं। कुरुक्षेत्र पुराणोंमें भी प्रसिद्ध है। इसमें कुरुपाण्डवोंकी स्मृति जटित है।

इसके बाद कालका आता है। कालकासे छोटी रेल पहाड़के अङ्गपर घुमती फिरती हुई शिमला पहुँची है। शिमला इन दिनों भारत गवर्णमेण्टका ग्रीष्मनिवास है। कलकत्तेके पास बारकपुरमें जैसा बड़े लाटका फुलवाड़ी भवन है, वैसाही शिमलेके उपनगर मसोब्रामें उनका फुलवाड़ीभवन है।
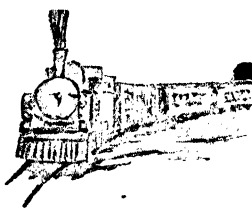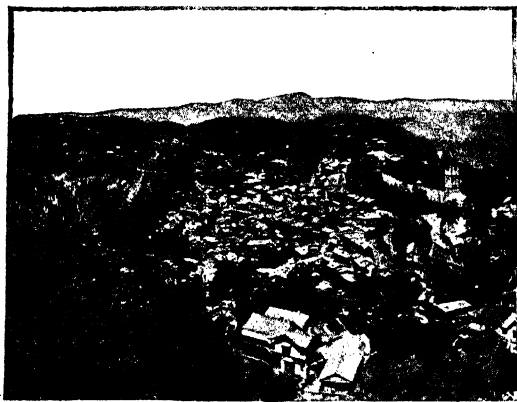
१। दूरसे शिमलेका दृश्य। २। अननडेल।

शिमला पहाड़की चोटी पर है। क्रमशः इसका विस्तार बढ़ाया गया है और छोटा शिमला, समर-हिल, बालगञ्ज, कुसुमीत आदि स्थान शिमलेके अन्तर्गत किये गये हैं।

शिमला पर्वतके ऊपर पवतके अङ्गमें है। उस स्थानमें समतल भुमिकी कमी है। केवल १२०० फीट नीचे जानेसे एक उपत्यका आती है, जो

अनानडेल कहलाती है। वहाँ घुड़ दौड़का मैदान, क्रिकेट आदि खेलों के स्थान हैं।

ओवजरवेटरी हिल नामक पहाड़ पर बड़ेलाटका प्रासाद है। सन् १८८८ ई० की २३ जुलाई को लार्ड डफरिन उस गृहमें प्रविष्ट हुए। सन् १८२९ ई० को ग्रीष्म ऋतुमें लार्ड अमहर्स्ट शिमलेमें पधारे थे। तबसे शीमला ग्रीष्म के दिनों काममें लाया जाता है। अन्तमें सन् १८६४ ई० से शिमला भारत-

कालका शिमला रेलवेका कुछ अंश।

गवर्णमेंटकी ग्रिष्म राजधानि निर्दिष्ट हुई। ग्रीष्म ऋतुमें भारत गवर्णमेण्ट अपने कार्य्यलयोंको दिल्लीसे शिमला हटा ले जाती है और शीत न आनेतक वहीं रहती है।

शिमला चोटी ८०४८ फीट ऊँची है, जिससे शिमलेमें अधिक शीत पड़ता है। शीतकाल में गृहोंकी छतों पर बर्फ पड़ती है और गृहादिको ढक लेती है, जिससे छतें ढालु बनायी गयी हैं। शिमलेसे दूरकी पहाड़ी चोटियों पर

सूर्य्योदय और सुर्य्यास्तके समय बड़ी मनोहर शोभा दिखलाई देती है। एक बणाके पीछे दूसरे बणाका और धपछाया की चमक दमकको देखनेसे मुग्ध होना पड़ता है।

समय समय पर देखा जाता है, कि नीचेके मैदान सुर्य्यकी किरणोंसे उज्ज्वल बने हुए हैं, किन्तु वहाँसे बीचके स्थानमें वृष्टि हो रही है। गृहोंके दरवाजों और खिड़कियोंके अन्दरसे गृहोंमें कभी कभी बादल घुस जाता है और बिस्तर आदिको भिगो देता है। रात्रिके समय घर घर जब
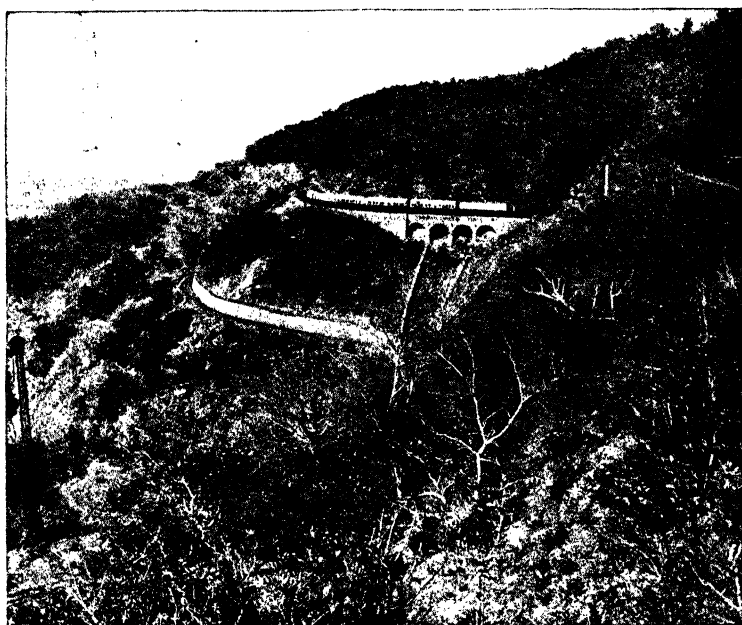
कालका रेलवेका दूसरा दृश्य।

बिजली की बतियाँ बाली जाती हैं, तो जान पड़ता है, कि मानों अम्बरे आकाशमें तारे जगमगा रहे हैं। शिमलेमें अनेकानेक फलोंकी भरमार है—विशेषत: डालिया, एस्टर, सेलविया, गुलाब आदि विचित्र विस्मयजनक हैं। शिमलेमें भी एक जलप्रपात है—पासके स्थानमें तो अनेक झरने और जलप्रपात हैं। शिमलेकी पहाड़ी लताएँ और तरु आदि दूर दूर प्रान्तोंके निवासियोंकी दृष्टिमें नित्य नये हैं।

शिमलेमें लकड़ीके कामकाजोंमें असामान्य कारिगरी देखी जाती है। उनका मूल्य भी कम है।

शिमला भारत गवर्णमेण्टकी राजधानी होने से —और साथही साथ स्वास्थ सुधारनेका भी स्थान होनेसे वहाँ अनेकानेक लोग जाते हैं। ऐसे स्थान में दूकानों और व्यापारकी वस्तुओंकी अधिकता बिना हुए नहीं रह सकती।

शिमलेमें पर्वतकी बगलमें पहाड़ी लोग जिस तरहसे फसलकी खेती करते हैं, वह भी देखने योग्य है।

शिमले मे आनेको अच्छे अच्छे होटल है जिन मे कि यात्री सुख से रह सक्ते हैं इन मे सब प्रकार की आवश्यक चीजें जैसे पलंग, कुरसी इत्यादि मिलते हैं॥ बरफ़ के कारण शीत काल में यहां केवल पहाड़ी लोग रहते हैं जब जाड़ों में यहां बरफ गिरने लगती है तो वये लोग जमिन में गढ़ा खोद देते हैं और जब वह भर जाता है तो उसको पत्थर से बन्द कर देते हैं। गरमियों में जब लोग शिमले जाते हैं तो वे पहाड़ी उस बरफ को बेचना शुरु कर देते हैं। साहेब लोगों को यह बरफ अधिक पसन्द होता है॥

शिमला जानेकी राहमें धरमपुर आजकल अच्छी नामवरी पा गया है। वहाँ राजयक्ष्मा रोगियोंके लिये एक चिकित्सालय खोला गया है। इसकी आबहवा भी स्वास्थलाभ करनेमें रोगियोंको सहायता देती है।

शिमला जानेका पथ विचित्रता और सुन्दरतासे चित्ताकर्षक है।

कश्मीर।

कश्मीर भूस्वर्ग कहलाता है। इस देशके और विलायत के साहित्योंमें कश्मीरके सौन्दर्यका वर्णन है। वह फलोंका राज्य है। कहा जाता है, कि एकबार बादशाह जहाँगीरसे पूछा गया था, कि वे अपनी प्रियतमाके लिये कितना त्याग स्वीकार कर सक्ते हैं। इसके उत्तरमें उन्होंने कहा था--कि मैं सब कुछ त्याग सकता हूँ "बगैर तख्त और ज़ाफरानके"। अर्थात् सिर्फ तख्त और कश्मीर को ही वे नहीं त्याग सक्ते।

सूर्य्यास्त का समय—कश्मीर।

कश्मीर उपत्यकाका लगभग ८४ मील लम्बी और २५ मील चौड़ी है। चारों ओर पहाड़ोंकी चोटियों पर तुषारकी शोभा सुशा रही है—नङ्गा पवत हरमुख अमरनाथ आदि पर। इस उपत्यका के बीच से झेलम और उसकी शाखा नदियाँ प्रवाहित हो रही हैं। भूमि उपजाऊ है। कश्मीरमें जाफरानकी खेती होती है। इसकी आबहवा अनुपम है। सरवाल्टर लारेन्सने ठीक ही कहा है कि जीवन जिनसे सुख होता है, वे सभी सामग्रियाँ कश्मीरमें सहजही मिल जाती हैं।

फल बहुत हैं, फलोंका अन्त नहीं, जलकी शोभा अपार है। काश्मीरमें ऐसे बाग हैं, जो जलके ऊपर बहते हैं। जलके ऊपर सरकण्डे बिछाकर उन पर सेवार और मिट्टी छोड़ी जाती है। उसी मिट्टी पर बाग लगाये जाते हैं। उन बागोंमें तरबूज, टमाटर आदि उपजाये जाते हैं।

काश्मीर इतिहासमें सुप्रसिद्ध है। काश्मीरमें अवन्तीपुर, मातण्ड आदिके भग्नावशेषको देख उनकी शिल्पकुशलता पर मुग्ध होना पड़ता है। उनके
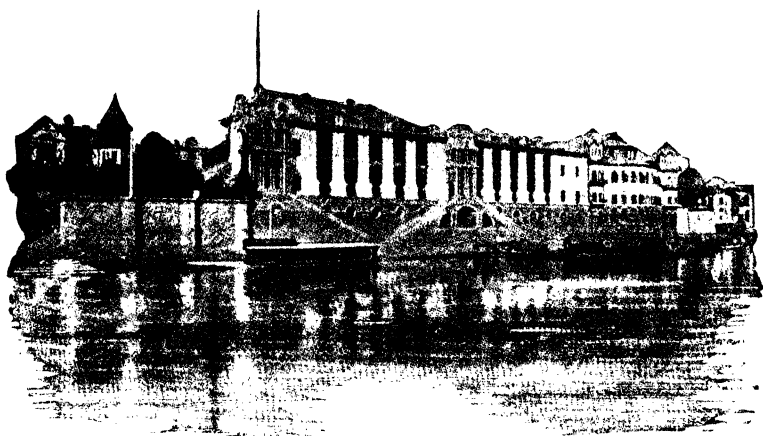
झेलम नदी के तटस्थित राजभवन · श्रीनगर।

विराटत्व पर भी मोहित हुए बिना नहीं रहा जाता। उन सब भवनोंके निर्माणमें यूनानियोंके प्रभावका पता मिलता है। श्रीनगर काश्मीरकी राजधानी है। श्रीनगर भूस्वर्गके मध्यभागमें नदीके दोनों ही तटों पर अवस्थित है।

काश्मीर शिल्पियोंके स्वप्नकी सामग्री है। सौन्दर्यकी इसी पुरीमें शिल्पकी बड़ी भारी उन्नति हुई है: काश्मीरका दुशाला, काश्मीरके सोने चाँदीके काम, काश्मीरके लकड़ीके काम काज ऐसे होते हैं, कि जिनके जोड़के कहीं नहीं।

कश्मीर।

श्रीनगर।

बरफ़।

निशातबाग़।
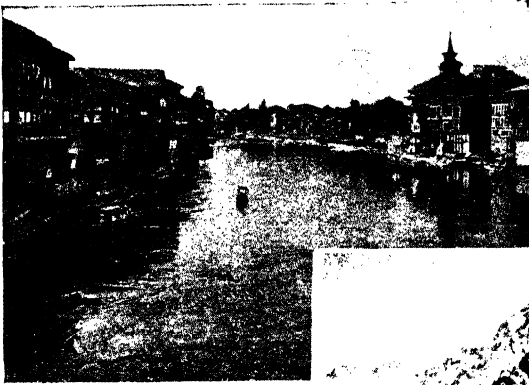
महाराज का महल।
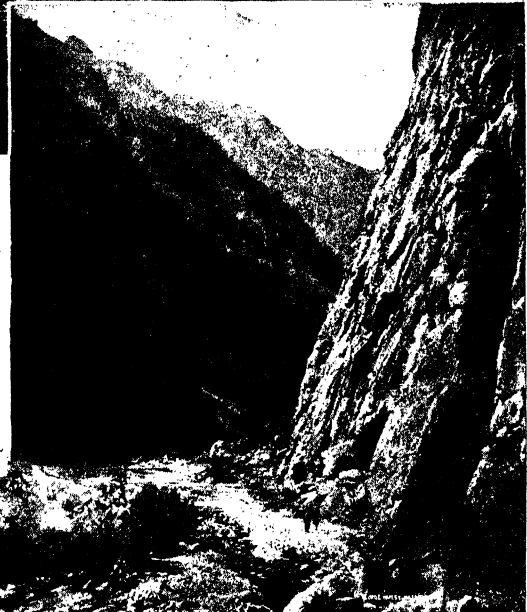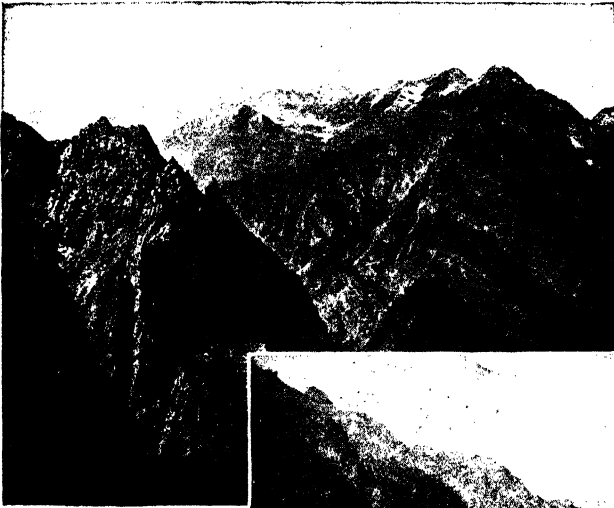
१। घाटी—काश्मीर। २। उपत्यका और घाटी—काश्मीर।

१। काश्मीर झीलमें मछुवोंका मछली पकड़ना।

२। सालिमार बागसे डाल झीलका दृश्य।

३। नदी।

ईस्ट इण्डियन रेलवे

पर बरातोंको हर तरहकी सहायता सफर करने में दी जाती है दरखास्त पास के स्टेशन मास्टर को समय से पहले देना चाहिये जिसमें किसी तरह की तकलीफ न हो।

रथ बहेली फीके पड़े, श्रेष्ठ सवारी रेल,
भय छूटा ठग लूट का, पुष्पक यानहि रेल,,